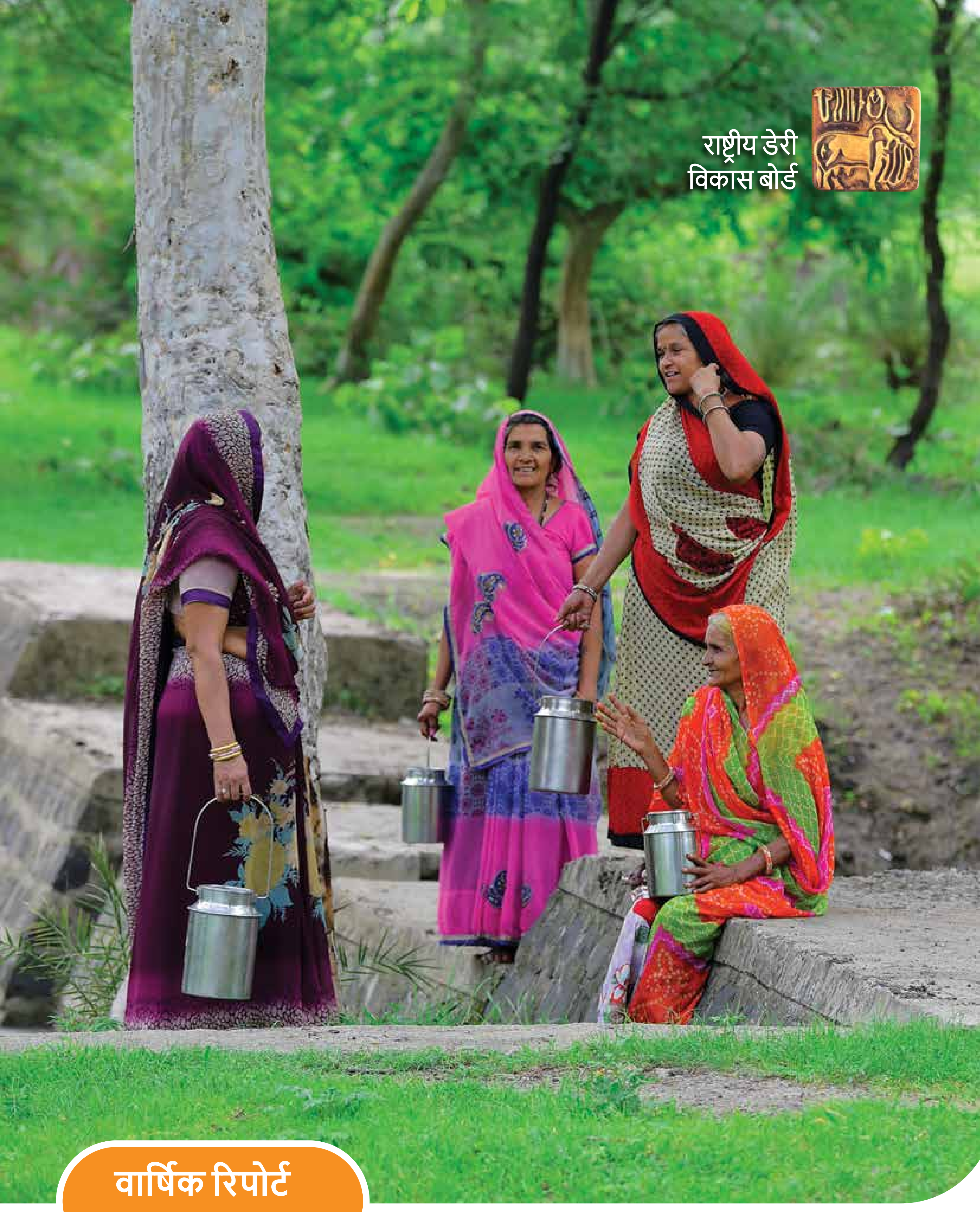

राष्ट्रीय डेरी
विकास बोर्ड

वार्षिक रिपोर्ट
2022-23

विषय सूची

बोर्ड के सदस्य 01

अध्यक्ष का संदेश 02

डेरी परिदृश्य की एक झलक 05

वैश्विक स्तर पर भारतीय डेरी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व 07

डेरी सहकारिताओं का सुदृढ़ीकरण 15

दूध महासंघों और संघों को प्रबंधन में सहयोग 21

पशु उत्पादकता वृद्धि 29

- नस्ल सुधार कार्यक्रम 29
- आहार प्रबंधन 33
- पशु स्वास्थ्य में सुधार 37
- अनुसंधान एवं विकास 38

अत्याधुनिक डेरी अवसंरचना का विकास 45

डेरी मूल्य श्रृंखला में गुणवत्ता सुनिश्चित करना 49

भारतीय डेरी क्षेत्र का डिजिटलीकरण 53

समृद्ध भविष्य में निवेश 57

मानव संसाधन का प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण 61

- राजभाषा का प्रगामी प्रयोग 65

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन 67

सहायक कंपनियां 69

- आईडीएमसी लिमिटेड 69
- इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड 71
- मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड 74
- एनडीडीबी डेरी सर्विसेज 78
- एनडीडीबी मृदा लिमिटेड 80

डेरी सहकारिताओं की प्रगति 82

आगंतुक 92

लेखा-जोखा 94

एनडीडीबी के अधिकारी 123

शब्दावली 130

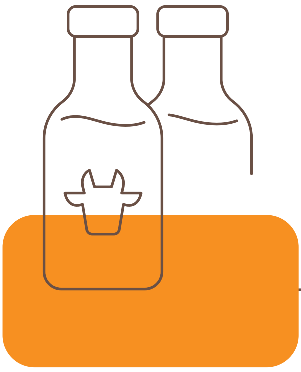

बोर्ड के सदस्य

श्री मीनेश सी शाह[1]
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
एनडीडीबी

सुश्री वर्षा जोशी
अपर सचिव (मवेशी एवं डेयरी विकास)
पशुपालन और डेयरी विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी
मंत्रालय, भारत सरकार

डॉ. एन एच केलावाला[2]
कुलपति
कामधेनु विश्वविद्यालय, गुजरात

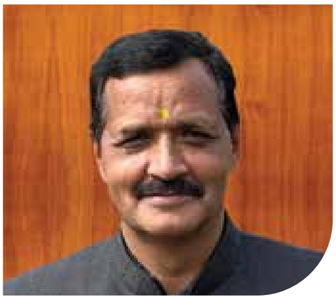

श्री निहाल चंद शर्मा[3]
अध्यक्ष
हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी दूध
उत्पादक महासंघ लिमिटेड,
हिमाचल प्रदेश

श्री शामलभाई बी पटेल[4]
अध्यक्ष
गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ
लिमिटेड, गुजरात

[1] 1 जून 2021 से अध्यक्ष का अतिरिक्त प्रभार
[2] 9 जून 2022 से
[3] 9 जून 2022 से
[4] 11 अगस्त 2021 से 10 अगस्त 2022 तक और 28 फरवरी 2023 से

अध्यक्ष का संदेश

मुझे 2022-23 की हमारी वार्षिक रिपोर्ट आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

एनडीडीबी में, डेरी किसानों का स्थान प्रथम है, और हमारे सभी प्रयासों का मुख्य उद्देश्य डेरी को देश के लाखों दूध उत्पादकों के लिए सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का माध्यम बनाना है।

पिछले दशकों में संचालित हमारी परियोजनाएं, योजनाएं और गतिविधियां इस बात की स्पष्ट गवाही देती हैं। आय सृजन वाली अन्य गतिविधियों जैसे खाद प्रबंधन, मधुमक्खीपालन, सौर, तेल, चारा विकास इत्यादि ने डेरी किसानों की स्थायी आजीविका में एक और आयाम जोड़ा है।

गायों में लम्पी त्वचा रोग (LSD) की घटनाओं के अलावा, प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों जैसे तीव्र गर्मी और असमान वर्षा के कारण पिछला वर्ष डेरी क्षेत्र के लिए एक चुनौतीपूर्ण वर्ष रहा। हालांकि, उद्योग ने दृढ़ निश्चय का परिचय दिया और पिछले वर्षों के अनुरूप दूध उत्पादन में स्थिर वृद्धि दर दर्ज की।

डेरी सहकारिताओं ने 2022-23 के दौरान औसतन 589 लाख किग्रा प्रतिदिन (लाकिग्राप्रदि) दूध का संकलन किया और औसतन 427 लाख लीटर लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) दूध का विपणन किया।

एनडीडीबी ने देश भर में तकनीकी इनपुट, विस्तार सेवाओं और वित्तीय सहायता के साथ डेरी सहकारिताओं को सहयोग करना जारी रखा। हमारी गतिविधियां स्व-वित्त पोषण और भारत सरकार द्वारा उपलब्ध कराए वित्त पोषण दोनों माध्यम से डेरी सहकारिताओं को पुनर्जीवित करने, दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने, नए डेरी बुनियादी ढांचे का निर्माण करने, डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने, डेरी क्षेत्र में गुणवत्ता आश्वासन और क्षमता निर्माण को सुनिश्चित करने पर केंद्रित रही हैं।

इस वर्ष के दौरान कई पहल की गईं, जिससे डेरी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के भावी विकास में तेजी आने की संभावना है।

ग्रामीण समृद्धि तेजी से लाने के लिए सहकारी मॉडल में हमारे विश्वास के अनुरूप, एनडीडीबी नवगठित सहकारिता

मंत्रालय के साथ मिलकर अनेक नवीन पहलों पर काम कर रही है। नाबार्ड, एनडीडीबी और एनएफडीबी को प्राथमिक सहकारिताओं के सुदृढ़ीकरण और नई बहुउद्देशीय पीएसी या प्राथमिक डेरी/मत्स्यपालन सहकारिताओं की स्थापना के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य योजनाएं तैयार करने के कार्य सौंपे गए। इस संबंध में हरियाणा, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले में पायलट परियोजनाएं पहले से ही क्रियान्वित की जा रही हैं।

जनवरी 2023 में, तीन नई राष्ट्रीय स्तर की बहु-राज्य सहकारिताओं की स्थापना की गई। ये राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (NOCL), भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (BBSSL) और राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL) हैं। एनडीडीबी इनमें से दो सोसाइटियों की प्रोमोटर है। एनसीओएल का उद्देश्य भारत को "लोकल टू ग्लोबल" विज़न के साथ जैविक उत्पादों की विश्व की एक अग्रणी संस्था के रूप में स्थापित करने में सहयोग करना है, बीबीएसएसएल बीज क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और किसानों को बेहतर मूल्य प्रदान करेगी। आगे चल कर यह संस्था "सहकार से समृद्धि" का मार्ग प्रशस्त करेगी।

असम सरकार और एनडीडीबी द्वारा समान इक्विटी अंशदान के साथ 17 जनवरी 2023 को पंजीकृत हमारी संयुक्त उद्यम कंपनी नार्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (NEDFL) से पूर्वोत्तर क्षेत्र में हमारे सहयोग को बढ़ावा मिलने की संभावना है। एनईडीएफएल सात वर्ष की अवधि में असम डेरी विकास योजना (ADDP) को लागू करेगी, जो राज्य को दूध उत्पादन, संकलन, प्रसंस्करण और विपणन में आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगा।

अतिरिक्त आय पैदा करने वाली एक गतिविधि के रूप में खाद पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, एनडीडीबी ने 1 जुलाई 2022 को पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में "एनडीडीबी मृदा लिमिटेड" की स्थापना की। एनडीडीबी मृदा लि. खाद मूल्य श्रृंखला परियोजनाओं, बायोगैस पर आधारित बायो-सीएनजी उत्पादन, डेरी संयंत्रों के लिए बायोगैस-आधारित ऊर्जा उत्पादन और गोबर पर आधारित जैविक उर्वरक की वृहद स्तर पर बिक्री को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

पिछले वर्ष, हमने उत्साह से अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ के विश्व डेरी शिखर सम्मेलन-2022 (IDF WDS-2022) की मेजबानी की, जिसमें "पोषण और आजीविका के लिए डेरी" विषय के साथ दूध की कमी वाले देश से आत्मनिर्भरता तक भारत की यात्रा को प्रदर्शित किया गया। इस शिखर सम्मेलन का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में किया था। श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री, श्री परषोत्तम रूपाला, केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री और अन्य गणमान्य अतिथियों ने इस सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। इस सम्मेलन ने 55 देशों से पधारे डेरी लीडरों, विशेषज्ञों और उत्पादकों को एक मंच पर एकत्रित किया।

हमारी सहायक कंपनियों ने डेरी के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना निरंतर जारी रखा है, और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे आने वाले वर्षों में इनकी दक्षताओं का सकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ेगा।

एनडीडीबी को अपनी जिम्मेदारियों के सम्यक निर्वहन में भारत सरकार के मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय से निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। एनडीडीबी ने कई परियोजनाओं में विभिन्न प्रकार के विकासात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों, जैसे सहकारिता मंत्रालय , ग्रामीण विकास मंत्रालय, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय तथा नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के साथ भी सहयोग किया है। मैं उनके द्वारा दिए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

मैं एनडीडीबी के बोर्ड और सभी हितधारकों को एनडीडीबी में उनके अटूट विश्वास के लिए धन्यवाद देता हूं। हम डेरी किसानों की सेवा सतत् जारी रखेंगे और उनकी आवश्यकताओं को पूरे समर्पण के साथ पूरा करेंगे।

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष, एनडीडीबी

डेरी परिदृश्य की एक झलक

देश में दूध उत्पादन में प्रतिवर्ष लगभग छह प्रतिशत की वृद्धि निरंतर जारी है, जबकि पिछले पांच वर्षों के दौरान प्रति व्यक्ति उपलब्धता में 4.5 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2022-23 में देश में दूध उत्पादन 230 मिलियन टन और प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 455 ग्राम प्रतिदिन रहने की संभावना है।

वर्ष 2022-23 प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों जैसे कि लंबी और तेज गर्मी के दौर से प्रभावित रहा, जिसके बाद, असमान रूप से वर्षा हुई। इसके अलावा, गायों में एलएसडी की छिटपुट घटनाएं देखी गईं। भारत सरकार ने टीकाकरण के माध्यम से बीमारी की रोकथाम के उपाय किए और प्रभावित राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की।

अनेक चुनौतियों के बावजूद, डेरी सहकारिताओं द्वारा दूध का संकलन यथावत बना रहा। 2022-23 के दौरान, औसतन 589 लाकिग्राप्रदि दूध संकलित किया गया। डेरी सहकारिताओं ने पशु चिकित्सा सेवाओं, कृत्रिम गर्भाधान सेवाओं, टीकाकरण, संतुलित पशु आहार, चारा बीज, खनिज मिश्रण इत्यादि जैसी तकनीकी सामग्रियां और विस्तार सेवाएं प्रदान करके डेरी किसानों का सहयोग करना निरंतर जारी रखा। 2022-23 के दौरान दूध संकलन मूल्य में लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि की गई।

महामारी के बाद, डेरी सहकारिताओं ने तरल दूध और मूल्य वर्धित दूध उत्पादों दोनों की बढ़ती मांग को सक्रियता के साथ पूरा किया। 2022-23 के दौरान, औसत तरल दूध की बिक्री 427 लाख लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) तक पहुंच गई, जो 2021-22 की तुलना में नौ प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है। स्किम्ड मिल्क पाउडर (SMP) और मक्खन जैसी संरक्षित डेरी कमोडिटी के घरेलू बाजार के मूल्य पूरे वर्ष काफी हद तक स्थिर रहे। एसएमपी की कीमतें उतार-चढ़ाव के साथ 280 रुपये से 320 रुपये प्रति किलोग्राम के बीच रहीं, जबकि मक्खन की कीमतें 400 रुपये से 440 रुपये प्रति किलोग्राम के दायरे में रहीं। वित्त वर्ष 2022-23 में अधिकांश समय में घरेलू एसएमपी की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार दरों से अधिक रहीं। सफेद मक्खन की कीमतें शुरू में अंतरराष्ट्रीय बाजार दरों से कम रहीं, लेकिन अंततः वित्तीय वर्ष की दूसरी छमाही के दौरान कीमतें बाजार मूल्य के बराबर रहीं।

2022-23 के दौरान, भारत ने डेरी वस्तुओं के शुद्ध निर्यातक के रूप में अपनी स्थिति को बरकरार रखते हुए 3.36 हजार करोड़ रुपये के दूध और दूध उत्पादों का निर्यात किया।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

विश्व स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) की रिपोर्ट के अनुसार, दूध उत्पादन में 0.5 प्रतिशत की मामूली वृद्धि देखी गई। पिछले वर्ष की तुलना में, यह 2022-23 में 936 मिलियन टन हो गया। एशियाई क्षेत्र में दूध उत्पादन में लगभग दो प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान है, जिससे साउथ अमेरिका, यूरोप, ओशिनिया और अफ्रीका में हुई गिरावट की भरपाई हो जाएगी।

दूध उत्पादों के वैश्विक व्यापार में लगभग 4.5 प्रतिशत की गिरावट आई है और 2021 की तुलना में 2022 में यह लगभग 85 मिलियन टन (दूध के समतुल्य) होने का अनुमान है। प्रमुख आयातक चीन में कोविड-19 के रोकथाम उपायों, घरेलू दूध उत्पादन वृद्धि और अधिक इन्वेंट्री के कारण सुस्त मांग की वजह से आयात में गिरावट देखी गई।

सुस्त वैश्विक व्यापार का असर डेरी कमोडिटी की अंतरराष्ट्रीय कीमतों पर देखा गया। अप्रैल 2022 से मार्च 2023 के दौरान ग्लोबल डेरी ट्रेड (GDT) नीलामी में मक्खन और एसएमपी की कीमतों में क्रमश: 30 प्रतिशत और 42 प्रतिशत की गिरावट आई। मार्च 2023 के अंत तक, मक्खन का कारोबार 4,750 डॉलर प्रति मीट्रिक टन पर किया गया, जबकि एसएमपी का भाव 2,650 डॉलर प्रति मीट्रिक टन रहा।

Balinee

वैश्विक स्तर पर भारतीय डेरी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व

एनडीडीबी ने इस क्षेत्र में छोटे किसानों द्वारा डेरी प्रबंधन, नवाचारों और सर्वोत्तम उपायों को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न वैश्विक और राष्ट्रीय कार्यक्रमों का आयोजन किया।

आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2022

एनडीडीबी ने 12-15 सितंबर 2022 के दौरान इंडियन एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ के विश्व डेरी शिखर सम्मेलन-2022 (IDF WDS-2022) का आयोजन किया। शिखर सम्मेलन का विषय "पोषण और आजीविका के लिए डेरी" था। 1974 में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय डेरी कांग्रेस के बाद से 48 वर्ष के अंतराल के उपरांत, भारत द्वारा शिखर सम्मेलन की मेजबानी की गई।

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक डेरी क्षेत्र में भारत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया। शिखर सम्मेलन के एजेंडे में तकनीकी सत्र, पोस्टर प्रतियोगिता, प्रदर्शनी, सामाजिक एवं तकनीकी दौरा शामिल थे। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, उत्तर प्रदेश के

माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री डॉ. संजीव बालयान, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री डॉ. एल मुरूगन, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, रसायन एवं उर्वरक मंत्री डॉ. मनसुख एल मांडविया, माननीय केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग, उपभोक्ता मामले और खाद्य एवं सार्वजनिक विरतण मंत्री श्री पीयूष गोयल और माननीय केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री श्री गिरिराज सिंह उपस्थित थे।

आईडीएफ डब्ल्यूडीएस-2022 में 55 देशों (भारत सहित) के लगभग 1,700 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डेरी नेताओं, विशेषज्ञों, किसानों, प्रसंस्करणकर्ताओं और उत्पादकों ने भाग लिया।

शिखर सम्मेलन के दौरान, 24 सत्र आयोजित किए गए, जो "पोषण और आजीविका के लिए डेरी" विषय पर केंद्रित थे। अन्य देशों के 79 वक्ताओं सहित 120 वक्ताओं और अध्यक्षों ने विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया, जैसे कि वैश्विक डेरी की स्थिति और रुझान, फार्मिंग तकनीक और नवाचार, पोषण और स्वास्थ्य एवं सस्टेनेबिलिटी और जलवायु परिवर्तन। कार्यक्रम में एफएओ, कोडेक्स, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH), आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), विश्व बैंक और ग्लोबल चिल्ड्रन न्यूट्रीशन फाउंडेशन जैसे वैश्विक संस्थाओं के प्रख्यात वक्ताओं ने भाग लिया। एक सौ चौदह संगठनों ने 6,900 वर्ग मीटर के स्पेस में अपने उत्पादों, नवाचारों, प्रौद्योगिकी और सेवाओं का प्रदर्शन किया।

"संपूर्ण डेरी मूल्य श्रृंखला में नवीनता - संयुक्त राष्ट्र एसडीजी के साथ गठबंधन" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता में 43 प्रतिभागियों द्वारा कार्यों को प्रदर्शित किया गया। एनडीडीबी को "मीथेन उत्सर्जन तीव्रता को कम करने के लिए राशन ऑप्टिमाइज़ेशन और छोटी जोत वाली डेरी में दूध के वाटर फुट प्रिंट" और "राठी नस्ल विकास और संरक्षण परियोजना - फ्रेजाइल एग्रो आर्थिक परिस्थितियों में सतत् डेरी की दिशा में एक प्रयास"पर बने पोस्टरों के लिए सम्मानित किया गया।

एनडीडीबी ने आईडीएफ डेरी इनोवेशन अवार्ड्स में तीन श्रेणियों में पुरस्कार प्राप्त किए: (i) अनुसंधान और विकास - संकलन और प्रसंस्करण में नवाचार,
(ii) अनुसंधान और विकास में नवाचार - फार्मिंग और
(iii) सतत फार्मिंग प्रक्रियाएं - पर्यावरण में नवाचार। इनके अतिरिक्त, एनडीडीबी ने खाद मूल्य श्रृंखला मॉडल, ई-गोपाला ऐप, भारत में भैंसों के लिए जीनोमिक चयन प्रणाली और एनडीडीबी डेरी ईआरपी के लिए भी पुरस्कार प्राप्त किए।

आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2022 को कार्बन न्यूट्रल इवेंट के रूप में घोषित किया गया।

श्री मीनेश शाह, सदस्य सचिव, आईएनसी-आईडीएफ दक्षिण अफ्रीका से आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2022 की कुंजी स्वीकार करते समय अपने विचार व्यक्त करते हुए

श्री मीनेश शाह, सदस्य सचिव, आईएनसी-आईडीएफ ने संयुक्त राज्य अमेरिका को आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2023 की कुंजी सौंपी

भारत द्वारा वैश्विक स्तर पर सहकार की भावना को फैलाना

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह और जीसीएमएमएफ के अध्यक्ष श्री शामलभाई पटेल ने श्रीलंका के डेरी क्षेत्र में बदलाव पर चर्चा करने के लिए श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति श्री रानिल विक्रमसिंघे से मुलाकात की

पड़ोसी एशियाई और अफ्रीकी देशों में भारत की तरह छोटी जोत वाली दूध उत्पादन प्रणालियां हैं। माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2022 में इन देशों का समर्थन करने और सहयोग के माध्यम से समग्र डेरी विकास के लिए भारत की सफल छोटी धारक प्रणाली को दोहराने की इच्छा व्यक्त की।

एनडीडीबी के साथ पिछले सहयोग को ध्यान में रखते हुए, श्रीलंका सरकार ने श्रीलंका को उसकी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और देश भर में छोटे डेरी किसानों की आजीविका में सुधार करने में मदद करने के लिए भारत से सहायता मांगी। विभिन्न हितधारकों के साथ क्षेत्रीय दौरे और बैठकें आयोजित करके, एनडीडीबी गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ के साथ मिलकर श्रीलंकाई डेरी क्षेत्र में कमी और आयात निर्भरता से आत्मनिर्भरता में परिवर्तित करने के लिए व्यापक स्तर पर डेरी विकास की योजना तैयार कर रही है।

एनडीडीबी दीर्घकालिक डेरी विकास योजना बनाकर सहकारिताओं के माध्यम से अपने डेरी क्षेत्र को मजबूत करने में केन्या सरकार की भी सहायता कर रही है। गांधीनगर में भारतीय डेरी संघ द्वारा आयोजित 49वें भारतीय डेरी उद्योग सम्मेलन और एक्सपो के मौके पर, एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने केन्या के उच्चायुक्त श्री विली के बेट और केन्या डेरी बोर्ड की प्रबंध निदेशक सुश्री मार्गरिट किबोगी से मुलाकात की और इस संबंध में विचार-विमर्श किया।

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने नामीबिया के उच्चायुक्त महामहिम श्री गेब्रियल पांडुरेनी सिनिंबो से मुलाकात की और डेरी मूल्य श्रृंखला में नामीबिया को सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया।

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह को प्रतिष्ठित डॉ. कुरियन पुरस्कार से सम्मानित किया गया

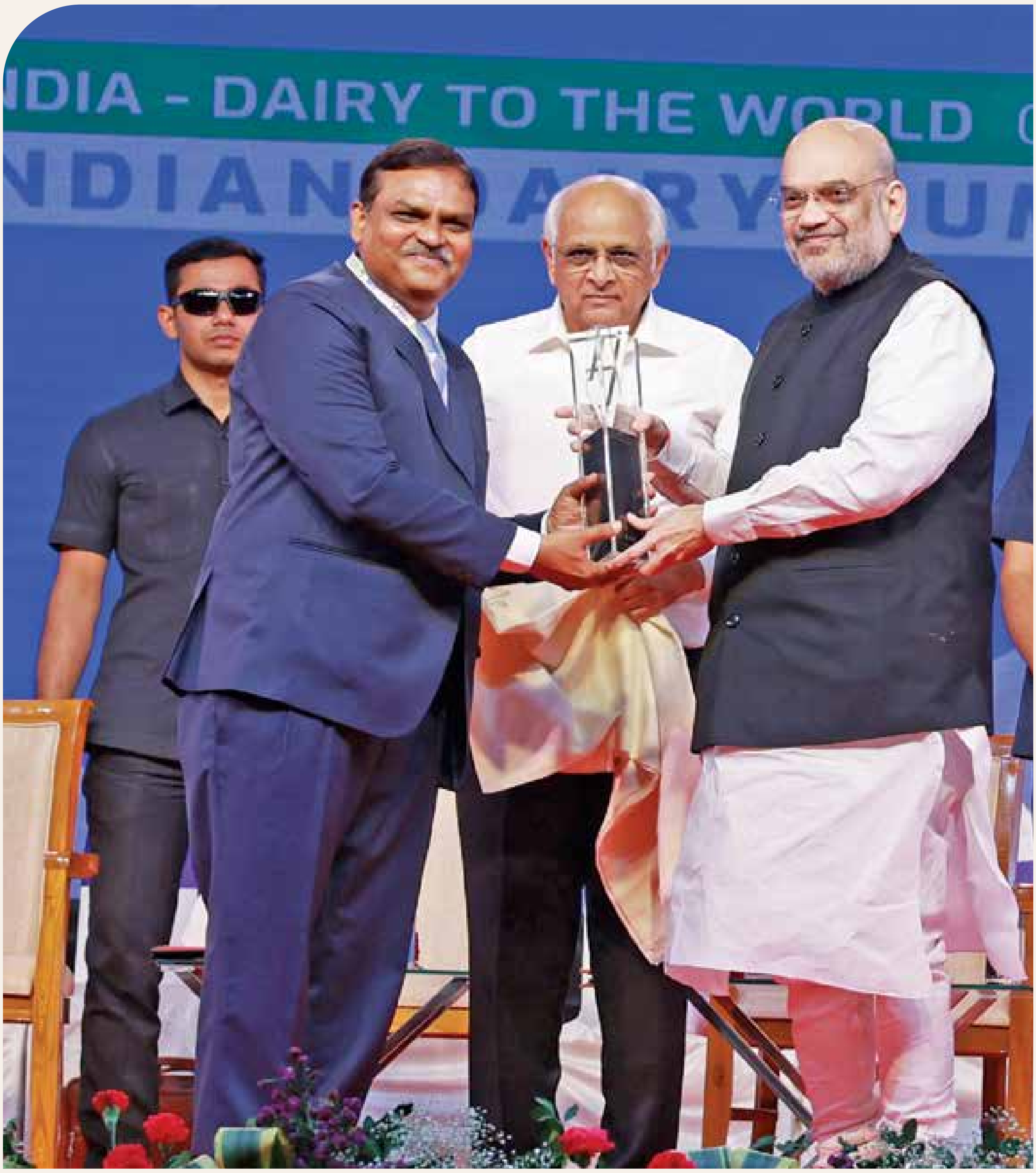

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने 18 मार्च 2023 को गांधीनगर में 49वें डेरी उद्योग सम्मेलन में प्रतिष्ठित 14वां डॉ कुरियन पुरस्कार 2023 प्राप्त किया। आईडीए द्वारा स्थापित यह पुरस्कार, माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा दिया गया, जो भारतीय डेरी उद्योग के विकास और वृद्धि की दिशा में श्री मीनेश शाह के महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित करता है।

aavin HI-TECH
aavin WELCOME
I Love

डेरी सहकारिताओं का सुदृढ़ीकरण

सहकारिता की प्रभावशीलता के प्रति एनडीडीबी का दृढ़ विश्वास है, जो उत्पादकों को लोकतांत्रिक स्व-शासन के माध्यम से नियंत्रण प्रदान करती है। इसी विश्वास के आधार पर, एनडीडीबी मौजूदा डेरी सहकारिताओं और उत्पादक संस्थाओं को सहायता प्रदान करती है। यह सहयोग प्रबंधकीय, तकनीकी, विपणन और वित्तीय सहायता सहित विभिन्न रूपों में उपलब्ध कराती है।

सहकारिताओं का पुनः सशक्तिकरण

एनडीडीबी ने डेरी संभावित सहकारिताओं में दूध संकलन, संस्था निर्माण, प्रसंस्करण अवसंरचना और आईसीटी अवसंरचना, जनशक्ति सहायता एवं प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहयोग करने के लिए "उत्पादक स्वामित्व वाली प्रोमिसिंग संस्थाओं की पुनः सशक्तिकरण योजना" की शुरुआत की।

एर्नाकुलम दूध संघ, मिदनापुर दूध संघ, पश्चिम असम दूध संघ और वाराणसी दूध संघ इस योजना से लाभान्वित हुए हैं। इस परियोजना का कुल परिव्यय 28.47 करोड़ रुपए है जिसमे एनडीडीबी से सहायता अनुदान के रूप में 11.96 करोड़ रुपये है।

विपणन में सहयोग

एनडीडीबी डेरी सहकारी संस्थाओं के विपणन दक्षता के विकास और उपभोक्ता आधार के विस्तार के लिए सहयोग "पीओआई के विपणन संचालन के सुदृढ़ीकरण" योजना के माध्यम से देती है। 2022-23 में, एनडीडीबी के इस योजना से छः और सहकारिताएं लाभान्वित हुई हैं, जिससे यह संख्या बढ़कर 22 हो गई है। कार्यान्वयन के अधीन परियोजनाओं के लिए कुल 20.75 करोड़ रुपये का परिव्यय किया गया है, जिसमें एनडीडीबी से सहायता अनुदान राशि 9.55 करोड़ रुपये शामिल है। बुनियादी ढांचे के सहयोग के अलावा, सहकारिताओं को बिक्री और वितरण में भी मार्गदर्शन मिला।

दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, वाराणसी, उत्तर प्रदेश और मिदनापुर सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल ने एनडीडीबी के सहयोग से अपने ब्रांडों को फिर से लॉन्च किया।

केरल सहकारी दूध विपणन संघ (KCMMF) के अनुरोध के मद्देनज़र, एनडीडीबी ने उनके ब्रांड के लिए बाजार मूल्यांकन अध्ययन किया। अध्ययन की सिफारिशों पर कार्रवाई करते हुए, केसीएमएमएफ ने एनडीडीबी से प्राप्त सहायता के साथ अपने ब्रांड - 'मिल्मा' को फिर से लॉन्च किया।

24 राज्यों की विभिन्न सहकारिताओं में विपणन क्षमता को बढ़ाने के लिए, एनडीडीबी ने उनके विपणन प्रबंधकों और अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाएं आयोजित की।

सफलता की कहानी

ब्रांड मिल्मा का पुनः लॉन्च

milma

एनडीडीबी द्वारा एक बाजार अध्ययन आयोजित किया गया और अध्ययन के दौरान, यह पाया गया कि मिल्मा के पास मजबूत ब्रांड रिकॉल था, लेकिन बदलते समय और डेमोग्रेफी के लिए जीवंतता की कमी थी। इसके अलावा, पैकेजिंग, मूल्य निर्धारण, गुणवत्ता मापदंडों और रेसिपी के मानकीकरण की आवश्यकता थी।

अध्ययन की संस्तुतियों के बाद, केसीएमएमएफ ने एनडीडीबी से तकनीकी और वित्तीय सहायता के साथ 'मिल्मा' ब्रांड को पुनः लॉन्च किया।

श्री पिनाराई विजयन, माननीय मुख्यमंत्री, केरल और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में इस ब्रांड को पुनः लॉन्च किया गया। इस पुनः लॉन्च ने ब्रांड में जीवंतता ला दी और उपभोक्ताओं और अन्य हितधारकों द्वारा इसका स्वागत किया गया। इस पहल के जरिए मिल्मा के प्रति उपभोक्ता की मान्यता में सुधार लाने से राज्य के किसानों को लाभ मिला है।

सहकारिताओं के माध्यम से डेरी - स्थायी आजीविका की कुंजी

एनडीडीबी "सहकारिताओं के माध्यम से डेरी (DTC)" परियोजना की कार्यान्वयन एजेंसी है, जो भारत सरकार की एक योजना राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (NDDP) की घटक बी है।

परियोजना के तहत दूध संकलन प्रणाली, दूध प्रसंस्करण, विपणन और आईसीटी बुनियादी ढांचे की स्थापना के साथ-साथ उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं (POI) के डेरी किसानों और कर्मचारियों हेतु प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान देने के साथ दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने की गतिविधियों के लिए विभिन्न हस्तक्षेपों की परिकल्पना की गई है।

इस परियोजना का कुल परिव्यय 1568.3 करोड़ रुपये है, जिसमें जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA) से अधिकारिक विकास सहायता (ODA) ऋण के रूप में 924.6 करोड़ रुपये, भारत सरकार के अनुदान के रूप में 475.5 करोड़ रुपये और राज्य/प्रतिभागी संस्थान (PI) के योगदान के रूप में 168.2 करोड़ रुपये शामिल हैं। प्रतिभागी संस्थाएं प्रति वर्ष 1.5 प्रतिशत की ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर सकती हैं।

2022-23 में, इस योजना के अंतर्गत 251.7 करोड रूपये के कुल वित्तीय परिव्यय के साथ 11 उप-परियोजना योजनाओं को मंजूरी दी गई, जिसमें 116 करोड़ रुपये का ऋण, 120.6 करोड़ रुपये का अनुदान और 15.1 करोड़ रुपये का पीआई योगदान शामिल है।

डेरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास निधि

एनडीडीबी भारत सरकार की योजना "डेयरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास निधि (डीआईडीएफ)" के लिए कार्यान्वयन एजेंसी में से एक है। इस योजना की कार्यान्वयन अवधि 2018-19 से 2022-23 तक है। योजना के प्रमुख घटक दूध प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे का निर्माण, आधुनिकीकरण और विस्तार, मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए विनिर्माण सुविधाएं, ग्रामीण स्तर पर चिलिंग बुनियादी ढांचे और इलेक्ट्रॉनिक दूध परीक्षण उपकरण की स्थापना करना हैं। इस योजना का वित्तीय परिव्यय 11,184 करोड़ रुपये है, जिसमें 8,004 करोड़ रुपये ऋण के रूप में, 2,001 करोड़ रुपये अंतिम ऋणियों के योगदान के रूप में, 12 करोड़ रुपये कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा परियोजना प्रबंधन और अध्ययन के लिए योगदान के रूप में और भारत सरकार की 1,167 करोड़ रुपये की ब्याज सहायता शामिल है।

31 मार्च 2023 तक, 4538.40 करोड़ रुपये के ऋण तथा 6730.2 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ 36 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। वर्ष 2022-23 के दौरान, डेरी सहकारिताओं को 1072.9 करोड़ रुपये का ऋण वितरित किया गया, जिसमें 2018-19 से 2022-23 तक 2343.9 करोड़ रुपये का संचयी वितरण शामिल है। अनुमोदित परियोजनाओं से डेरी सहकारिताओं की दूध प्रसंस्करण क्षमता में प्रतिदिन 1.5 करोड़ लीटर की वृद्धि होगी। मार्च 2023 तक, 11 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं, जिसके परिणामस्वरूप दूध प्रसंस्करण क्षमता का विस्तार 63.7 लालीप्रदि तक हो गया है।

कार्यशील पूंजी ऋण के लिए उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं को ब्याज सहायता

वर्ष 2020-21के दौरान, भारत सरकार ने ''डेरी सहकारिताओं एवं किसान उत्पादक संस्थाओं को सहयोग'' (SDCFPO) योजना की शुरूआत की, जिसमें ''कार्यशील पूंजी ऋण पर ब्याज सहायता'' घटक शामिल है, जिसकी डेरी सहकारिताओं को सहयोग की परिव्यय राशि 203 करोड़ रूपये है, जिन्हें कोविड -19 महामारी के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस योजना को वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2025-26 की अवधि के लिए बढ़ाया गया जिसमें 500 करोड़ रुपये का परिव्यय शामिल है।

इस योजना के अंतर्गत, पात्र प्रतिभागी एजेंसियां (PA) बैंकों और वित्तीय संस्थाओं से कार्यशील पूंजी ऋण पर प्रतिवर्ष 2 प्रतिशत ब्याज सहायता का लाभ ले सकती हैं। शीघ्र और समय पर ऋण की अदायगी के लिए प्रतिवर्ष अतिरिक्त 2 प्रतिशत ब्याज सहायता प्रदान की जाती है। 2022-23 के दौरान, डेरी सहकारिताओं को ब्याज के रूप में कुल 173.4 करोड़ रुपये जारी किए गए थे, भारत सरकार ने 2020-21 से 2022-23 तक एनडीडीबी को 433 करोड़ रुपये की संचयी धनराशि जारी की है, और एनडीडीबी ने 31 मार्च 2023 तक डेरी सहकारिताओं को 372.7 करोड़ रुपये की ब्याज सहायता जारी की है। इस योजना ने डेरी सहकारिताओं को ब्याज छूट के साथ कार्यशील पूंजी ऋण का लाभ उठाकर डेरी किसानों को नियमित भुगतान करने में सक्षम बनाया है।

किसान उत्पादक संस्था का गठन

एनडीडीबी केंद्रीय क्षेत्र की योजना "10,000 किसान उत्पादक संगठनों (FPO) का गठन और संवर्धन" की एक कार्यान्वयन एजेंसी है। इसके एक भाग के रूप में, एनडीडीबी को 26 शहद एफपीओ और 100 चारा प्लस एफपीओ के गठन का दायित्व सौंपा गयाा है। मार्च 2023 तक 15 मधुमक्खीपालक एफपीओ और 4 फॉडर प्लस एफपीओ का गठन किया जा चुका है। एनडीडीबी इस योजना के कार्यान्वयन के लिए डेरी सहकारिताओं, उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं और अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर काम कर रही है।

मधुमक्खीपालन को बढ़ावा देना

एनडीडीबी राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन और शहद मिशन (NBHM) योजना की एक कार्यान्वयन एजेंसी (IA) है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से महिलाओं के क्षमता निर्माण, इनपुट सहयोग और आवश्यक बुनियादी सुविधाओं के निर्माण पर जोर देकर वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन को बढ़ावा देना है जिससे "मीठी क्रांति" (मधुमक्खीपालन को बढ़ावा देने की पहल) के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद

सफलता की कहानी

वायनाड ग्राम विकास किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड

10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन के लिए एनडीडीबी ने केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत केरल के वायनाड और तिरुवनंतपुरम जिलों में मधुमक्खीपालक के एफपीओ/शहद क्लस्टर के निर्माण हेतु क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (CBBO) के रूप में हार्टीकार्प (केरल बागवानी उत्पाद विकास निगम) को नामित किया है। इसके अंतर्गत, वायनाड ग्राम विकास किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड (WGVFPCL) को जुलाई 2022 में पंजीकृत किया गया था, जिसके मार्च 2023 तक 210 से अधिक शेयरधारक हैं। छह महीने की अवधि के भीतर, डब्ल्यूजीवीएफपीसीएल ने 206 किसान सदस्यों के लिए नौ बैचों में मधुमक्खीपालन और मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण का आयोजन किया, जिनमें से 25 सदस्य केरल वन विकास सहयोग के कंबामाला चाय बागान की महिला श्रमिक थीं और एनबीएचएम के अंतर्गत 2060 मधुमक्खी कॉलोनियों की आपूर्ति की गई। इसके अलावा, एफपीओ के सदस्यों को चार राज्य स्तरीय कार्यशालाओं में अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और उनकी बिक्री करने का मंच दिया गया, जिसमें उत्पादों का स्वागत किया गया। एफपीओ ने शहद और इसके सह-उत्पादों की बिक्री के माध्यम से 33.7 लाख रुपये का संयुक्त कारोबार किया। बिक्री को बढ़ावा देने के लिए, डब्ल्यूजीवीएफपीसीएल वायनाड में एक खुदरा बिक्री केंद्र खोलने की प्रक्रिया में है, जो जल्द ही व्यावसाय संचालन के लिए उपलब्ध होगा।

कंपनी ने अपनी गतिविधियों के माध्यम से जो सामाजिक और वित्तीय समावेश स्थापित किए हैं, उसके व्यापक लाभ होंगे। इससे एफपीओ सदस्यों को अतिरिक्त आय उपलब्ध हुई है और उन्हें परिवार के पोषण, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के लिए वित्तीय कोष उपलब्ध किया है।

मिलेगी। एनडीडीबी किसानों को वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन के लिए तकनीकी और व्यावहारिक कौशल और अपेक्षित ज्ञान उपलब्ध कराने के लिए क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित करती है। एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं, कृषि विश्वविद्यालयों और ऐसी अन्य एजेंसियों के सहयोग से 3,800 से अधिक किसानों को शामिल करते हुए वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन पर 81 प्रशिक्षण कार्यक्रम और जागरूकता संगोष्ठियां आयोजित कीं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, किसानों को वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन के लिए आवश्यक उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि उनके स्टार्ट अप जोखिम को कम किया जा सके। एनडीडीबी डेरी सहकारिताओं को आधुनिक शहद प्रसंस्करण और शहद परीक्षण की सुविधाएं स्थापित करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रही है।

सहकारी पदचिह्न का विस्तार

एनडीडीबी डेरी सहकारिताओं के कवरेज का अधिक ग्राम पंचायतों तक विस्तार करने के लिए सहकारिता मंत्रालय के साथ काम कर रही है।इस उद्देश्य के लिए एक कार्य योजना लागू की गई है, और हरियाणा, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले में तीन पायलट परियोजनाएं लागू की जा रही हैं। ये परियोजनाएं मूल्यवान विज़न प्रदान करेंगी और सीख देंगी जिनसे एनडीडीबी द्वारा व्यापक कार्ययोजना के विकास में योगदान मिलेगा।

नई बहु-राज्य सहकारी समितियों का गठन

जनवरी 2023 में, तीन नई राष्ट्रीय स्तर की बहु-राज्य सहकारी समितियों की स्थापना की गई अर्थात् राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (NOCL), भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (BBSSL) और राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL)। एनडीडीबी इनमें से दो समितियों की प्रमोटर है, जो "लोकल टू ग्लोबल" के विजन एवं मिशन के अनुरुप है और "सहकार से समृद्धि" के उद्देश्य की प्राप्ति में योगदान देगी।

नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

एनसीओएल एक अम्बैला संस्था के रूप में कार्य करता है, जो सहकारिताओं और संबंधित संस्थाओं द्वारा उत्पादित जैविक उत्पादों को एकत्र करने, प्रमाणित करने, परीक्षण उपलब्ध कराने, क्रय, ब्रांडिंग और विपणन के लिए जिम्मेदार है। एनसीओएल का उद्देश्य जैविक उत्पादों में ग्लोबल लीडर बनने में भारत का सहयोग करना है।

एनडीडीबी एनसीओएल की मुख्य प्रमोटर है। अन्य प्रमोटर राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC), भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता महासंघ लिमिटेड (NCCF), गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ लिमिटेड (GCMMF-अमूल) और भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ लिमिटेड (NAFED) है। एनसीओएल 25 जनवरी 2023 को

एनडीडीबी और केओएफ ने माननीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे, कर्नाटक सरकार, माननीय कृषि मंत्री श्री बीसी पाटिल और एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह की उपस्थिति में सूरजमुखी के संकरबीजों के उत्पादन के लिए यूएएस-बी और आईआईओआर के साथ भागीदारी की

पंजीकृत किया गया और इसकी प्रारंभिक प्रदत्त शेयर पूंजी 100 करोड़ रुपये है और अधिकृत शेयर पूंजी 500 करोड़ रुपये है।

भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड: बीबीएसएसएल एक राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष सहकारी संस्था है, जिसके मुख्य प्रमोटर कृषक भारती सहकारी लिमिटेड (कृभको) के साथ-साथ इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (IFFCO), नाफेड, एनडीडीबी और एनसीडीसी जैसे अन्य प्रतिष्ठित प्रमोटर हैं। बीबीएसएसएल 25 जनवरी 2023 को पंजीकृत किया गया और इसकी प्रारंभिक प्रदत्त शेयर पूंजी 250 करोड़ रुपये और अधिकृत शेयर पूंजी 500 करोड़ रुपये है।

बीबीएसएसएल का प्राथमिक उद्देश्य सहकारिताओं या अन्य संस्थाओं द्वारा उत्पादित उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का उत्पादन, प्रक्रिया, स्टोर, बाजार, ब्रांड, लेबल, वितरण और अनुसंधान और विकास करना है। इसका उद्देश्य किसानों और हितधारकों को अधिक मूल्य प्रदान करना है।

खाद्य तेल सहकारिताओं को बढ़ावा देना

एनडीडीबी देश में तिलहन के क्षेत्र और उत्पादन को बढ़ाने के लिए डेरी सहकारी के नेटवर्क का लाभ उठाने हेतु प्रतिबद्ध है। एनडीडीबी सूरजमुखी की फसल की खेती के क्षेत्र के साथ-साथ उत्पादकता वृद्धि के लिए भारत सरकार के साथ काम कर रही है। उच्च गुणवत्ता वाले तिलहन का उत्पादन करने के लिए एनडीडीबी, कर्नाटक सहकारी तिलहन उत्पादक महासंघ (KOF) और कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय-बैंगलौर (UAS-B) द्वारा हाइब्रिड सूरजमुखी बीजों की केबीएसएच शृंखला के व्यावसायीकरण हेतु एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। एनडीडीबी ने फसल की कटाई के मौसम के दौरान उचित मूल्य पर तिलहन और खाद्य तेल की आपूर्ति के लिए केओएफ को किफायती ब्याज दर पर 10 करोड़ रुपये का कार्यशील पूंजी ऋण मंजूर किया। एनडीडीबी अधिक उत्पादक संकर बीजों के साथ अधिक तिलहन फसल पैदावार की रणनीति तैयार करेगी और नए भौगोलिक क्षेत्रों और राज्यों में प्रवेश करेगी।

राष्ट्रीय डेरी योजना, चरण II

एनडीपी-II राष्ट्रीय डेरी योजना का दूसरा चरण है, जिसे एनडीपी-I के सफलता को आगे बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एनडीपी-I ने 18 प्रमुख डेरी राज्यों में दुधारू पशु उत्पादकता को बढ़ाने और बाजार की पहुंच में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया। इससे दूध उत्पादन में छः प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर को बनाए रखने में मदद मिली।

एनडीपी-II भारत सरकार और विश्व बैंक के द्वारा अनुमोदन के अंतिम चरण में है। आवश्यक दस्तावेजों को तैयार किया गया जैसे परियोजना परिचालन मैनुअल, क्रय और वित्तीय प्रबंधन मैनुअल, एकीकृत उप परियोजना योजनाएं, और महत्वपूर्ण परामर्श सेवाएं जैसे पर्यावरण एवं सामाजिक मूल्यांकन और बाह्य निगरानी और मूल्यांकन।

एनडीपी-II का उद्देश्य दूध मूल्य श्रृंखला में प्रतिस्पर्धा, समावेश और लचीलापन को बढ़ाते हुए इसके कार्बन पदचिह्न को कम करना है, और छोटे धारक डेरी किसानों पर ध्यान केंद्रित करना है।

एनडीपी-II की परिकल्पना एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में की गई है, जिसमें डेरी सहकारिताओं के लाभार्थी के शेयर के अलावा, भारत सरकार के योगदान के समान योगदान, पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक (IBRD) से प्राप्त क्रेडिट शामिल है।

एनडीपी-II के अंतर्गत निवेश का उद्देश्य पीओआई के माध्यम से दूध और दूध उत्पादों की बिक्री को बढ़ावा देना, गुणवत्ता मूल्यांकन प्रणाली के साथ प्रमाणित डेरी संयंत्रों से बेहतर उत्पाद गुणवत्ता के साथ दूध मूल्य श्रृंखला की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है। परियोजना पीओआई की क्षमता को मजबूत करने, आईसीटी सहयोग के माध्यम से डेरी व्यवसाय संचालन में सुधार करने और वैज्ञानिक आहार और चारा विकास के साथ पशु उत्पादकता वृद्धि करने पर केंद्रित है।

इसके अतिरिक्त, एनडीपी-II जलवायु-अनुकूल प्रक्रियाओं को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण डेरी पर जोर देता है, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आती है। यह परियोजना दूध मूल्य श्रृंखला में महिलाओं और छोटे डेरी किसानों की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके समावेश को बढ़ावा देती है।

एनडीडीबी ने डेरी विकास की चुनौतियों को समझने के लिए छः विशेष राज्यों में राज्य स्तरीय हितधारक परामर्श आयोजित किया, जिससे परियोजना डिजाइन की जानकारी मिली। विश्व बैंक ने परियोजना का मूल्यांकन करने के लिए अनेक मिशन दौरों व क्षेत्र दौरों का आयोजन किया।

नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड

वर्तमान वर्ष में, नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (NEDFL) नामक एक नई संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन 17 जनवरी 2023 को किया गया। कंपनी का असम सरकार और एनडीडीबी के बीच सहयोग है, जिसमें दोनों ने समान इक्विटी के रूप में 5 करोड़ रुपये का योगदान दिया है। एनईडीएफएल का प्राथमिक उद्देश्य सात वर्ष की अवधि में महत्वाकांक्षी और व्यापक असम डेरी विकास योजना (ADDP) को लागू करना है। इस योजना का उद्देश्य राज्य को दूध उत्पादन, संकलन, प्रसंस्करण और विपणन में आत्मनिर्भर बनाना है। शीर्ष निकाय के रूप में, एनईडीएफएल क्लस्टर आधारित सहकारी दूध संघों के माध्यम से राज्य में डेरी विकास को आगे बढ़ाएगा।

नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड की पहली बोर्ड बैठक के दौरान असम सरकार की सहकारिता मंत्री श्रीमती नंदिता गोरलोसा के साथ एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह

श्री परषोत्तम रुपाला, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, डॉ. संजीव बालियान और डॉ एल. मुरुगन, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री, के साथ स्टार्ट-अप कॉन्क्लेव का उद्घाटन करते हुए।

स्टार्ट-अप कॉन्क्लेव

एनडीडीबी ने पशुपालन और डेयरी विभाग, स्टार्ट अप इंडिया, कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (CII) और तेलंगाना के पशुपालन विभाग के सहयोग से 28 फरवरी 2023 को एक स्टार्ट-अप कॉन्क्लेव का आयोजन किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य उद्यमियों, निवेशकों और उद्योग विशेषज्ञों को एक साथ लाकर पशुधन, डेरी और पशुपालन स्टार्ट-अप को बढ़ावा देना है। पिच फेस्ट, खरीददार-विक्रेता बैठक का आयोजन, उपयुक्त स्टार्ट-अप का प्रदर्शन और पशुपालन और डेरी क्षेत्र में शुरुआती चरण के स्टार्ट-अप को बढ़ाने, व्यावसायिक संबंधों के निर्माण और प्रभावशाली विवरण बनाने के लिए प्रशिक्षित करने, पशुपालन और डेरी पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए कार्यशाला का आयोजन इसकी विशेषता थी।

गोपाल रत्न पुरस्कार 2021-22

पशुपालन और डेयरी विभाग ने उत्पादकता वृद्धि, देशी नस्ल संरक्षण और प्रभावी डेरी सहकारी प्रबंधन के लिए नवीन तकनीकों को अपनाने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को मान्यता देने के लिए गोपाल रत्न पुरस्कार 2021-22 का आयोजन किया। एनडीडीबी ने पुरस्कारों के निर्णायक भूमिका निभाने और पदोन्नति में सहयोग दिया और संयोजन किया। सम्मान समारोह 26 नवंबर 2022 को डॉ. बाबू राजेंद्र प्रसाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर, जीकेवीके परिसर, बेंगलुरु में आयोजित हुआ।

डॉ. संजीव बालियान, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री गोपाल रत्न पुरस्कार प्रदान करते हुए।

दूध महासंघों और संघों को प्रबंधन में सहयोग

डेरी क्षेत्र का विकास देश के विभिन्न क्षेत्रों में एक समान नहीं है, जिससे दूध उत्पादन, पशु उत्पादकता, डेरी बुनियादी ढांचे और बाजार पहुंच में असमानताएं हैं। एक पारदर्शी गांव-आधारित दूध संकलन प्रणाली स्थापित करने और बाजार संपर्क सुनिश्चित करने से घरेलू आय और दूध उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। एनडीडीबी दूध संघों और महासंघों को प्रबंधन सहायता प्रदान करती है ताकि आकांक्षी जिलों सहित अल्प विकसित डेरी क्षेत्रों में डेरी विकास की पहलों को आगे बढाया जा सके।

झारखंड दूध महासंघ

वित्तीय वर्ष 2022-23 में झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (JMF) ने विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण प्रगति की है। जेएमएफ ने लगभग 3000 गांवों के 30,000 से अधिक सदस्यों से लगभग 145.3 हकिग्राप्रदि का दैनिक औसत दूध संकलन हासिल किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 18 प्रतिशत अधिक है। सरकार ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से दूध उत्पादकों को दूध बिल भुगतानके लिए 180.3 करोड़ रुपए की राशि जारी की है। वर्ष के दौरान, राज्य सरकार ने जेएमएफ से संबद्ध दूध उत्पादकों को 2 रुपये प्रति लीटर की प्रोत्साहन राशि का भुगतान किया। दूध संकलन प्रक्रिया में पारदर्शिता और कुशल संचालन सुनिश्चित करने के लिए ग्राम एमपीपी में 665 डाटा प्रोसेसर दूध संकलन इकाइयां (DPMCU) और 108 स्वचालित दूध संकलन इकाइयां (AMCU) स्थापित की गई हैं।

जेएमएफ ने प्रतिदिन औसतन 156 हजार लीटर (हलीप्रदि) तरल दूध का विपणन किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक है। वर्ष के दौरान झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा साहिबगंज में 50 हलीप्रदि (100 हलीप्रदि तक विस्तार योग्य) की क्षमता वाले एक नए डेरी संयंत्र का उद्घाटन किया गया। जेएमएफ ने मेधा खोआ नामक एक नया उत्पाद भी लॉन्च किया, और एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (NFN) के साथ मिलकर कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) के अंतर्गत बोकारो जिले में गिफ्टमिल्क परियोजना की शुरूआत की। इस परियोजना के अंतर्गत 10 ग्रामीण सरकारी स्कूलों के लगभग 5000 बच्चों को प्रतिदिन 200 मिलीलीटर फ्लेवर्ड दूध प्रदान किया जाता है।

एनपीडीडी योजना के अंतर्गत भारत सरकार ने जेएमएफ के लिए एक राज्य केंद्रीय प्रयोगशाला की स्थापना को मंजूरी दे दी है। दूध और दूध उत्पादों दूषित पदार्थो (कीटनाशक अवशेष, पशु चिकित्सा दवाएं, मेलामाइन), हैवी मैटल, बैक्टीरियल काउंट और सोमैटिक सेल कांउट के विश्लेषण के लिए यह प्रयोगशाला आधुनिक परीक्षण सुविधाओं से सुसज्जित है, जिसमें एलसीएमएस, जीसीएमएस, आईसीपीएमएस, बैकसोमैटिक, मिल्कोस्कैन-एफटी -1 इत्यादि शामिल हैं।

वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, जेएमएफ ने अपने इनपुट कार्यक्रम के अंतर्गत दूध उत्पादकों को लगभग 6,000 मीट्रिक टन मिश्रित पशु आहार की बिक्री की और संबद्ध दूध उत्पादकों को 9,235 किलोग्राम चारा फसल के बीज वितरित किए।

बारहमासी चारा घास को बढ़ावा देने के लिए, दूध उत्पादकों को मुफ्त हाइब्रिड-नेपियर कटिंग प्रदान की गई, जिसमें वर्ष के दौरान झारखंड के दूध उत्पादकों के बीच 55,000 से अधिक नेपियर कटिंग का वितरण शामिल है।

वर्ष के दौरान, जेएमएफ के लिए शीघ्र त्वरित नस्ल सुधार कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में "आईवीएफ-भ्रूण प्रत्यारोपण परियोजना" का कार्यान्वयन एक और मील का पत्थर था। इस परियोजना का उद्देश्य उत्पादकता वृद्धि के लिए नस्ल में सुधार करना है और इसके लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) के अंतर्गत सब्सिडी दी जाती है। वर्ष 2022-23 के दौरान, जेएमएफ ने 450 ग्राही पशुओं का चयन किया और इस तकनीक के माध्यम से इन पशुओं में से 14 पशु सफलतापूर्वक गाभिन हुए।

वर्ष के दौरान, जेएमएफ ने दूध के बिल में कटौती के माध्यम से इनपुट सामग्री की बिक्री (पशु चारा उत्पादों) के लिए एकिकृत दृष्टिकोण को अपनाते हुए स्वचालित दूध संकलन सॉफ्टवेयर (AMCS) और एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग (ERP) को एकीकृत करने का एक तकनीकी कदम उठाया। इस एकीकरण ने न केवल दूध उत्पादक और सहकारी के बीच ट्रांजेक्शन की पारदर्शिता में सुधार लाया है, बल्कि प्रसंस्करण समय को कम करके सहकारी को एक विशेष लाभ भी प्रदान किया है। एनडीईआरपी को विकसित करने में जेएमएफ के योगदान को 2022 में आयोजित विश्व डेरी शिखर सम्मेलन के दौरान अंतर्राष्ट्रीय डेरी फेडरेशन इनोवेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया।

सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन (टाटा ट्रस्ट से संबद्ध) के सहयोग से, जेएमएफ ने हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए एनडीडीबी की एक पहल के अंतर्गत एक खाद प्रबंधन कार्यक्रम लागू किया है। इसके माध्यम से दूध उत्पादकों के घर के नजदीक 100 फ्लेक्सी बायोगैस इकाइयों को सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है। इससे दूध उत्पादकों को एलपीजी की ईंधन लागत पर बचत करने में मदद मिलती है और बेहतर पर्यावरणीय उपायों सहित सतत् कृषि में सहायता मिलती है। इसके अलावा, इन बायोगैस इकाइयों से प्राप्त होने वाली स्लरी का उपयोग करने के लिए रांची जिले के बेरो ब्लॉक के चंगानी टिकराटोली में एक बायो स्लरी प्रसंस्करण केंद्र स्थापित किया गया है। एक अन्य हरित ऊर्जा पहल में झारखंड के गुमला जिले के एक दूरदराज के गांव में सौर-ऊर्जा-आधारित इंस्टेंट मिल्क चिलर का पायलट परीक्षण शामिल है।

वर्ष के दौरान, रांची जिले के लापुंग ब्लॉक में 43 डेरी सहकारी समितियां और 1 मधुमक्खीपालक एफपीओ पंजीकृत की गईं।

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

एनडीडीबी द्वारा प्रबंधित पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (WAMUL), जिसे पूरबी डेरी के नाम से जाना जाता है, 1500 से अधिक गांवों की 562 कार्यात्मक डेरी सहकारिताओं के माध्यम से 28,000 से अधिक डेरी किसानों को सहयोग देता है। पूरबी ने वर्ष 2022-23 के दौरान 47,852 किग्रा प्रतिदिन (किग्राप्रदि) की औसत दूध संकलन की सूचना दी।

इसके अलावा, वामूल ने अपने परिचालन क्षेत्र के भीतर अपनी बल्क मिल्क कूलिंग क्षमता का 36,000 लीटर तक विस्तार किया, जिसने सहकारी के साथ जुड़ने के लिए अधिक डेरी किसानों को आकृष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप, वामूल में वित्तीय वर्ष 2022-23 में अपने साथ जुड़े क्रियाशील डेरी किसानों की संख्या में 27 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

वामूल ने 'पूरबी' ब्रांड के अंतर्गत पैक्ड तरल दूध और पनीर, मीठा दही, सादा दही, लस्सी, क्रीम और घी जैसे दूध से बने उत्पादों की लगभग 83,000 लीटर प्रतिदिन (लीप्रदि) की बिक्री की, जो पिछले वर्ष की तुलना में 20 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। वर्तमान में, वामूल विटामिन ए और डी से युक्त पैक्ड तरल दूध के अपने सभी उत्पादों को फोर्टिफाई कर रहा है। 2022-23 के दौरान, एनडीडीबी ने अपनी रिवाइटलाइजिंग प्रॉमिसिंग प्रोड्यूसर्स ओन्ड इंस्टीट्यूशंस स्कीम के तहत WAMUL को ब्याज मुक्त ऋण के रूप में 500 लाख रुपये और अनुदान के रूप में 300 लाख रुपये मंजूर किए। वर्ष के दौरान, वामूल ने लगभग 200 करोड़ रुपये का बिक्री कारोबार दर्ज किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 33 प्रतिशत अधिक है।

विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित असम कृषि व्यवसाय और ग्रामीण परिवर्तन परियोजना (अपार्ट) के औपचारिक डेरी मूल्य श्रृंखला घटक की अंतिम कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में वामूल ने अपने डेरी किसानों को विभिन्न इनपुट सेवाओं उपलब्ध कराना निरंतर जारी रखा। इन सेवाओं में घर-पहुंच कृत्रिम गर्भाधान (AI) की सुविधा, किफायती दरों पर पशु आहार और आहार संपूरक का वितरण, और क्षेत्र प्रदर्शन, प्रशिक्षण और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम का आयोजन शामिल है।

मार्च 2023 तक, वामूल ने अपार्ट के अंतर्गत आने वाले जिलों में 454 मोबाइल एआई तकनीशियनों (MAIT) के नेटवर्क के माध्यम से 3,240 गांवों में 8,45,794 एआई निष्पादन की सूचना दी। इसी अवधि के दौरान, परियोजना ने 3,14,099 बछड़ों के जन्म की सूचना दी, जिनमें से 162,116 मादा बछड़े हैं।

वामूल ने अपने डेरी किसानों को 3500 टन से अधिक पशु आहार, 24 टन खनिज मिश्रण, 10 टन बाईपास प्रोटीन आहार और 5.36 लाख हाइब्रिड-नेपियर की कटिंग वितरित कीं। इसने पशु आयुर्वेद गतिविधियों के अंतर्गत यूरिया-उपचारित

धान के पुआल और हरे चारे के साइलेज, नर्सरी के विकास के प्रदर्शन के साथ और चारा फसलों व औषधीय पौधों के प्रदर्शन भूखंडों के प्रदर्शन निरंतर जारी रखा। इसने युवा और वयस्क दुधारू पशुओं दोनों के लिए आहार प्रबंधन में सुधार के लिए बछड़ा पोषण लोकप्रियता कार्यक्रम और आहार संतुलन कार्यक्रम (RBP) जैसे कार्यक्रमों की शुरूआत की। इसके अलावा, वर्ष के दौरान एथनो वेटनरी शिविर सहित टीकाकरण स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।

हरित ऊर्जा पहलों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, वामूल ने अपनी गांव-आधारित दूध संकलन गतिविधियों के सुदृढ़ीकरण के लिए सौर ऊर्जा चलित स्वचालित दूध संकलन प्रणाली और तत्काल मिल्क चिलिंग यूनिट को शुरूआत की। वर्ष के दौरान, इस सहकारिता ने कामरूप (महानगर) जिले के खेतड़ी प्रखंड के मलोईबारी राजस्व गांव में महिला लाभार्थियों के घरों में 100 गोबर गैस यूनिट की कमीशनिंग की, जिनमें से प्रत्येक यूनिट की क्षमता 2 घन मीटर थी। इस पहल को एनडीडीबी और सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन (टाटा ट्रस्ट से सबंद्ध) द्वारा वित्त पोषित किया गया। इसके अलावा, 100 महिला लाभार्थियों को सदस्यों के रूप में शामिल करते हुए गोबर सहकारिता "सखी जयबिक खार समाबाई समिति लिमिटेड" को पंजीकृत करने के लिए आवश्यक कदम उठाए गए।

केन्द्रीय क्षेत्र की 10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन योजना के अंतर्गत कामरूप जिले के हाजो क्षेत्र में वामूल द्वारा "नाबा मिलन मधुमक्खीपालक और उत्पादक सहकारी समिति लिमिटेड" के पंजीकरण में सहयोग किया गया और इसके सदस्यता बढ़कर 85 सदस्य तक पहुंच गई है। वामूल ने नई पंजीकृत सहकारी समिति से 250 किलोग्राम कच्चा शहद संकलित किया, जिसे "पूरबी" ब्रांड के अंतर्गत प्रसंस्कृत, पैक और बिक्री की।

पूर्वी असम दूध संघ लिमिटेड

डेरी सहकारिताओं के माध्यम से पूर्वी असम में डेरी विकास को बढ़ाने के लिए 11 जनवरी 2023 को असम सरकार, एनडीडीबी और ईस्ट असम मिल्क प्रोड्यूसर्स कोऑपरेटिव यूनियन लिमिटेड (EAMUL) के बीच एक त्रिपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। दरांग, सोनितपुर, लखीमपुर, धेमाजी, गोलाघाट, जोरहाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों में आवश्यक बुनियादी ढांचे का निर्माण करके और ग्राम स्तर पर डेरी सहकारी समितियों (DCS) की स्थापना करके डेरी विकास की गतिविधियों को शुरू करने की परिकल्पना की गई है।

ईअमूल का प्रबंधन एनडीडीबी को सौंप दिया गया है। 31 मार्च 2023 तक दरांग और सोनितपुर जिलों में अब तक 23 डीसीएस का गठन किया गया है और दूध संकलन की शुरूआत की गई है।

श्री मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी चकिया, चंदौली, वाराणसी चिलिंग केन्द्र का शिलान्यास करते हुए

ऊपरी असम के जिलों में दूध उत्पादन और अतिरिक्त दूध का आकलन

असम सरकार के अनुरोध पर, ऊपरी असम के 7 जिलों (धेमाजी, डिब्रूगढ़, गोलाघाट, जोरहाट, लखीमपुर, शिवसागर और तिनसुकिया) में उप-जिला स्तर पर दूध उत्पादन और अतिरिक्त दूध का अनुमान लगाने के लिए मई-जून 2022 के दौरान एक सैंपल सर्वेक्षण आयोजित किया गया, जिसे अपार्ट परियोजना के माध्यम से वित्त पोषित किया गया। इसके बाद, सोनीपत जिले में भी सर्वेक्षण किया गया।

असम के दिमा हसाओ जिले में डेरी और पशुपालन की क्षमता का पता लगाने के लिए मार्च 2023 में एक प्राथमिक सर्वेक्षण शुरू किया गया।

वाराणसी दूध संघ

एनडीडीबी दिसंबर 2021 से वाराणसी दूध संघ का प्रबंधन कर रहा है। 2022-23 के दौरान, 21.9 हजार किलोग्राम प्रतिदिन (हकिग्राप्रदि) की औसत दूध संकलन के साथ 327 डेरी सहकारी समितियों के माध्यम से लगभग 8000 डेरी किसानों को लाभ हुआ।

150 डीपीएमसीयू को स्थापित और संचालित करके ग्राम-स्तरीय दूध संकलन प्रक्रिया में अधिक पारदर्शिता सुनिश्चित की गई। दूध संकलन मार्गों के साथ रणनीतिक स्थानों पर 16 बीएमसी की स्थापना से दूध की गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है। फार्म स्तर पर संकलित दूध की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के अलावा, वाराणसी दुग्ध संघ ने अपने उपभोक्ताओं को मिलावट मुक्त और शुद्ध दूध उपलब्ध कराने के लिए अपनी गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला को भी मजबूत किया है।

डिजिटलीकरण को और अधिक बढाते हुए, दूध संघ द्वारा आधुनिक व्यवसाय सॉफ्टवेयर प्रणाली एनडीडीबी डेरी ईआरपी (NDERP) लागू की गई है। एनडीईआरपी ने दूध संघ की प्रमुख व्यावसायिक प्रक्रियाओं को एकीकृत किया है।

वर्ष के दौरान, वाराणसी दूध संघ ने एनडीडीबी की "रिवाइटलाइजिंग प्रॉमिसिंग प्रोड्यूसर्स ओन्ड इंस्टीट्यूशंस स्कीम" के तहत 394.2 लाख रूपये के ब्याज मुक्त ऋण और 300 लाख रूपये के अनुदान के लिए मंजूरी प्राप्त की। अनुमोदित परिव्यय का उपयोग दूध संकलन संचालन, प्रसंस्करण और आईसीटी बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए किया जाएगा। वाराणसी दूध संघ ने किफायती दरों पर पशु आहार, क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण और चारा संपूरक का वितरण जैसी विभिन्न इनपुट सेवाएं प्रदान करना जारी रखा है। संघ ने अपने डेरी किसानों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों की भी व्यवस्था की।

2022-23 के दौरान, वाराणसी दूध संघ ने पनीर, दही और घी बेचने के अलावा 'पराग' ब्रांड के तहत हर दिन लगभग 12,536 लीटर पैक्ड तरल दूध बेचा। वाराणसी दूध संघ ने पिछले वर्ष के 19.13 करोड़ रुपये के मुकाबले 28.21 करोड़ रुपये का बिक्री कारोबार दर्ज करके पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 47.4 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की।

वाराणसी दूध संघ ने अपने डेरी संयंत्र की स्टीम और बिजली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए देश का पहला गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने का गौरव भी प्राप्त किया। बायोगैस संयंत्र, गोबर की बिक्री के माध्यम से डेरी किसानों के लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत बनाने के साथ-साथ पारंपरिक ईंधन की जगह कार्बन पदचिह्न को कम करने में योगदान देने में भी संघ की मदद कर रहा है।

विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना

विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना (VMDDP) को एनडीडीबी द्वारा स्वयं की सहायक कंपनी मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड और महाराष्ट्र सरकार के माध्यम से संयुक्त रूप से क्रियान्वित किया जा रहा है। वीएमडीडीपी की परिकल्पना महाराष्ट्र के सूखे और आत्महत्या की संभावना वाले विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्रों में किसानों के संकट को कम करने के लिए की गई थी। इस परियोजना से 3,000 से अधिक गांवों के 30,000 डेरी किसान लाभान्वित हुए हैं। इस क्षेत्र में मदर डेरी के हस्तक्षेप के कारण किसानों को गाय और भैंस दोनों के दूध का लाभकारी मूल्य मिलना शुरू हो गया। मदर डेरी डेरी किसानों को अच्छी गुणवत्ता का पशु चारा, साइलेज और खनिज मिश्रण की आपूर्ति की सुविधा भी प्रदान कर रही है। एनडीडीबी द्वारा विदर्भ क्षेत्र में तीन माइक्रो प्रशिक्षण केन्द्रों (MTC) की स्थापना की गई थी ताकि किसानों को उत्तम कृषि प्रबंधन पद्धतियों पर निरंतर प्रशिक्षण दिया जा सके और साथ ही किसानों को 'घरेलू बायोगैस इकाइयों' से परिचित कराया जा सके, जिससे कृषि आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। वर्ष 2022-23 के दौरान, एमटीसी में लगभग 1350 डेरी किसानों को प्रशिक्षित किया गया है।

इस तथ्य के मद्देनज़र कि इस क्षेत्र में प्रति पशु औसत दूध उत्पादन कम है, उत्तम गुणवत्ता युक्त वीर्य के उपयोग से संतान की आनुवंशिक क्षमता के विकास हेतु डोरस्टेप एआई (कृत्रिम गर्भाधान) सेवाएं शुरू की गईं।

इस वर्ष के दौरान, दूध संकलन बढ़कर 3.00 लालीप्रदि के शीर्ष आंकड़े को पार कर लिया और औसत दूध संकलन पिछले वर्ष के 2.06 लाकिग्राप्रदि से बढ़कर 2.40 लालीप्रदि हो गया।

नागपुर दूध प्रसंस्करण संयंत्र में प्रतिदिन 2 लाख लीटर दूध और 20,000 किलोग्राम दूध उत्पादों जैसे दही, छाछ एवं मिष्टी दोई का प्रसंस्करण किया जाता है। इन उत्पादों के साथ अन्य उत्पाद जैसे आइसक्रीम, पनीर, लस्सी, मिल्क शेक, मिठाई और घी की बिक्री मदर डेरी द्वारा विदर्भ क्षेत्र के प्रमुख शहरों और कस्बों में 145 बूथों के नेटवर्क के माध्यम से की जा रही है।

अधिक से अधिक गांवों को कवर करने के लिए विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना के दूध संकलन पदचिह्न का विस्तार किए जाने संबंधी प्रयास जारी है ताकि इन क्षेत्रों में डेरी को बढ़ावा दिया जा सके, डेरी किसानों की आय में वृद्धि की जा सके और डेरी की निरंतरता में सुधार किया जा सके।

एनडीडीबी ने वीएमडीडीपी में दूध संकलन के लिए मिल्क रूट को अनुकूलित करने के अभ्यास शुरू कर दिए हैं। इस अभ्यास के तहत, दो दूध चिलिंग केंद्रों के लिए दूध संकलन रूट बनाए जाएंगे। बुटीबोरी और मलकापुर रुट को अनुकूलित किया गया है। बुटीबोरी चिलिंग सेंटर के लिए, परिवहन वाहनों की संख्या में कमी किए बिना मार्ग की लंबाई 88 किमी प्रति शिफ्ट कम कर दी गई है।

इसी तरह, मलकापुर चिलिंग सेंटर के लिए, दो वाहनों की वापसी सहित प्रति शिफ्ट मार्ग की लंबाई 179 किलोमीटर प्रतिदिन कम कर दी गई है।

लद्दाख यूटी डेरी सहकारी संघ के प्रबंधन के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर समारोह

लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ

एनडीडीबी ने 17 अगस्त 2022 को केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख और लद्दाख स्वायत्त पर्वतीय विकास परिषद (LAHDC) के साथ एक त्रिपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। अनुबंध के तहत, एनडीडीबी लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ को 5 वर्ष की अवधि के दौरान प्रबंधकीय और तकनीकी सहायता प्रदान करेगी।

इस महासंघ के समग्र संचालनों में बाजार की पहुंच बढ़ाने और निरंतरता लाने तथा आर्थिक सक्षमता सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

उक्त हस्ताक्षर समारोह केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के माननीय उपराज्यपाल श्री राधा कृष्ण माथुर और लद्दाख के माननीय सांसद श्री जामयांग सेरिंग नामग्याल सहित प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह, लेह के माननीय मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री ताशी ग्यालसन और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के पशुपालन और सहकारिता विभाग के सचिव श्री रविंदर कुमार ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

पशु उत्पादकता वृद्धि

नस्ल सुधार कार्यक्रम

एनडीडीबी, देश में गोवंशीय गायों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। इसका मुख्य फोकस उत्पादकता है जिसके कई फायदे हैं जिनमें किसानों की आय में सुधार, जलवायु पर पड़ने वाले प्रभाव में कमी और पोषण सुरक्षा में वृद्धि शामिल है। विभिन्न तकनीकी हस्तक्षेपों जैसे हिमिकृत वीर्य उत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान (AI), ओवम पिक-अप एंड इन-विट्रो भ्रूण उत्पादन एवं भ्रूण प्रत्यारोपण (OPU- IVEP- ET), वैज्ञानिक पोषण तथा उचित पशु स्वास्थ्य एवं रोग निगरानी का सामूहिक लक्ष्य डेरी गायों और भैंसों की आनुवंशिक क्षमता को अनुकूल बनाना है।

वैज्ञानिक प्रजनन प्रक्रियाएं

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी ने डेरी किसानों के बीच उन्नत प्रजनन प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देते हुए उच्च आनुवांशिक गुण वाले सांड़ों को उत्पादित कर वितरित करने के अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखा। इसके अतिरिक्त, इस वर्ष नए प्रयासों की शुरुआत देखी गई, जैसे कि भ्रूण प्रत्यारोपण और सेक्स्ड सीमन का उपयोग करके शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (ABIP), और दूध संघों से संबद्ध क्षेत्रों में भ्रूण प्रत्यारोपण से जुड़े क्षेत्र भ्रूण स्थानांतरण।

जीनोमिक चयन के लिए संदर्भ आबादी का विस्तार

वित्त वर्ष 2022-23 में, एनडीडीबी ने जीनोमिक चयन के लिए संदर्भ आबादी के सुदृढ़ीकरण के लिए गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (GBRC), जीसीएमएमएफ और आणंद कृषि विश्वविद्यालय (AAU) सहित भागीदारों के साथ सहयोग किया। इस सहयोगी प्रयास के एक हिस्से के रूप में, 7,638 मिल्क रिकार्डेड गायों और भैंसों को जीनोटाइप किया गया। इसके अलावा, एनडीडीबी की जीनोमिक प्रयोगशाला में बायफ के सहयोग से 1,632 सैम्पल पशुओं को जीनोटाइप किया गया। किसानों को जीनोमिक चयन द्वारा पशुओं के चयन का लाभ दिलाने के लिए, एनडीडीबी काफ प्रयोगशाला के माध्यम से जीनोटाइपिंग की सेवाएं प्रदान की गईं। पूरे वर्ष 2022-23 में ऐसे कुल 3,181 सैम्पलों को जीनोटाइप किया गया।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा उत्पन्न जीनोटाइप डेटा को परस्पर उपयुक्त बनाने, जीनोटाइपिंग की लागत को कम करने और एकल संदर्भ आबादी का उपयोग करके जीनोमिक प्रजनन मूल्य अनुमानों की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए, विभिन्न संस्थाओं, अर्थात एनडीडीबी, बायफ, आईसीएआर-एनबीएजीआर और एनआईएबी के आंकड़ों को मिलाकर देश के लिए एक सामान्य जीनोटाइपिंग चिप विकसित करने की दिशा में कदम उठाए गए हैं। पहले कदम के रूप में, जीनोटाइपिंग चिप "इंडसचिप (INDUSCHIP)" और "बफचिप (BUFFCHIP)" को बायफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से अपग्रेड किया गया। इसके बाद, आईसीएआर-एनबीएजीआर से प्राप्त जीनोटाइपिंग डेटा को गायों और भैंसों के लिए सामान्य जीनोटाइपिंग चिप के डिजाइन में शामिल किया गया।

ओवम पिक-अप एवं इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

ओपीयू-आईवीईपी-ईटी तकनीक द्वारा कम समय में श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म में वृद्धि करके गायों और भैंसों के आनुवंशिक सुधार में तेजी लाई जा सकती है। एनडीडीबी की अत्याधुनिक ओपीयू-आईवीईपी-ईटी सुविधा ने जनशक्ति के प्रशिक्षण के साथ-साथ गायों और भैंसों के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक की दक्षता में सुधार लाने की दिशा में अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखा। ओपीयू-आईवीईपी प्रयोगशाला के लिए "हब एंड स्पोक" मॉडल के कार्यान्वयन में गति देखी गई, जिसमें बनास डेरी, अमूल डेरी, साबर डेरी, दूधसागर डेरी और सुमुल डेरी जैसी प्रगतिशील संस्थाओं ने एनडीडीबी की ओपीयू-आईवीईपी-ईटी प्रयोगशाला स्पॉक्स के रूप में कार्य किया। पूरे वर्ष में, कुल 1,213 जीवनक्षम भ्रूणों का उत्पादन किया गया, जिसमें से 813 भ्रूण प्रत्यारोपित हुए और 27 श्रेष्ठ बछड़ों के जन्म के साथ 74 पशु गाभिन हुए। इन प्रयासों में सहयोग देने के लिए विभिन्न संस्थाओं के आठ पशु चिकित्सकों ने इस तकनीक को प्रभावी ढंग से विकसित करने के लिए प्रयोगशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किए। एनडीडीबी की ओपीयू-आईवीईपी-ईटी सुविधा का प्रदर्शन लीमा, पेरू में इंटरनेशनल एम्ब्रायो टेक्नालॉजी सोसाइटी (IETS) के 49 वें वार्षिक सम्मेलन में किया गया और इसे भ्रूण प्रत्योपण के क्षेत्र में अर्ली कैरियर अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

एनडीडीबी, भारत सरकार की राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के अंतर्गत एसएजी, बीडज में ईटीटी/आईवीएफ केन्द्र के कार्यान्वयन और सुदृढ़ीकरण की भी निगरानी कर रही है। वर्ष के दौरान, परियोजना ने 928 भ्रूण का उत्पादन किया, जिसमें से 237 भ्रूण प्रत्यारोपित हुए, जिसके परिणामस्वरूप 32 पशु गाभिन हुए। परियोजना ने उसी वर्ष 37 बछड़ों के जन्म को भी रजिस्टर किया।

एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वित राष्ट्रीय गोकुल मिशन परियोजनाएं

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना है जो देशी गो वंशीय नस्लों के विकास एवं संरक्षण के लिए क्रियान्वित की जा रही है। यह योजना दूध उत्पादन में वृद्धि और गो वंशीय पशुओं की उत्पादकता बढाने के लिए महत्वपूर्ण है ताकि दूध की बढती मांग की पूर्ति की जा सके और देश के ग्रामीण किसानों को डेरी का अधिक लाभकारी मूल्य प्रदान किया जा सके। एनडीडीबी पूर्वोत्तर राज्यों में पीटी एवं पीएस परियोजनाओं, देशी पशु नस्लों के लिए राष्ट्रीय गो वंशीय जीनोमिक केन्द्र का क्रियान्वयन, बोवाइन जर्मप्लाज्म का आयात, ईटीटी/ आईवीएफ सुविधा का सुदृढ़ीकरण, शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम, नस्ल वृद्धि फार्म, वीर्य केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण और एआई प्रशिक्षण की स्थापना एवं एआई नेटवर्क की निगरानी कर रही है।

संतति परीक्षण और वंशावली चयन कार्यक्रम

संतति परीक्षण (PT) कार्यक्रम वैज्ञानिक रूप से निर्मित क्षेत्र-आधारित कार्यक्रम हैं जो गायों और भैंसों के आनुवंशिक सुधार के लिए लागू किए गए हैं। इसमें श्रेष्ठ नर और मादा पशुओं का चयन और पूर्व निर्धारित प्रजनन द्वारा उच्च आनुवंशिक गुण (HGM) वाले सांड़ों का उत्पादन शामिल है। आरजीएम के अंतर्गत, विभिन्न पशु नस्लों जैसे गिर, साहीवाल, जर्सी, सीबीएचएफ और सीबीजेवाई के साथ-साथ भैंस की नस्लों जैसे मुर्रा और मेहसाना के लिए पीटी परियोजनाएं 9 राज्यों में कार्यान्वित की जा रही हैं। पूरे वर्ष के दौरान, पीटी परियोजनाओं ने सतत् एचजीएम सांड़ों का उत्पादन किया हैं, डेटा की सटीकता के लिए जीपीएस निर्देशांक का उपयोग करके पशु प्रजनन गतिविधियों और दूध रिकॉर्डिंग को कुशलतापूर्वक ट्रैक द्वारा प्रदर्शन रिकॉर्ड के अपने डेटाबेस का विस्तार कर रही हैं। वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, पीटी परियोजनाओं ने मिलकर 268 सांड़ों का परीक्षण किया, 4.72 लाख एआई परीक्षण किए, और 73,163 पशुओं को दूध रिकॉर्डिंग के अंतर्गत रखा। इन परियोजनाओं ने 994 एचजीएम सांड़ों की खरीद की, जिन्हें देश भर में व्यापक स्तर पर गर्भाधान कराने के लिए रोगमुक्त हिमिकृत वीर्य डोज के उत्पादन हेतु वीर्य केन्द्रों को वितरित किया जाएगा।

आरजीएम योजना के अंतर्गत कार्यान्वित पीटी परियोजनाओं का विवरण नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित है:

क्र. सं.	राज्य	ईआईए का नाम	नस्ल
1	आंध्र प्रदेश	एपीएलडीए	जर्सी संकर नस्ल (JYCB)
2	गुजरात	एसएजी	मुर्रा
3	गुजरात	एसएजी	होल्स्टीन फ्रीजियन संकर नस्ल (HFCB)
4	गुजरात	मेहसाणा दूध संघ	मेहसाना
5	गुजरात	बनास दूध संघ	मेहसाना
6	गुजरात	एसएजी	गिर
7	हरियाणा	एचएलडीबी	मुर्रा
8	हिमाचल प्रदेश	एचपीएलडीबी	जर्सी
9	केरल	केएलडीबी	होल्स्टीन फ्रीजियन संकर नस्ल (HFCB)
10	पंजाब	पीएलडीबी	मुर्रा
11	पंजाब	पीएलडीबी	साहीवाल
12	राजस्थान	श्री गंगानगर दूध संघ	साहीवाल
13	तमिलनाडु	टीसीएमपीएफ	जर्सी संकर नस्ल (JYCB)
14	उत्तर प्रदेश	एब्रो	मुर्रा

आरजीएम के अंतर्गत कार्यान्वित पीएस परियोजनाओं का विवरण नीचे दी गई तालिका में दिया गया है:

क्र. सं.	राज्य	ईआईए का नाम	नस्ल
1	गुजरात	एसएजी	जाफ़राबादी
2	गुजरात	बनास दूध संघ	कांकरेज
3	गुजरात	कच्छ दूध संघ	बन्नी
4	हरियाणा	एचएलडीबी	हरियाना
5	महाराष्ट्र	एमएलडीबी	गावलाओ
6	महाराष्ट्र	एमएलडीबी	पंढरपुरी
7	पंजाब	पीएलडीबी	नीली-रावी
8	राजस्थान	आरएलडीबी	थारपारकर
9	राजस्थान	उरमूल ट्रस्ट	राठी

पीटी और पीएस परियोजनाओं के अंतर्गत खरीदे गए एचजीएम सांड़ों को बुल डिस्ट्रीब्यूशन सॉफ्टवेयर (BDS) का उपयोग करके विभिन्न वीर्य केन्द्रों में वितरित किया गया।

श्री राजेश कुमार सिंह, सचिव और डॉ. अभिजीत मित्रा, पशुपालन आयुक्त, पशुपालन एवं डेयरी विभाग को एनडीडीबी, आणंद के दौरे के दौरान एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वित सरकार की योजनाओं और इसकी सहायक कंपनियों की गतिविधियों और नई पहलों की प्रगति के बारे में अवगत कराया गया। उन्होंने गांव की डेरी सहकारी समिति, खाद प्रबंधन परियोजना, स्लरी प्रसंस्करण इकाई, काफ प्रयोगशाला और आईडीएमसी लिमिटेड के क्षेत्र दौरे के साथ-साथ अत्याधुनिक ओपीयू-आईवीईपी-ईटी प्रयोगशाला और एनडीडीबी की जीनोमिक प्रयोगशाला का भी दौरा किया

क्षेत्र-आधारित विकास और संरक्षण प्रयासों में सहयोग देने के लिए गोवंशीय नस्लों के प्रजनन क्षेत्रों में वंशावली चयन (PS) कार्यक्रम क्रियान्वित किए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य पशु आबादी मे से श्रेष्ठ पशुओं का चयन करना है और फिर एआई वितरण के लिए बुनियादी ढांचे की स्थापना करके नस्ल की व्यापक पशु आबादी में उनकी आनुवंशिकी का विस्तार करना है। इसके अलावा, पीएस परियोजनाएं आनुवंशिक सुधार कार्यक्रमों के महत्व के बारे में किसानों के बीच जागरूकता फैलाने का प्रयास करती हैं। आरजीएम के अंतर्गत, एनडीडीबी विभिन्न देशी गायों की नस्लों जैसे गावलाओं, हरियाना, कांकरेज, थारपारकर और राठी के साथ-साथ भैंस की नस्लों जैसे बन्नी, जाफराबादी, नीली-रावी और पंढरपुरी को विकसित करने के लिए 9 पीएस परियोजनाओं को कार्यान्वित कर रही है। इन परियोजनाओं को 5 राज्यों में 8 ईआईए के माध्यम से कार्यान्वित किया गया है। वर्ष के दौरान, पीएस परियोजनाओं ने सम्मिलित रूप से 72,453 एआई का निष्पादन किया, दूध रिकॉर्डिंग के अंतर्गत 6,636 पशुओं को शामिल किया और 79 एचजीएम सांड़ खरीदे।

युवा सांड़ों का जीनोमिक चयन

एनडीडीबी ने देशी नस्लों के राष्ट्रीय बोवाइन जीनोमिक सेंटर (NBGC-IB) के अंतर्गत एसएजी, बीडज के सहयोग से आरजीएम के तहत जीनोमिक चयन को बढ़ावा देना निरंतर जारी रखा। जीनोमिक चयन सांड़ों के शीघ्र चयन की सुविधा प्रदान करता है जिससे पीढ़ी अंतराल में कमी आती है और इस प्रकार आनुवंशिक लाभ में वृद्धि होती है। वर्तमान में, जीनोमिक चयन का उपयोग मुर्रा, मेहसाना, एचएफ संकर नस्ल (CBHF), जर्सी संकर नस्ल (CBJY) और गिर जैसे नस्लों के सांड़ों का चयन करने के लिए किया जाता है। इस वर्ष के दौरान, कुल 11,429 सैम्पलों को जीनोटाइप किया गया, जिसमें युवा सांड़ बछड़ों के 1,028 सैम्पल, देश भर के वीर्य केन्द्रों में उपलब्ध प्रजनक सांड़ों के 3,199 सैम्पल और रिकार्डेड मादाओं के 7,202 सैम्पल शामिल हैं।

किसानों के लिए जीनोमिक चयन सेवाएं

प्रगतिशील किसान बछड़ों को अपने फार्म के पशु झुंड में बदलने हेतु आनुवंशिक रूप से श्रेष्ठ मादा बछड़ों का चयन करने के लिए जीनोमिक चयन तकनीक का उपयोग कर सकते हैं। जीनोटाइपिंग की सुविधा का लाभ लेकर इच्छुक किसान शुद्ध नस्ल के पशु की पहचान भी कर सकते हैं। स्थानीय पशु चिकित्सक रक्त / टिश्यू के सैंपलों को संकलित कर एनडीडीबी काफ लिमिटेड को परीक्षण के लिए भेज सकते हैं।

सुनिश्चित गर्भधारण हेतु सेक्स्ड सीमन के उपयोग से उत्पादित आईवीएफ भ्रूण द्वारा शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

आरजीएम के अंतर्गत, यह परियोजना आईवीएफ तकनीकी को स्वीकार्य और किफायती बनाने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य, उच्च उत्पादकता वाले पशुओं को बढ़ावा देकर उत्पादकता में वृद्धि करना और डोनर के रूप में उच्च उत्पादकता वाले पशुओं के उपयोग के माध्यम से किसानों के लिए अतिरिक्त आय के स्रोतों का निर्माण करना है। इस परियोजना का उद्देश्य तीन वर्षों में दो लाख पशुओं को निश्चित रूप से गाभिन करना है। वर्ष के दौरान, परियोजना ने कुल 1,189 ईटी का निष्पादन किया और 147 पशु गाभिन हुए।

सुनिश्चित गर्भधारण हेतु सेक्स सॉर्टेड सीमन द्वारा शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

आरजीएम के अंतर्गत, इस परियोजना का उद्देश्य 90 प्रतिशत शुद्धता के साथ मादा बछड़ों के उत्पादन के लिए सेक्स-सॉर्टेड सीमन के उपयोग को बढ़ावा देना है। इस परियोजना का लक्ष्य 5 वर्षों में 51.63 लाख गर्भधारण सुनिश्चित करना है। 8.77 लाख डोज के क्रयादेश के प्रति कुल 6.11 लाख सेक्स्ड सीमन डोज की आपूर्ति की गई, और क्षेत्र में सेक्स्ड सीमन के उपयोग द्वारा गर्भाधान की शुरूआत की गई।

आनुवांशिक क्षमता में वृद्धि हेतु इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

देशी सीमन सेक्सिंग तकनीक

मादा बछड़े नर बछड़ों की तुलना में अपने उच्च आर्थिक महत्व के कारण वित्तीय दृष्टि से डेरी किसानों के लिए महत्वपूर्ण और लाभप्रद हैं। हालांकि, उच्च शुद्धता के साथ मादा बछड़ों के उत्पादन की वर्तमान तकनीक कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ही सीमित हैं, जो अधिकांश डेरी किसानों के लिए महंगी है। भारतीय डेरी किसानों की आर्थिक सक्षमता में सुधार लाने की प्रतिबद्धता के मद्देनज़र, एनडीडीबी ने सफलतापूर्वक एक देशी गोवंशीय सीमन सेक्सिंग तकनीक विकसित की। यह घरेलू नवाचार भारतीय किसानों के लिए किफायती सेक्स्ड सीमन डोज के प्रावधान को उपयुक्त बनाता है। देशी सेक्सिंग तकनीक का उपयोग करके केंद्रीय हिमिकृत वीर्य उत्पादन और प्रशिक्षण संस्थान (CFSPTI) में सेक्सिंग सुविधा स्थापित करने के उद्देश्य से एक परियोजना को आरजीएम के अंतर्गत अनुमोदित किया। सीएफएसपीटीआई में पहली मशीन की स्थापना से आशाजनक परिणाम दिखे हैं।

प्रजनन गतिविधियों के लिए बुनियादी ढांचे का विकास

नस्ल वृद्धि फार्म: एनडीडीबी ने आरजीएम के अंतर्गत नस्ल वृद्धि फार्म (BMF) परियोजना के कार्यान्वयन की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य सेक्स्ड सीमन और आईवीएफ तकनीक सहित वैज्ञानिक प्रजनन विधियों का उपयोग करके रोगमुक्त, उच्च उत्पादकता युक्त श्रेष्ठ बछिया, गाभिन बछिया या गायों और देशी नस्लों की गायों और भैंसों के उत्पादन हेतु बीएमएफ स्थापित करने के लिए उद्यमिता का विकास करना है। इन पशुओं को किसानों को लागत के आधार पर उपलब्ध कराया जाएगा। वित्त वर्ष 2022-23 में, कुल 71 बीएमएफ प्रस्तावों को स्वीकृति दी गई।

वीर्य उत्पादन में सहयोग: देश के वर्तमान वीर्य केन्द्रों के सहयोग हेतु आरजीएम के अंतर्गत वीर्य केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई। इस परियोजना का उद्देश्य एआई के लिए गुणवत्ता युक्त हिमिकृत वीर्य डोज की उपलब्धता सुनिश्चित करना और वीर्य उत्पादन हेतु बुनियादी ढांचे का विकास करना है। एनडीडीबी वीर्य केन्द्रों की परियोजना का दस्तावेजीकरण करने में मदद करती है। मार्च 2023 तक, एनडीडीबी ने 36 परियोजना प्रस्तावों का आकलन पूरा किया, जिनमें से 34 प्रस्तावों को डीएएचडी द्वारा अनुमोदित किया गया।

पूर्वोत्तर राज्यों में एआई प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना और एआई नेटवर्क की निगरानी: एआई तकनीशियनों के प्रशिक्षण हेतु बुनियादी ढांचे के निर्माण में पूर्वोत्तर राज्यों (NER) को सहयोग देने के लिए एनडीडीबी ने असम पशुधन विकास एजेंसी (ALDA) के अनुरोध पर खानापारा, गुवाहाटी में एआई प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की। वर्ष 2022-23 के दौरान, एनईआरएआई नेटवर्क परियोजना ने कुल 8.04 लाख एआई निष्पादित किए। भारत के ग्रामीण क्षेत्र में 1,292 बहुउद्देश्यीय एआई तकनीशियनों (MAITRI) को तैनात किया और इनाफ के माध्यम से 699 प्रतिभागियों को 31 प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (TOT) कार्यक्रमों के द्वारा प्रशिक्षित किया।

उत्पादकता वृद्धि हेतु नई परियोजनाएं

देश के विभिन्न दूध केन्द्रों पर दूध उत्पादन में वृद्धि हेतु एनडीडीबी ने एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS), जो एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, के माध्यम से बापूधाम दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, प्रोजेक्ट गिर वाराणसी और विदर्भ मराठवाड़ा में उत्पादकता वृद्धि जैसी परियोजनाओं को लागू किया।

इसके अलावा, अन्य कई परियोजनाओं, जैसे श्योपुर मध्य प्रदेश में एआई नेटवर्क की स्थापना, हरित प्रदेश दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, उत्तर प्रदेश, जिला मयूरभंज, जिला यवतमाल और वाशिम, महाराष्ट्र, जिला रायलसीमा, आंध्र प्रदेश और मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में गौ-अभयारण्य की स्थापना को डीएएचडी द्वारा अनुमोदित किया गया। इसके बाद, इन परियोजनाओं के लिए क्षेत्रीय गतिविधियों की शुरूआत की गई।

आनुवंशिकता में सुधार हेतु सहयोग

पशुओं के आनुवंशिकी में सुधार के लिए एनडीडीबी विभिन्न संस्थाओं जैसे- राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (NIAB, हैदराबाद), गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र, गांधीनगर (GBRC), बायफ विकास अनुसंधान फाउंडेशन, (BAIF, उरुली कंचन, पुणे), नेशनल रिसर्च सेंटर ऑन मीट (NRC-Meat), हैदराबाद), AAU आणंद, और कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर के सहयोग से निरंतर अनुसंधान कार्य कर रही है।

जीबीआरसी के सहयोग से जीनोम वाइज एसोसिएशन स्टडीज (GWAS) पर एक संयुक्त सहयोगी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसके अलावा, एनडीडीबी के अधिकारी आईसीएआर के डीएनए और डेरी कैटल मिल्क रिकॉर्डिंग के वर्किंग ग्रुप के सदस्य निरंतर बने हुए हैं।

आहार प्रबंधन

एनडीडीबी उत्पादकता वृद्धि के लिए पशुओं की पूर्ण आनुवंशिक क्षमता का उपयोग करने हेतु पशु आहार से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में सहयोग प्रदान कर रही है।

आहार संतुलन कार्यक्रम

एनडीडीबी का आरबीपी किसानों को आहार परामर्श सेवाएं उनके घर पर उपलब्ध कराकर डेरी पशुओं के वैज्ञानिक आहार खिलाने को बढ़ावा देता है।

आरबीपी के क्रियान्वयन हेतु किफायती एवं सतत् रूप से डेरी पशुओं की उत्पादकता में सुधार लाने के उद्देश्य से एनडीडीबी ने विभिन्न एजेंसियों एवं डेरी सहकारिताएं को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना निरंतर जारी रखा है।

वर्ष 2022-23 के दौरान, आगा खान फाउंडेशन (AKF) जो बिना-लाभ वाली संस्था है, ने एनडीडीबी की तकनीकी सहायता से गुजरात के जूनागढ़, देवभूमि द्वारका, सुरेंद्रनगर जिलों एवं उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में आरबीपी कार्यान्वयन की शुरुआत की। एकेएफ ने गुजरात में 851 किसानों के 1,062 पशुओं और उत्तर प्रदेश में 1,635 किसानों के 1,806 पशुओं को आहार परामर्श प्रदान किया। वैज्ञानिक आहार परामर्श को अपनाने के परिणामस्वरूप फैट और एसएनएफ कंटेंट में सुधार के साथ दूध उत्पादन में प्रतिपशु प्रतिदिन 0.2 लीटर की वृद्धि हुई। इसके अलावा, संतुलित आहार खिलाने से आंत्रीय मीथेन उत्सर्जन (ग्राम/किग्रा दूध) गायों में 10.5 प्रतिशत और भैंस में 14.5 प्रतिशत की कमी आई।

आरबीपी की पहुंच में विस्तार हेतु राज्य पशुपालन विभाग के 247 अधिकारियों ने ए-हेल्प (पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य एवं विस्तार की मान्यता प्राप्त एजेंट) के अंतर्गत आहार संतुलन सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण प्राप्त किए।

आरबीपी के अलावा, एनडीडीबी वैज्ञानिक चारा संरक्षण प्रौद्योगिकियों, चारा उत्पादन के लिए प्रमाणित या सत्यतापूर्वक से लेबल लगे बीजों के उपयोग और पशुओं को आहार खिलाने में सुधार हेतु फसल अवशेष प्रबंधन को भी बढ़ावा दे रही है।

'रेडी-टू-ईट' सम्पूर्ण मिश्रित आहार

डेरी पशुओं के प्रबंधन में भारत में महत्वपूर्ण बदलाव देखने में आया है। कई किसान अपने पशुओं को खिलाने के लिए 'रेडी-टू-ईट' आहार का सुविधाजनक विकल्प चुनते हैं, जो पौषक पदार्थो का संतुलित समाधान हो और जिसमें श्रम और परिचालन लागत में कमी आए। इस दृष्टि से, एनडीडीबी ने साइलेज/हरा चारा आधारित 'रेडी-टू-ईट' पैक्ड सम्पूर्ण मिश्रित आहार (TMR) विकसित किया है जो पर्यावरण के अनुकूल है, डेरी पशुओं की पोषण संबंधी आवश्यकता को पूरा करता है और डेरी किसानों के लिए किफायती है।

पैकेज्ड टीएमआर की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए बिहार के बरौनी दूध संघ में एक अध्ययन आयोजित किया गया। टीएमआर को अलग-अलग समय के अंतराल पर उत्तम गुणवत्ता वाला पाया गया, जिसमें मोल्ड विकास का कोई निशान नहीं था। इसके अलावा, डेरी किसानों के बीच 'रेडी-टू-ईट' टीएमआर की स्वीकार्यता और उत्पादकता एवं डेरी फार्म अर्थशास्त्र पर इसके प्रभाव का पता लगाने के लिए, कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक दूध संघ लिमिटेड के सहयोग से एक क्षेत्र अध्ययन आयोजित किया गया। टीएमआर खिलाने से दूध उत्पादन (11.94 के प्रति 10.71 लीप्रदि) में 12 प्रतिशत और फैट की मात्रा में 11 प्रतिशत (4.24 के प्रति 3.81 प्रतिशत) तक का सुधार हुआ, जिससे किसानों के लिए प्रतिपशु शुद्ध दैनिक आय में 38.0 रुपये की वृद्धि हुई।

सकारात्मक परिणामों से प्रोत्साहित होकर, एनडीडीबी राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM) की वित्तीय सहायता से हरे चारे/साइलेज आधारित 'रेडी-टू-ईट' टीएमआर को बढ़ावा देता है। कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड एनएलएम योजना के अंतर्गत गुजरात में पहला 'रेडी-टू-ईट' टीएमआर संयंत्र स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

गर्मी के मौसम में दूध की गुणवत्ता में सुधार और हीट स्ट्रेस को कम करने के लिए आहार संपूरक

एनडीडीबी ने विभिन्न आहार संपूरक के उत्पादन और प्रचार के लिए डेरी सहकारिताओं को तकनीकी सहायता प्रदान करना निरंतर जारी रखा जिनसे दूध उत्पादन, दूध की गुणवत्ता में सुधार और जलवायु प्रदूषण को कम करने में मदद मिलती है।

वर्ष 2022-23 के दौरान, चार दूध महासंघों/दूध संघों/दूध उत्पादक कंपनियों ने " समृद्धि " के उत्पादन के लिए एनडीडीबी के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए, जो दूध में फैट और एसएनएफ कंटेट को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक आहार संपूरक है। 2022-23 में विभिन्न दूध उत्पादन क्षेत्रों में डेरी किसानों को लगभग 62 मीट्रिक टन समृद्धि आहार संपूरक का उत्पादन कर आपूर्ति की गई। इसके अतिरिक्त, पांच दूध महासंघों/दूध संघों/दूध उत्पादक कंपनियों ने लगभग 2.8 मीट्रिक टन "पशु शीतवर्धक" का उत्पादन कर बिक्री की, जो गर्मी के मौसम के दौरान डेरी पशुओं के हीट स्ट्रेस को कम करने और उत्पादन हानि को कम करने का एक अन्य आहार संपूरक है।

डेरी पशुओं में प्रजनन क्षमता में सुधार हेतु पोषक तत्वों का प्रबंधन

डेरी पशुओं में पोषक तत्वों की कमी से होने वाला बांझपन दूध उत्पादकों के बीच चिंता का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि इससे गर्भाधान दर में कमी आती है, ब्यांत से गाभिन होने तक की अवधि बढ जाती है, और दो ब्यांतो के बीच का अंतर अधिक हो जाने के कारण किसानों को अधिक आर्थिक हानि होती है। ऊर्जा और प्रोटीन में असंतुलन के साथ-साथ महत्वपूर्ण ट्रेस मिनिरल और विटामिनों की कमी के परिणामस्वरूप अक्सर प्रजनन संबंधी विकारों की घटनाओं में वृद्धि होती है, जैसे कि डेरी पशुओं में रिपीट ब्रिडींग (लगातार तीन बार से अधिक असफल होना) और एनोस्ट्रस की घटनाएं। क्षेत्र में इन 50-60 प्रतिशत ये विकार

रेडी टू ईट संपूर्ण मिश्रित आहार बंडलों की पैकिंग

पोषक तत्वों के असंतुलन के कारण उत्पन्न होते हैं, सही अनुपात में महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की आपूर्ति करके इन कमियों को दूर करने से डेरी पशुओं में प्रजनन संबंधी विकारों की घटनाओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

पशु प्रजनन क्षमता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, एनडीडीबी ने अनुकूल प्रजनन के लिए आवश्यक विशिष्ट पोषक तत्व प्रदान करने वाला एक विशेष 'फर्टिलिटी फीड' विकसित किया। महाराष्ट्र के कोल्हापुर दूध संघ में वृहद स्तर पर पायलट अध्ययन किया गया, जहां नियमित स्तर पर चक्र के रूप में स्तनपान कराने वाली संकर नस्ल की गायों (n = 47) और भैंसों (n = 90) की पहचान की गई, जिनका 4 से 6 बार का एआई असफल रहा था। गर्भाशय संक्रमण, हार्मोन का असंतुलन और शारीरिक विकृति से संबद्ध पशु बांझपन की समस्याओं को दूर करने के लिए पशुओं का पर-रेक्टल परीक्षण किया गया। पोषक तत्वों की कमी संबंधी बीमारी के कारण रिपीट ब्रिडींग की घटनाओं वाले पशुओं को अध्ययन के लिए चुना गया। आरंभिक निष्कर्षों से पता चलता है कि इन रिपीट ब्रीडर पशुओं को फर्टिलिटी फीड खिलाने से गायों में 50 से 81 प्रतिशत और भैंसों में 41 से 45 प्रतिशत तक की गर्भाधान दर की पुष्टि हुई। गायों में 1.2 से 1.5 और भैंसों में 1.8 से 1.9 प्रति गर्भाधान एआई पाया गया।

चारा उत्पादन में वृद्धि

डेरी पशुओं की आनुवंशिक क्षमता का उपयोग करने और दूध उत्पादन की लागत में कमी लाने के लिए पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त चारे की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। एनडीडीबी देश में चारा संसाधनों की उपलब्धता में सुधार के लिए हरे चारे के उत्पादन, वैज्ञानिक चारा संरक्षण प्रौद्योगिकियों और फसल अवशेष प्रबंधन के लिए प्रमाणित या सत्यतापूर्वक लेबल लगे बीजों के उपयोग को बढ़ावा दे रही है।

बीज गुणन श्रृंखला का विकास

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) और अन्य कृषि विश्वविद्यालयों से 15 डेरी सहकारिताओं को 12.9 मिलियन टन ब्रीडर बीज (खरीफ में 3.2 मिलियन टन और रबी सीजन में 9.7 मिलियन टन) उपलब्ध कराया। इस कार्यक्रम में, नई अधिसूचित चारा किस्मों को बीज गुणन श्रृंखला में लाया गया, जैसे कृष्णा (लुसर्न), ओएल -1861 (जई), एमएफसी 09-1 (लोबिया), टीएसएफबी 15-8, टीएसएफबी 15-4 (बाजरा) और टीएसएफएम 15-5 (मक्का)। चारा और साइलेज के लिए बीज श्रृंखला में डीएचएम -117, डीएचएम -121 और डीएमआरएच 1308 जैसे उच्च बायोमास मक्का संकर बीजों की शुरूआत की गई। डेरी सहकारिताओं के बीज प्रसंस्करण संयंत्रों द्वारा बीज गुणन के उद्देश्य के लिए फाउंडेशन और प्रमाणित बीजों का उत्पादन करने हेतु इन उन्नत किस्मों के ब्रीडर बीज का उपयोग किया जाता है, जिससे किसानों को चारे की पैदावार में सुधार करने में मदद मिलती है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत गुणवत्तापूर्ण चारा बीज उत्पादन हेतु सहायता

भारत सरकार की केन्द्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत, एनडीडीबी कार्यान्वयन एंजेसी के रूप में विभिन्न डेरी सहकारिताओं को गुणवत्तायुक्त चारा बीज उत्पादन कार्यक्रम की शुरूआत करने में सहयोग प्रदान करती है। 9 डेरी सहकारिताओं द्वारा 7 राज्यों में रबी सीजन (2021-22) के दौरान 896 लाख रुपये मूल्य के 12,112 क्विंटल चारा बीजों का उत्पादन किया गया। खरीफ सीजन (2022-23) में, 4 राज्यों में 8 डेरी सहकारिताओं ने चारा बीज उत्पादन में भाग लिया और 1,160 लाख रूपये मूल्य के लगभग 12,650 क्विंटल चारा बीजों की खरीद की। रबी 2022-23 सीजन के लिए, 10 डेरी सहकारिताओं हेतु 4,986 लाख रुपये की परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जिसमें 7 राज्यों द्वारा 59,225 क्विंटल प्रमाणित बीजों का उत्पादन किया जाना शामिल है। इस प्रकार विभिन्न दूध महासंघों/दूध संघों/दूध उत्पादक कंपनियों के दूध उत्पादकों को उत्पादित गुणवत्तायुक्त चारा बीजों की आपूर्ति की जाती है।

प्रतिभागियों को नए बीज उत्पादन की विधियों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए, किसानों के बीज उत्पादन भूखंडों का दौरा आयोजित किया गया, और पोषक तत्वों / कीटनाशकों के स्प्रे के लिए ड्रोन के उपयोग का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा, आधुनिक बीज प्रसंस्करण संयंत्र के दौरे के दौरान बीज को सुखाने, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और भंडारण हेतु उपयोग की जाने वाली नवीनतम तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

चारा उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर जागरूकता

किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए, चारा प्रदर्शन इकाई (FDU), आणंद में विभिन्न चारा फसलों (वार्षिक और बारहमासी), जैसे चारा बाजरा किस्म (GFB-4), और जई की किस्में (HFO 806, HFO 707, HFO 611 और HFO 607) की नई किस्मों पर प्रदर्शन आयोजित किया गया। साइलेज उत्पादन के लिए मक्का और ज्वार संकर की खेती, हरे चारे के लिए बरसीम और जई की किस्में, हाइब्रिड-नेपियर घास से साइलेज निर्माण और हरे धान की फसल की पराली के संरक्षण पर किसानों के साथ जानकारी साझा की गई।

वर्ष भर के हरा चारा उत्पादन प्रणाली को लोकप्रिय बनाने के लिए, किसानों को बाजरा हाइब्रिड-नेपियर चारा फसल के लगभग 2.77 लाख स्टेम कटिंग की आपूर्ति की गई। इसके अलावा, राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में खेती के लिए आरसीडीएफ, जयपुर को कांटा रहित कैक्टस के 600 क्लैडोड प्रदान किए गए।

हरा चारा- पोषक तत्वों का किफायती स्रोत

'फॉडर प्लस' किसान उत्पादक संस्थाएं

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने "10,000 एफपीओ का गठन और संवर्धन" योजना के अंतर्गत देश भर में 100 'फॉडर प्लस' एफपीओ के गठन और संवर्धन के लिए एनडीडीबी को कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में नामित किया है।

फॉडर प्लस एफपीओ की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हरे चारे, साइलेज, घास, सूखे चारे और अन्य संबंधित उत्पादों की एक संगठित आपूर्ति श्रृंखला बनाकर चारे की कमी को दूर करना है, चारा उत्पादकों को छोटे और सीमांत डेरी किसानों के साथ जोड़ना है। ये फॉडर प्लस एफपीओ या तो संबंधित राज्य के 'सहकारिता अधिनियम' के अंतर्गत या कंपनी अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत होंगे।

एनडीडीबी ने एफपीओ आवंटन प्रक्रिया की शुरूआत की और देश भर के 19 राज्यों को शामिल करते हुए 95 एफपीओ गठन के लिए सीबीबीओ के रूप में 62 एजेंसियों को सूचीबद्ध किया। इन एफपीओ के लिए किसानों को एकत्रित करने, प्रमोटरों की पहचान और पंजीकरण करने की प्रक्रिया की शुरूआत की गई। 2022-23 के दौरान, इस योजना के अंतर्गत पंजीकृत चार एफपीओ ने विभिन्न चारा और पशुपालन गतिविधियों की शुरूआत करने के लिए अपनी व्यावसायिक योजनाओं को विकसित करना आरंभ कर दिया है।

खाली मटर फली साइलेज उत्पादन एवं क्षेत्र प्रदर्शन

एक अनुमान के अनुसार, भारत के संगठित क्षेत्र में प्रतिवर्ष लगभग 1.81 मिलियन टन फल और सब्जी अपशिष्ट का उत्पादित होता है। मटर प्रसंस्करण उद्योग से एक कृषि-औद्योगिक अपशिष्ट खाली मटर फली (EPP), पशुधन के लिए पोषक तत्वों का एक उत्कृष्ट स्रोत हो सकता है, यदि साइलेज निर्माण की तकनीक के द्वारा उसे उचित प्रकार से संरक्षित किया जाए। इस उपाय से देश में चारे की कमी को दूर करने में भी मदद मिलेगी।

एनडीडीबी ने फसल अवशेषों, एडिटिव्स, साइलेज इनोकुलेंट इत्यादि के उपयुक्त अनुपात को शामिल करके इन उच्च नमीयुक्त कंटेट को साइलेज में संरक्षित करने की एक विधि का मानकीकरण किया।

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड और जेएमएफ, रांची के सहयोग से एक पायलट प्रोजेक्ट के माध्यम से खाली मटर फली का साइलेज खिलाने का व्यापक स्तर पर प्रदर्शन किया गया। लगभग 40 टन खाली मटर फली साइलेज का उत्पादन बंडलों के रूप में किया गया और डेरी पशुओं के आहार में इसके समावेश को प्रदर्शित करने के लिए जेएमएफ के चयनित उत्पादक सदस्यों को इसकी आपूर्ति की गई।

पशु स्वास्थ्य में सुधार

पशु स्वास्थ्य डेरी पशुओं के अपेक्षित उत्पादकता प्रदर्शन के उपयोग हेतु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एनडीडीबी ने गायों के समग्र स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि करना निरंतर जारी रखा है।

ब्रूसेलोसिस नियंत्रण

ब्रूसेलोसिस को नियंत्रित करने हेतु मादा गोवंशीय बछड़ों के टीकाकरण के लिए भारत सरकार के राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP) के अनुरूप है। एनडीडीबी का ब्रूसेलोसिस नियंत्रण मॉडल अब वन हेल्थ (OH) दृष्टिकोण पर केंद्रित है, जो मनुष्यों में जूनोसिस की गंभीरता को पहचानता है, जिसका अक्सर कम निदान हो पाता है और जिससे दूध उत्पादन पर असर पडता है। इस मॉडल का उद्देश्य श्री कृष्णा अस्पताल, करमसद के सहयोग से, पशुओं और मनुष्यों में बीमारी के बीच की कड़ी को समझना है। अब तक, 3,226 से अधिक किसानों और पशु स्वास्थ्य कर्मियों का परीक्षण किया गया है। ब्रूसेलोसिस के लक्षणों वाले सभी 131 रोगियों को उपचार किया गया और वे स्वस्थ हो गए है।

परियोजना क्षेत्रों में, एनएडीसीपी के अंतर्गत टीकाकरण के साथ-साथ, प्लेसेंटा के उचित निपटान, जागरूकता निर्माण, संक्रमित परिसर को कीटाणु रहित बनाना, पशु पृथक्करण इत्यादि सहित अन्य आवश्यक नियंत्रक उपायों को समान महत्व दिया जाता है। ये उपाय रोग के प्रसार को रोकने में महत्वपूर्ण हैं।

वैकल्पिक उपायों द्वारा रोग नियंत्रण

वन हेल्थ पर ध्यान केंद्रित करने के साथ समग्र रोग नियंत्रण मॉडल, एंटीमाइक्रोबियल यूसेज (AMU) में कमी लाने और एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) की उत्पत्ति को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसे मानव और पशुओं दोनों को प्रभावित करने वाली एक साइलेंट महामारी माना जाता है। वैकल्पिक उपायों द्वारा रोग नियंत्रण (DCAM) मॉडल वन हेल्थ पर केंद्रित है, जिसमें इथनो वेटनरी मेडिसीन (EVM) के उपयोग द्वारा एएमयू और एएमआर में कमी लाने के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग को तर्कसंगत बनाया जा रहा है।

यह डीसीएएम परियोजना 8 राज्यों (केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, असम, आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश) के 16 दूध संघों/उत्पादक कंपनियों में निरंतर जारी रही। मार्च 2023 तक, परियोजना क्षेत्रों से 8.3 लाख से अधिक ईवीएम उपयोग का दस्तावेजीकरण किया गया। कुल उपचार दर 80 प्रतिशत दर्ज की गई। किसानों ने सामान्य बीमारियों के उपचार के लिए ईवीएम के विकल्प को चुना, जो जानकारी के प्रसार की सफलता का प्रमाण है। इसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए परियोजना क्षेत्रों में पशुओं और मानवों में जूनोटिक प्रभाव के साथ थनैला रोगजनकों की निगरानी की जा रही है।

एनडीडीबी ईवीएम निर्माण सुविधाओं की स्थापना में सहयोग के लिए कुल 30 प्रतिशत परियोजना लागत का अनुदान उपलब्ध करा रही है। इस पहल का उद्देश्य दूध संघों को ईवीएम की अपनी आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने हेतु प्रोत्साहित करना है, यह सुनिश्चित करना कि किसानों को किफायती मूल्य पर उत्तम गुणवत्तायुक्त ईवीएम उपलब्ध हो सके। इसके लिए एनडीडीबी ने 2021-22 में तीन वर्ष की अवधि के लिए 5 करोड़ रुपये आवंटित किए। इस कार्यक्रम के माध्यम से, साबरकांठा और कैरा दूध संघों ने अपने ईवीएम निर्माण संयंत्र स्थापित किए हैं। जिन दूध संघों ने क्षेत्र में वृहद स्तर पर ईवीएम को अपनाया, उन्होंने अपनी दवाओं की खरीद, विशेष रूप से एंटीबायोटिक दवाओं की खरीद को काफी कम कर दिया।

सांड़ उत्पादन क्षेत्रों में जैव सुरक्षा उपाय

रोगमुक्त वीर्य का उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए, एनडीडीबी सांड़ उत्पादन क्षेत्रों और वीर्य केंद्रों को जैव सुरक्षा और रोग नियंत्रण पर नियमित परामर्श प्रदान करती है। आरजीएम के अंतर्गत, उन्हें मजबूत बनाने के लिए जारी प्रयासों के तहत, वीर्य केंद्रों का नियमित रूप से पशु स्वास्थ्य मूल्यांकन भी किया जाता है।

पशुमित्र कॉल सेंटर

किसानों को मार्गदर्शन देने से लेकर पशु उत्पादकता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करने तक, एनडीडीबी का पशुमित्र कॉल सेंटर किसानों का सच्चा साथी है। इस विशेष कॉल सेंटर का उद्देश्य दूध उत्पादन का सुदृढ़ीकरण करना और किसानों को एक सशक्त समुदाय के रूप में प्रतिष्ठित करने में मदद करना है। 2022-23 के दौरान, कॉल सेंटर ने 25 राज्यों के किसानों को वैज्ञानिक डेरी पर जागरूकता निर्माण में सहयोग प्रदान किया।

अनुसंधान एवं विकास

थनैला से ग्रस्त पशु के दूध सैम्पल से पृथक किए गए बैक्टीरिया की पहचान और एंटीबायोटिक ससेप्टिबिलिटी प्रोफ़ाइलिंग

अनुसंधान और विकास प्रयोगशाला ने गोवंशीय रोगों, उनके महामारी विज्ञान, निदान और एप्लिकेशनों पर ध्यान केन्द्रित किया ताकि पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादकता में वृद्धि की जा सके।

एनडीडीबी की अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला ने पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ाने के लिए गोवंशीय रोगों, उनकी महामारी विज्ञान, निदान और एप्लिकेशनों पर ध्यान केंद्रित किया। वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, थनैला, ब्रूसेलोसिस और आईबीआर सहित आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण गोवंशीय रोगों पर जोर दिया गया। भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल किफायती समाधान प्रदान करने के प्रयास के रूप में नैदानिक सैम्पलिंग और परिवहन के वैकल्पिक प्रणालियों का मूल्यांकन किया गया। वन हेल्थ दृष्टिकोण वर्तमान सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंताओं जैसे ब्रूसेलोसिस और एएमआर पर अनुसंधान में लागू किया गया।

प्रयोगशाला और पशु एवं पादप स्वास्थ्य एंजेसी (APHA) के बीच आईबीआर पर एक अंतरराष्ट्रीय ट्विनिंग परियोजना शुरूआत की गई, जो संयुक्त राष्ट्र में स्थित आईबीआर की एक डब्ल्यूओएएच अंतरराष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला है। यह ट्विनिंग प्रोग्राम आईबीआर निदान और महामारी विज्ञान में विशेषज्ञता को बढ़ावा देगा, जिससे क्षेत्र में रोग नियंत्रण प्रयासों में सहायता मिलेगी।

इस प्रयोगशाला ने शीघ्र और सटीक रोग स्क्रीनिंग संबंधी परीक्षणों की अत्याधुनिक प्रणालियों और दक्षताओं को बरकरार रखा है। इसने गोवंशीय प्रजनन और नस्ल वृद्धि कार्यक्रमों के लिए हिमिकृत वीर्य उत्पादन से संबद्ध एजेंसियों को रोग निगरानी और सर्विलांस सहायता प्रदान की है।

थनैला बैक्टीरिया और एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टेंस के लक्षण

डीसीएएम परियोजना के एक भाग के रूप में, प्रतिभागी दूध संघों (MU) और उत्पादक संस्थाओं ने उपनैदानिक / नैदानिक थनैला केस वाले 114 दूध सैम्पल जमा किए। उनसे बैक्टीरिया (n= 181) को अलग कर पहचान की गई और उनके एंटीबायोटिक सस्पेटिबिलिटी प्रोफाइल निर्धारित किए गए। स्टेफिलोकोकस एसपीपी थनैला कारक महत्त्वपूर्ण कॉमन एजेंट है। संबंधित दूध संघों/ उत्पादक कंपनियों को इसके उपचार के लिए सूचित एंटीबायोटिक विकल्पों में से

एंटीबायोग्राम दिए जाने की सलाह दी गई। डेरी पशुओं एवं मानव के बीच मेथिसिलिन-रेसिस्टेंस स्टेफिलोकोकस ऑरियस (MRSA) के ट्रांसमिशन के जोखिम का अध्ययन कर उसे निर्धारित करने के लिए मल्टी-लोकस सीक्वेंस टाइपिंग तकनीक (MLST) को मानकीकृत किया गया क्योंकि एमआरएसए एक बढ़ती वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। एस ऑरियस आइसोलेट्स (n = 32) 20 सिक्वेंस टाइप्स (ST) से संबद्ध है, जिन्हें आगे 5 क्लोनल कॉम्प्लेक्स (CC1, CC5, CC8, CC15 और CC97) में कलस्टर किया गया। इन क्लोनल कॉम्प्लेक्स के सदस्यों को पशुओं और मानव दोनों में संक्रमण का कारण बताया गया है, जो इसके वन हेल्थ महत्व को उजागर करता है। श्री कृष्णा मेडिकल कॉलेज के साथ एक सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रम की शुरूआत की गई ताकि डेरी फार्म (पशुओं, पशु संचालकों और पशु चिकित्सकों) में एस ऑरियस के ट्रांसमिशन की जानकारी प्राप्त की जा सके और वन हेल्थ जोखिमों का निर्धारण किया जा सके। बैक्टीरिया को मानव प्रतिभागियों (पशु चिकित्सकों और पशु संचालकों) से एकत्र किए गए 44 नेजल स्वैब से आइसोलेट किया गया। एस ऑरियस का आइसोलेशन और पहचान तथा उनके एएमआर प्रोफाइल का निर्धारण वर्तमान में जारी है।

आईबीआर पर डब्ल्यूओएएच ट्विनिंग प्रोग्राम की शुरुआत

डब्ल्यूओएएच ट्विनिंग प्रोग्राम संदर्भ प्रयोगशालाओं और उपयुक्त कैंडीडेट प्रयोगशालाओं के बीच सहयोग की परिकल्पना करता है ताकि विश्व में अत्याधुनिक नैदानिक उपकरणों, तकनीकों और अनुसंधान प्रोटोकॉल का व्यापक उपयोग किया जा सके। डब्ल्यूओएएच द्वारा प्रयोगशाला और आईबीआर-एपीएचए, यूके के लिए डब्ल्यूओएएच संदर्भ प्रयोगशाला के बीच आईबीआर पर ट्विनिंग परियोजना को अनुमोदित किया गया। जनवरी 2023 में शुरू किया गया दो वर्ष का ट्विनिंग प्रोग्राम, आईबीआर अनुसंधान पर प्रयोगशाला की तकनीकी दक्षताओं को सुदृढ़ करेगा और आईबीआर निदान और एपीडर्मिलॉजी की एक संदर्भ प्रयोगशाला स्थापित करने हेतु अनुसंधान क्रेडेंशियल्स को समृद्ध करेगा। इन परिणामों से भारत और पड़ोसी देशों में आईबीआर के निदान, एपीडर्मिलाजी और नियंत्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डब्ल्यूओएएच के व्यापक विशेषज्ञता संबंधी उद्देश्य को मजबूती मिलेगी।

ब्रूसेला प्रजातियों की मॉलिकुलर-एपिडर्मिलॉजी

बोवाइन ब्रूसेलोसिस, वन हेल्थ के नजरिये से एक महत्वपूर्ण समस्या है, जो मुख्यत: ब्रूसेला एबॉर्टस का कारण है। प्रयोगशाला द्वारा गाय के 2 झुंडों में किए गए मॉलिकुलर-एपिडर्मिलॉजी के अध्ययन से गायों में बी मेलिटेंसिस (n = 5) संक्रमण का भी पता चला। भारतीय आइसोलेट्स के मल्टी-लोकस वेरिएबल टेंडम रिपीट एनालिसिस (MLVA) से पता चला है कि बी. एबॉर्टस (n = 40) टाइप-सी लिनयेज के 3 जीनोटाइप से संबंधित है, जबकि बी मेलिटेंसिस (n=5) भारत में पूर्वी भूमध्यसागरीय लिनयेज से संबंधित है।

लम्पी त्वचा रोग वायरस का मॉलिकुलर लक्षण

कुछ एलएसडी महामारी से आइसोलेट किए गए सात वायरस मॉलिकुलर लक्षण पाये गए। प्रयोगशाला द्वारा आइसोलेट वायरस (07 नंबर) सहित भारत के सभी एलएसडीवी सिक्वेंस के 2 एपीडर्मिलॉजी संबंधी महत्वपूर्ण लम्पी स्किन रोग वायरस (LSDV) के जीन, आरपीओ30 और जीपीसीआर जीन के आधार पर फाइटोजेनेटिक विश्लेषण से पता चला है कि सब ग्रुप-I (क्लस्टर 1.2) से संबंधित भारतीय स्ट्रेन विश्व में उपलब्ध वैक्सीन स्ट्रेन (सब ग्रुप-II, क्लस्टर 1.1) से अलग है। इस विश्लेषण से पता चला है कि भारत में प्रसारित वायरस वही है जो बांग्लादेश, नेपाल और म्यांमार में महामारी के कारण रिपोर्ट किया गया है। चीन और अन्य दक्षिण एशियाई देशों में महामारी के विपरीत, भारत में कोई रिकॉम्बिनेंट एलएसडीवी स्ट्रेन नहीं पाया गया।

डेरी फार्मों में प्रजनन रोगों की जांच

उत्पादकता से संबंधित समस्याओं का सामना करने वाले चार डेरी पशु झुंडों की जांच एक बहु-आयामी दृष्टिकोण के माध्यम से की गई, जिसमें एक्सपोजर और संक्रामक एजेंटों के ट्रांसमिशन के निर्धारण हेतु सीरोलॉजी (एंटीबॉडी), माइक्रोबायोलॉजी (कल्चरल आइसोलेशन) और मॉलिकुलर विश्लेषण (पॉलीमराइज्ड चेन रिएक्शन (PCR), रियल-टाइम पीसीआर और सिक्वेंसिंग) के आधार पर नैदानिक परीक्षण शामिल हैं। इस जांच में कई संक्रामक एजेंटों की भागीदारी का पता चला जिसमें ब्रूसेला, कॉक्सिएला, बोवाइन अल्फाहर्पीसवायरस -1, ट्राइकोमोनास और क्लैमाइडिया प्रमुख हैं।

हीमो-पैरासिटिक रोगों का प्रसार

रोग के शीघ्र पहचान, वाहक पशुओं का प्रसार एवं उनका निर्धारण टिक-जनित हीमो-पैरासिटिक रोगों के समय पर प्रभावी नियंत्रण उपायों के लिए महत्वपूर्ण है जो डेरी उद्योग को काफी नुकसान पहुंचाते हैं। छ: फार्मों में क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन में पीसीआर एसे द्वारा 578 स्पष्ट रूप से स्वस्थ पशुओं (499 गाय, 79 भैंस) में से 30.45 प्रतिशत (95 प्रतिशत सीआई: 26.84 प्रतिशत - 34.32 प्रतिशत) में हीमो-पैरासिटिक की पहचान की गई। जबकि प्रसार की दर फार्मों (5.77 प्रतिशत से 100 प्रतिशत) में व्यापक स्तर पर से भिन्न - भिन्न थी, यह भैंसों (15.19 प्रतिशत) की तुलना में गायों (32.87 प्रतिशत) में काफी अधिक पाई गई। पैरासिटिक में, एनाप्लाज्मा मार्जिनेल सबसे अधिक (23.70 प्रतिशत) पाया गया। इसके बाद थेलेरिया एनुलेटा (13.67 प्रतिशत), बेबेसिया एसपीपी (1.90 प्रतिशत), और ट्रिपैनोसोमा एसपीपी (1.56 प्रतिशत) पाया गया। 176 पशुओं में से 60 में को-इंफेक्शन पाया गया।

भारत में आईबीआर का प्रसार-सीरोलॉजिकल डेटा का पूर्वव्यापी विश्लेषण

हालांकि, भारत में आईबीआर एक इंडेमिक है, लेकिन प्रसार की वास्तविक सीमा निर्धारित नहीं की गई है। इस बीमारी के प्रसार का निर्धारण करने के लिए 2016-2022 के मध्य देश भर से आईबीआर स्क्रीनिंग के लिए प्राप्त सैम्पलों के सीरोलॉजिकल डेटा का विश्लेषण किया गया। पूर्वव्यापी विश्लेषण में 13 राज्यों के 29,614 प्रत्येक गायों और भैंसों के परिणाम शामिल हैं। आईबीआर का सम्पूर्ण प्रसार 33.41 प्रतिशत आंका गया है, जिसमें गायों (28.4 प्रतिशत) (पी<0.001) की तुलना में भैंसों (40.5 प्रतिशत) में सीरो पॉजिटिविटी की दर काफी अधिक थी। बछड़ों (पी<0.001) की तुलना में वयस्क गायों में और संकर नस्ल (20.5 प्रतिशत) या विदेशी नस्ल की गायों (20 प्रतिशत) की तुलना में देशी नस्ल की गायों में (38.9 प्रतिशत) अधिक प्रसार पाया गया।

आईबीआर की पहचान करने के लिए तरल नाइट्रोजन शिपमेंट के विकल्प के रूप में हिमिकृत वीर्य डोज के कोल्ड चेन शिपमेंट की प्रभावशीलता का मूल्यांकन

डीएचडी द्वारा हिमिकृत वीर्य डोज (FSD) उत्पादन के लिए न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल (MSP) के दिशानिर्देश मैनुअल में बीओएचवी -1 के लिए आईबीआर सीरोपॉजिटिव सांड़ से उत्पादित एफएसडी की जांच की बात की गई है। केवल बीओएचवी-1 के लिए निगेटिव एफएसडी को एआई के लिए अनुशंसित किया जाता है। वर्तमान में वीर्य केंद्र तरल नाइट्रोजन (Ln2) की स्क्रीनिंग के लिए एफएसडी का परिवहन करते हैं जो श्रमसाध्य एवं महंगा है और इसमें हैंडलिंग तथा परिवहन के दौरान बायो हैजार्ड का जोखिम होता है। इसलिए, प्रयोगशाला ने कोल्ड-चेन स्थितियों (जेल पैक्ड स्टायरोफोम बाक्स में 2-8 डिग्री सेल्सियस) के अंतर्गत एफएसडी शिपिंग की संभावना का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन में 4-25 डिग्री सेल्सियस पर संग्रहीत एफएसडी सैम्पलों की रियल टाईम पीसीआर स्क्रीनिंग का एक सिमुलेटेड, नियंत्रित प्रयोग किया गया और फिर एक क्षेत्र-परीक्षण किया गया जिसमें 6 अलग-अलग वीर्य केंद्रो से एफएसडी को कोल्ड चेन के अंतर्गत भेज दिया गया। एलएन$_2$ के अंतर्गत और कोल्ड-चेन के अंतर्गत भेजे गए 167 सैम्पलों के परिणाम 6 दिनों के भीतर प्रयोगशाला में प्राप्त होने पर ही तुलना करने योग्य पाए गए और स्टायरोफोम बाक्स के अंदर का तापमान 15 डिग्री सेल्सियस ≤ बनाए रखा गया।

सेक्स्ड सीमन परीक्षण

इस वर्ष, शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत सेक्स्ड और सेक्स सॉर्टेड सीमन (ABIP-SS) के माध्यम से प्रजनन के लिए सेक्स्ड (मेल स्पर्म किल्ड) और सेक्स -सॉर्टेड (रिमूव्ड मेल स्पर्म) हिमिकृत वीर्य डोजों (FSD) के सत्यापन हेतु एक मजबूत परीक्षण को मानकीकृत और अनुकूलित कर उसकी शुरूआत की गई। यह तकनीक नए डिजिटल पीसीआर प्लेटफॉर्म पर आधारित है और प्रयोगशाला ने 2022-23 में सूचीबद्ध निर्माताओं के सेक्स्ड और सेक्स-सॉर्टेड नर और मादा स्पर्म के सांकेतिक अनुपात को सत्यापित करने के लिए लगभग 350 एफएसडी बैचों की जांच की है।

गोवंशीय रोगों की सीरोलॉजिकल स्क्रीनिंग के लिए एलिसा का प्रदर्शन करते हुए एक शोधकर्ता

परीक्षणों का सारांश निम्नानुसार है -

क्र. सं.	रोग	परीक्षण	परीक्षण किए गए सैम्पलो की संख्या	सैम्पल के प्रकार	प्रजातियां
1.	ब्रूसेलोसिस	एंटीबॉडी एलिसा	19941	सीरम	गाय और भैंस
2	आईबीआर	एंटीबॉडी एलिसा (gB ELISA)	17826	सीरम	गाय और भैंस
3		आईबीआर-डीआईवीए (gE ELISA)	271	सीरम	गाय और भैंस
4		रियल-टाइम पीसीआर	18161	हिमिकृत वीर्य	आईबीआर सीरोपॉजिटिव सांड़
5	बीवीडी	एंटीजन एलिसा	7900	सीरम	गाय और भैंस
		आरटी-पीसीआर	117	सीरम	बछड़े <6 महीने की उम्र के
6	जेडी	एलिसा	103	सीरम	गाय और भैंस
7	एंजूटिक गोवंशीय ल्यूकोसिस	एलिसा	436	सीरम	गाय और भैंस
8	बीजीसी	इन विट्रो कल्चर	896	प्रीपुशियल वॉश	गाय और भैंस
9	ट्राइकोमोनोसिस	इन विट्रो कल्चर	896	प्रीपुशियल वॉश	गाय और भैंस

गोवंशीय रोगो की निगरानी

प्रयोगशाला ने एफएसडी उत्पादन के लिए एमएसपी में सूचीबद्ध रोगों की निगरानी के लिए वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान 15 राज्यों की 61 एजेंसियों के कुल 66,547 सैम्पलों की जांच की।

संक्रामक रोगों के निदान के लिए सीरम सैम्पल शिपमेंट के वैकल्पिक रूप में फिल्टर पेपर का मूल्यांकन

फ़िल्टर-पेपर (FP) बेस्ड मैट्रिसेस - नोबुटो फ़िल्टर पेपर (Nobuto FP) और व्हाटमैन ग्रेड III फ़िल्टर पेपर (Whatmann FP) का मूल्यांकन एम्बिएंट तापमान पर गोवंशीय सेरा और शिपमेंट के संग्रह के लिए किया गया। सीरम सैम्पलों की पहचान करने और सूखे सीरम स्पॉट से सीरम प्राप्त करने के प्रोटोकॉल को अनुकूलित किया गया। नोबुटो एफपी और व्हाटमैन एफपी पर ज्ञात स्थिति वाले 314 सैम्पलों के एंजाइम लिंक्ड इमोनोसॉर्बेंट एसे (ELISA) के परिणाम सामान्य तरल सेरा के साथ किए गए संबंधित एलिसा परिणामों से मेल खाते हैं। इसके अलावा, 37 डिग्री सेल्सियस पर एफपी में सेरा की इंटीग्रिटी 30 दिनों तक बरकरार पाई गई।

गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली और दक्षता परीक्षण (PT)

प्रयोगशाला गोवंशीय रोग नैदानिक परीक्षणों (आईएसओ 9001:2015 और आईएसओ / आईईसी 17025:2017) के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों की गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों को बनाए रखती है। आईएसओ 9001 (TUV Nord) और आईएसओ 17025 (NABL) की मान्यता प्राप्त एजेंसियों ने गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों की अपनी वार्षिक निगरानी की और संबंधित मानकों के लिए सिस्टम की पूर्ण अनुरूपता के बारे में सूचित किया। रोग परीक्षण विधियों की उपयुक्तता और दक्षता पशु रोग निदान के लिए अंतर्राष्ट्रीय पीटी प्रोवाइडर, वेटकास, एपीएचए, यूके के अंतरराष्ट्रीय पीटी कार्यक्रम द्वारा समय-समय पर मूल्यांकन किया। प्रयोगशाला को आईबीआर, जॉन रोग (Antibody detection) और बीवीडी (Antigen detection) के लिए पीटी प्रोग्राम्स में शामिल किया गया। पीटी परिणाम पीटी प्रोवाइडर के परिणामों के साथ 100 प्रतिशत मेल खाते हैं।

गौ निगरानी प्रणाली पर आधारित कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग

डेरी विकसित देशों में सेंसर आधारित गौ निगरानी प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है, जिसने बड़े फार्मों के प्रबंधन में स्वचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसी प्रणालियाँ भारत में छोटे किसानों की डेरी के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि वे नैदानिक लक्षणों के प्रकट होने से पहले ही मवेशियों के इस्ट्रस और बीमारी की सटीक पहचान करने में मदद करती हैं। यह प्रणाली एआई की सफलता दर में सुधार लाने और उप नैदानिक लक्षणों की पहचान करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, मुख्य रूप से बड़े फार्म विशिष्ट डिजाइन और उच्च लागत के कारण भारत में यह प्रणाली छोटे धारकों की डेरी की पहुंच से बाहर है। चूंकि ये प्रणालियाँ विदेशी गायों पर विकसित की गई हैं, इसलिए देशी गायों में समान सटीकता प्रदर्शित नहीं करती हैं। ऐसी प्रणाली की उपयोगिता को देखते हुए, एनडीडीबी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग (AI- LM) प्लेटफॉर्म पर आधारित देशी गायों की एक किफायती प्रणाली विकसित करने की शुरुआत की है। इस

प्रणाली में सेंसर माउंटेड कॉलर और एक गेटवे शामिल है, जो देशी गायों के व्यवहार पर विकसित एल्गोरिदम एप्लिकेशन है। यह प्रणाली 5 किमी के दायरे तक कवरेज प्रदान करती है और एक गेटवे पर 1,000 कॉलर तक कनेक्ट कर सकती है।

प्रारंभिक परीक्षण ने देशी और विदेशी संकर गायों के लिए ≥90% की इस्ट्रस का पता लगाने की दक्षता प्रदान की। देशी रूप से विकसित प्रणाली व्यावसायिक रूप से उपलब्ध प्रौद्योगिकियों की तुलना में किफायती समाधान है, जो उसे भारतीय डेरी किसानों के लिए किफायती बनाती है। प्रणाली किसान के मोबाइल पर अलर्ट भेजती है। भारत में स्मार्ट डेरी हेतु एक आशाजनक समाधान प्रदान करने के लिए आगे के परीक्षण जारी हैं।

ओवम पिक-अप, इन विट्रो भ्रूण उत्पादन और भ्रूण प्रत्यारोपण

चूंकि आईवीएफ भ्रूण के उत्पादन की लागत लगभग 60 प्रतिशत मीडिया द्वारा वहन की जाती है, इसलिए एनडीडीबी ने मीडिया के आयात पर निर्भरता को दूर करने के लिए आईवीईपी के लिए देशी मीडिया विकसित करने के अपने प्रयास निरंतर जारी रखे और इस प्रकार आईवीएफ भ्रूण के उत्पादन की लागत को कम किया। वर्ष के दौरान, एनडीडीबी ने ओवम पिक-अप, इन-विट्रो मेचुरेशन, इन-विट्रो कल्चर और एम्ब्रायो मीडिया का सफलतापूर्वक उत्पादन किया और उत्साहजनक परिणामों के साथ परीक्षण का पहला दौर सफलतापूर्वक पूरा किया। आयातित इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन, एम्ब्रायो फ्रीजिंग और एम्ब्रायो विट्रीफिकेशन मीडिया को बदलने के लिए आगे के परीक्षण प्रगति पर हैं।

दूध में एफ्लाटॉक्सिन एम1 को कम करने के लिए एक किफायती टॉक्सिन बाइंडर के रूप में बेंटोनाइट

डेरी पशुओं के आहार संपूरक के लिए एक किफायती टॉक्सिन बाइंडर डिजाइन हेतु एनडीडीबी ने दूध में एफ्लाटॉक्सिन एम1 कॉन्टेमिनेशन को कम करने के लिए टॉक्सिन बाइंडर के रूप में बेंटोनाइट के उपयोग पर अनेक प्रयोग (इन विट्रो और इन विवो) किए। इन विट्रो अध्ययनों से यह पता चला है कि बेंटोनाइट की शुद्ध बांइडिंग प्रभावकारिता 90 प्रतिशत से अधिक है। एफ्लाटॉक्सिन एम1 पर व्यावसायिक रूप से उपलब्ध बेंटोनाइट को खिलाने के प्रभाव को सत्यापित करने के लिए, बनासकांठा दूध संघ में 30 संकर गायों और भैंसों का

ओवम पिक-अप का उपयोग करके मादा दुधारू पशुओं को कई गुना बढ़ाया जा सकता है

क्षेत्र अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह पता चला है कि मुख्य आहार के रूप में 100 ग्राम बेंटोनाइट को खिलाने से एफ्लाटॉक्सिन एम1 के स्तर में काफी कमी (>60 प्रतिशत) आई है।

नई किस्मों/इंट्री के मूल्यांकन पर चारा अनुसंधान परीक्षण

भाकृअनुप-आईजीएफआरआई, झांसी और आईसीएआर-आईआईएमआर, लुधियाना के सहयोग से 2022-23 में मक्का और बरसीम चारा फसलों पर अनुसंधान परीक्षण किए गए। खरीफ के मौसम के दौरान, 5 चारा मक्का किस्मों के साथ एक परीक्षण किया गया, जिनकी कटाई तीन चरणों (दूध, डो एवं डेंट) में की गई। इस परीक्षण में, डेंट चरण पर मक्का किस्म के अफ्रीकी टाल की कटाई की गई जिसमें हरे चारे का अधिकतम उत्पादन (29.11 टन /हेक्टेयर) और शुष्क पदार्थ का उत्पादन (8.15 टन / हेक्टेयर) किया गया। 5 मक्का किस्मों में हरे चारे का उत्पादन, शुष्क पदार्थ उत्पादन और शुष्क पदार्थ की मात्रा दूध से डेंट स्टेज तक क्रमशः 23.98-21.86 टन/हेक्टेयर, 5.75-6.19 टन/हेक्टेयर और 24.17-28.11 प्रतिशत के बीच रहा। डेंट स्टेज पर दर्ज साइलेज पीएच 4.33-4.43 रहा। तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ शुष्क पदार्थ प्रतिशत के आधार पर, शुष्क पदार्थ उत्पादन और पीएच, डेंट स्टेज को चारा प्रकार मक्का किस्मों में शामिल करने हेतु अधिक उपयुक्त पाया गया।

खरीफ परीक्षण के दौरान, आईसीएआर-आईआईएमआर ने हरे चारे के उत्पादन और साइलेज पीएच के मूल्यांकन के लिए लगभग 76 नए मक्का संकर किस्में उपलब्ध कराई। इस परीक्षण से, 9 मक्का संकर किस्मों की पहचान की गई जिसने अगले सीजन में आगे के मूल्यांकन के लिए 25 टन प्रति हेक्टेयर, डीएमवाई >6 टन प्रति हेक्टेयर और साइलेज पीएच 4.2 से नीचे > हरे चारे का उत्पादन दर्ज की। रबी 2022-23 सीजन में, आईसीएआर-आईआईएमआर के सहयोग से चारा उत्पादन और साइलेज के लिए मक्का संकर की 28 नई किस्मों का मूल्यांकन करने हेतु एक परीक्षण आयोजित किया गया। उसी रबी सीजन में, एक अन्य परीक्षण में, पहले पहचाने गए 14 मक्का संकर किस्मों की चारा उत्पादन और साइलेज डेटा रिकॉर्ड करने के लिए बुआई की गई, ताकि सर्वोत्तम पत्तेदार प्रकार के मक्का संकर किस्मों का चयन किया जा सके। हरे चारे का उत्पादन और वृद्धि मापदंडों का आकलन करने के लिए बरसीम किस्मों की क्रमशः 7 और 6 नई किस्मों के साथ आईजीएफआरआई, एआईसीआरपी के सहयोग से चारा फसल परियोजना पर, एवीटीबी -1 और एवीटीबी -2 परीक्षण की शुरूआत की गई।

विशेष स्लरी टैंकर व एप्लिकेटर का विकास

खाद प्रबंधन पहल के एक भाग के रूप में, एनडीडीबी ने एक समर्पित स्लरी टैंकर व एप्लिकेटर के विकास भी शुरूआत की है, जिसे मिट्टी में सीधे स्लरी को बहाने और उपयोग में लाये जाने के दोहरे उद्देश्य को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

समर्पित स्लरी टैंकर व एप्लिकेटर के उपयोग से, अब गांवों में छोटे बायोगैस संयंत्रों के क्लस्टर से स्लरी का परिवहन करना आसान हो गया है। इससे स्लरी की प्रभावकारिता में भी सुधार हुआ है क्योंकि यह स्लरी को सीधे मिट्टी में डालने में सहयोग करता है जिससे पोषक तत्वों की कम हानि होती है और पौधों द्वारा पोषक तत्व ग्रहण में सुधार होता है।

कुशल खाद प्रबंधन के लिए गोबर और बायोगैस स्लरी की परीक्षण विधि को स्थापित करना

एनडीडीबी गोबर और स्लरी की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए पूरे देश में खाद प्रबंधन पहल को वृहत स्तर पर बढ़ावा दे रही है। इससे उत्तम गुणवत्ता के बायोगैस और जैविक उर्वरकों का मानकीकरण और उत्पादन सुनिश्चित होगा। इसलिए, एनडीडीबी ने गोबर और स्लरी के लिए गुणवत्ता मानकों के विकास की शुरूआत की। फील्ड स्तर पर गोबर एवं स्लरी के आसान परीक्षण हेतु फील्ड पैरामीटर निर्धारित किए गए। गोबर और बायोगैस स्लरी के क्षेत्र मापदंडों और आंतरिक पोषक तत्व सामग्री/प्रयोगशाला मापदंडों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए आगे वैज्ञानिक प्रयोग किए गए।

इन प्रयोगों के आधार पर, लघु धारक दूध उत्पादन प्रणाली हेतु गोबर और बायोगैस स्लरी के संकलन के लिए क्षेत्र परीक्षण पैरामीटर और गुणवत्ता से संबद्ध विशेष मूल्य निर्धारण तंत्र विकसित किए गए। गोबर और बायोगैस स्लरी के संकलन हेतु मानक संचालन प्रक्रियाएं (SOP) भी विकसित की गई हैं ताकि क्षेत्र की स्थिति के अनुरूप इसे आसानी से अमल में लाया जा सके।

स्लरी टैंकर व एप्लिकेटर

Tetra Pak

अत्याधुनिक डेरी अवसंरचना का विकास

डेरी सहकारिताओं द्वारा संकलित दूध को प्रोसेस करने के लिए, एनडीडीबी ने नए प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे को डिजाइन करने, उसकी योजना बनाने, निष्पादित करने और कमिशनिंग करने एवं डेरी सहकारिताओं की वर्तमान सुविधाओं का विस्तार करने में सहायता प्रदान की।

एनडीडीबी ने विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता, स्थिरता, और समग्र उत्कृष्टता बढ़ाने के उद्देश्य से कई परियोजनाओं तथा नवाचारों का क्रियान्वयन किया जो डेरी क्षेत्र में प्रौद्योगिकी और सर्वश्रेष्ठ विधाओं के प्रयोग में सबसे आगे बने रहने के प्रति एनडीडीबी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

- **प्रयोगशाला विकास:** एनडीडीबी ने होटवार डेरी, रांची में कठिन गुड लैबोरेटरी प्रैक्टिस (जीएलपी) मानकों का पालन करते हुए एक राज्य केन्द्रीय प्रयोगशाला की स्थापना की और जीबीआरसी, गांधीनगर में एक अत्याधुनिक BSL4 प्रयोगशाला की संकल्पना की।

- **जल संरक्षण एवं नवाचार प्रौद्योगिकियां :** नवीन जल संरक्षण रणनीतियों में evaporative कंडेनसर हेतु स्वचालित टीडीएस कंट्रोल सिस्टम और फालिंग फिल्म चिलर प्रौद्योगिकी को अपनाना शामिल था। इस प्रणाली को मेगा डेरी हैदराबाद, साबर चीज़ और साबर रोहतक सहित कई परियोजनाओं में सफल कार्यान्वयन मिला। साथ ही साथ, पानी के तापमान में उच्च उतार-चढ़ाव का मुक़ाबला करने के लिए फालिंग फिल्म चिलर प्रौद्योगिकी की प्रशीतन सन्यंत्रों में प्रयोग की शुरुआत की गयी। यह जालंधर, वामुल और हैदराबाद में स्थित परियोजनाओं में सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया।

- **आधुनिक संरचना संरक्षण:** साबर चीज और व्हे ड्राईंग संयंत्र भवन की सुरक्षा के लिए एक आधुनिक संरचना प्रकाश संरक्षण प्रणाली और अर्थिंग समाधान की शुरुआत की गयी जिससे कई प्रकार के लाभ मिलेंगे।

- **उन्नत सुखाने (ड्राईंग) की क्षमता:** वाराणसी में बायोगैस संयंत्र में यूवी पॉलीथीन शीट का उपयोग (पॉलीहाउस) डाइजैस्टेड स्लरी को जल्दी सुखाने के लिए किया जा रहा है, जिससे धूप में स्लरी को सुखाने के पारंपरिक विधियों की तुलना में बेहतर परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

- **एक्सट्रूडर प्रौद्योगिकी के साथ फॉस्फेट युक्त जैविक खाद संयंत्र**: वाराणसी में एक 30 मीटप्रदि प्रोम प्लांट की स्थापना में एक्सट्रूडर तकनीक का उपयोग डाइजैस्टेड स्लरी को प्रसंस्कृत करने के लिए किया गया ताकि फॉस्फेट युक्त जैविक खाद (PROM) का स्थायी रूप से उत्पादन हो सके।

इसके अलावा, एनडीडीबी ने पशु आहार संयंत्रों, जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाओं (BSL), पशु टीका उत्पादन सुविधाओं और हिमिकृत वीर्य केंद्रों की स्थापना में योगदान दिया।

वर्ष 2022-23 में, देश भर में विभिन्न स्थानों पर 11 अभियांत्रिकी परियोजनाओं को पूरा किया गया, जिसमें 6 डेरी परियोजनाएं, 2 पशु आहार संयंत्र, 1 परीक्षण प्रयोगशाला, 1 एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (ETP) और 1 बायोगैस संयंत्र शामिल हैं, जिसमें ऊर्जा-दक्ष और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों एवं डिजाइनों को शामिल किया गया है।

मेगा डेरी, हैदराबाद

एनडीडीबी ने हैदराबाद के बाहरी इलाके में 5 लालीप्रदि (8 लालीप्रदि तक विस्तार योग्य) नए ग्रीन फील्ड स्वचालित मेगा डेरी प्लांट की स्थापना के लिए तेलंगाना राज्य डेरी विकास सहकारी संघ लिमिटेड (TSDDCFL) को डिजाइन, तकनीकी और प्रबंधन परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराई। इसका कुल परियोजना परिव्यय 246 करोड़ रुपये है, जो डीआईडीएफ के अंतर्गत आंशिक रूप से वित्त पोषित (144.5 करोड रूपये) है, और शेष राशि टीएसडीडीसीएफएल और तेलंगाना राज्य सरकार द्वारा जारी की गई है।

स्वचालित फर्मन्टेड उत्पाद संयंत्र, जालंधर, पंजाब

पंजाब के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा मार्च 2023 में 1.25 लाख लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) की क्षमता वाले स्वचालित फर्मन्टेड उत्पाद संयंत्र का उद्घाटन किया गया। संयंत्र ने प्रक्रिया एवं उपयोगिता के संदर्भ में पर्यवेक्षी नियंत्रण एवं डेटा अधिग्रहण (SCADA) पर आधारित स्वचालित संचालनों (automated operations) को क्रियान्वित किया जो खाद्य सुरक्षा, उत्पाद की गुणवत्ता एवं किफायती उत्पादन में सुधार और ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करता है। इन सुधारों से बिक्री की मात्रा में वृद्धि और डेरी किसानों को उचित मूल्य मिलने की संभावना है।

तरल दूध और मक्खन निर्माण संयंत्र लुधियाना, पंजाब

पहला और सबसे बड़ा पूर्णतः स्वचालित तरल दूध प्रसंस्करण (LMP) और मक्खन निर्माण संयंत्र, पंजाब में स्थापित किया गया, जिसमें 9 लाख लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) की तरल दूध प्रसंस्करण क्षमता और 10 मीट्रिक टन प्रतिदिन (मीटप्रदि) की मक्खन उत्पादन क्षमता शामिल है। उन्नत डेरी लाइब्रेरी का उपयोग कर इस स्वचालन संयंत्र का निर्माण किया गया है, जो ऊर्जा की खपत तथा रिकवरी के संबंधित संयंत्र के निष्पादन को बढाता है। पंजाब के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा औपचारिक रूप से अक्तूबर 2022 में संयंत्र का उद्घाटन किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, बायो-गैस आधारित बिजली उत्पादन परियोजना की आधारशिला रखते हुए

स्वचालित डेरी संयंत्र, भीलवाड़ा, राजस्थान

राजस्थान में अप्रैल 2022 से 5 लाख लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) क्षमता वाले स्वचालित एलएमपी संयंत्र में व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया गया। इस संयंत्र के डिज़ाइन में हीट रिकवरी की विभिन्न सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो उपयोगिता खपत (utility consumption) को कम करती है और साथ-साथ रिजनरेशन दक्षता में सुधार लाती है। इस परियोजना के आरंभ होने के साथ ही, राज्य में डेरी अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण हुआ है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार आया है और संचालन किफायती हो गया है।

मध्य प्रदेश में विस्तार परियोजना और झारखंड में डेरी संयंत्र

सागर, मध्य प्रदेश में स्थापित 1 लाख लीटर प्रतिदिन (लालीप्रदि) स्वचालित डेरी संयंत्र का वर्ष 2022-23 में विस्तार किया गया, जिसमें फ्लाई-ऐश के ईंटों का उपयोग, वर्षा जल संचयन और अन्य उल्लेखनीय विशेषताएं शामिल है।

पलामू, झारखंड में 50 हजार लीटर प्रतिदिन (हलीप्रदि) की क्षमता वाले डेरी संयंत्र का विस्तार किया गया। इस विस्तार के डिज़ाइन से भविष्य की संभावित प्रसंस्करण क्षमता को 100 हजार लीटर प्रतिदिन (हलीप्रदि) तक बढ़ाया जा सकता है। स्किड-बेस्ड स्वचालन डिज़ाइन इस संयंत्र की प्रक्रियागत स्वचालन को संभव और किफायती बनाता है।

आइसक्रीम संयंत्र मदुरै, तमिलनाडु

मदुरै, तमिलनाडु में एनडीडीबी ने मई 2022 में ग्रीन फील्ड आइसक्रीम संयंत्र स्थापित किया है जिसकी क्षमता 10,000 लीटर प्रति शिफ्ट है। इस सुविधा में आधुनिक प्रक्रिया तकनीक और ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग किया गया है जो आइसक्रीम कप, कोन, कुल्फी, बल्क पैक आदि के निर्माण में सक्षम है।

बायोगैस संयंत्र, वाराणसी

वाराणसी दूध संघ की स्टीम और विद्युत ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, वाराणसी में अपनी तरह का पहला 4,000 क्यूबिक मीटर का बायोगैस संयंत्र स्थापित किया गया। प्लांट की आधारशिला 23 दिसंबर 2021 को माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखी गई थी। बायोगैस प्लांट में प्रतिदिन 100 मीट्रिक टन गोबर का उपयोग किया जाएगा। उत्पन्न बायोगैस का उपयोग मुख्य रूप से प्लांट के बॉयलर में स्टीम उत्पन्न करने के लिए किया जाएगा। अधिशेष गैस का उपयोग जनरेटर के माध्यम से बिजली उत्पन्न करने के लिए किया जाएगा। बायोगैस से उत्पादित स्लरी का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए, फॉस्फेट रिच ऑर्गेनिक खाद (PROM) निर्माण संयंत्र की 30 मीट्रिक टन प्रतिदिन क्षमता भी स्थापित की गई है।

पशु आहार संयंत्र, असम एवं पंजाब

वर्ष 2022-23 के दौरान, एनडीडीबी ने डेरी से संबद्ध सेवाओं में सहयोग देने और उसका सुदृढ़ीकरण करने के अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखा। इन्हीं प्रयासों के एक भाग के रूप में, चांगसारी, असम में 50 मीटप्रदि के बाईपास प्रोटीन पशु आहार संयंत्र और 12 मीटप्रदि खनिज मिश्रण संयंत्र की शुरुआत की गई। इसके अलावा, पंजाब के घनिया-के-बांगर में 50 मीटप्रदि के बाईपास प्रोटीन संयंत्र की कमिशनिंग की गई। इन संयंत्रों से संबद्ध राज्यों और आस-पास क्षेत्रों में विभिन्न पशु आहार संयंत्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

डेरी अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना- एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट, गुजरात

वर्ष 2022-2023 में, हिम्मतनगर, गुजरात में 20 लालीप्रदि की क्षमता वाला अत्याधुनिक एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (ETP) स्थापित किया गया। संयंत्र में प्रयुक्त सतत् स्टिर्ड टैंक रिएक्टर (CSTR) तकनीक एवं एनोरोबिक ट्रीटमेंट के उपयोग के कारण यह भारतीय सहकारी डेरी उद्योग में सीएसटीआर तकनीक का सबसे विशाल क्षमता वाला संयंत्र बन गया है। इस संयंत्र की कमिशनिंग नवंबर 2022 में की गई।

चालू परियोजनाएं

परियोजना	क्षमता	स्थान
उत्तरी क्षेत्र		
वर्तमान एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट (ETP) का सुदृढ़ीकरण और विस्तार	20 लालीप्रदि तक विस्तार	रोहतक, हरियाणा
पश्चिमी क्षेत्र		
चीज़ एवं व्हे ड्राइंग प्लांट	20 मीटप्रदि चेडर, 10 मीटप्रदि मोज़ेरेला, 16 मीटप्रदि प्रोसेस्ड चीज़ और 45 मीटप्रदि व्हे ड्राइंग	हिम्मतनगर, गुजरात
इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आणंद (इरमा) में बहुमंजिला छात्रावास की अवसंरचना निर्माण परियोजना	126 सिंगल ऑकुपेन्सी रूम	आणंद, गुजरात
पशु आहार संयंत्र (सिविल कार्य)	800 मीटप्रदि, 1600 मीटप्रदि विस्तार योग्य	हिम्मतनगर, गुजरात
नया डेरी संयंत्र	50 हलीप्रदि, 100 हलीप्रदि विस्तार योग्य	राजसमंद, राजस्थान
सांड़ पालन केंद्र की स्थापना	180 पशु	मलारपुरा, खेड़ा, गुजरात
साबरमती आश्रम गौशाला में अवसंरचना निर्माण परियोजना	-	बीडज, गुजरात
एनसीडीएफआई के लिए अवसंरचना निर्माण परियोजना	--	आणंद, गुजरात
डेरी अपशिष्ट संयंत्र हेतु तृतीयक उपचार संयंत्र	800 हलीप्रदि	जयपुर, राजस्थान
दक्षिणी क्षेत्र		
नया स्वचालित डेरी संयंत्र, एसेप्टिक पैक्ड दूध एवं आइसक्रीम संयंत्र	500 हलीप्रदि से 800 हलीप्रदि एलएमपी, 100 हलीप्रदि यूएचटी और 5 हलीप्रदि आइसक्रीम	हैदराबाद, तेलंगाना
जीएमपी वेयर हाउस	(अतिरिक्त कार्य) – पीएच -।।	आईवीपीएम, रानीपेट, तमिलनाडु
पूर्वी क्षेत्र		
किण्वित दूध उत्पाद और स्वदेशी मिठाई संयंत्र	207 हलीप्रदि	बरौनी, बिहार
संयंत्र की उपयोगिता सेवाओं का सुदृढ़ीकरण	--	बरौनी, बिहार
तरल दूध संयंत्र का विस्तार	60 हलीप्रदि से 150 हलीप्रदि तक	गुवाहाटी, असम
एआई प्रशिक्षण केंद्र	--	गुवाहाटी, असम
5 लालीप्रदि के स्वचालित डेरी संयंत्र में अतिरिक्त कार्य	--	अरिलो-गोविंदपुर, ओडिशा

तकनीकी परामर्श सेवाएं

परियोजना	क्षमता	स्थान
पशु आहार संयंत्र (अभियांत्रिकीय)	800 मीटप्रदि, 1600 लालीप्रदि विस्तार योग्य	हिम्मतनगर, गुजरात
दूध पाउडर संयंत्र	120 मीटप्रदि	महेसाणा, गुजरात
जीबीआरसी में बीएसएल4 प्रयोगशाला	--	गांधीनगर, गुजरात
किण्वित उत्पाद संयंत्र	100 मीटप्रदि -150 मीटप्रदि विस्तार, दही, 5 मीटप्रदि - 10 मीटप्रदि दही	रोहतक, हरियाणा

हलीप्रदि- हजार लीटर प्रतिदिन; टप्रदि-टन प्रतिदिन; मीटप्रदि- मीट्रिक टन प्रति दिन; लालीप्रदि - प्रति दिन लाख लीटर;

High Efficiency Source
NDDB
CALF - Anand

डेरी मूल्य शृंखला में गुणवत्ता सुनिश्चित करना

एनडीडीबी ने डेरी मूल्य शृंखला में खाद्य-सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता को निरंतर कायम रखा है। इस दिशा में उठाई गई पहलों में से एक है "गुणवत्ता चिह्न " को अपनाना। दूध और दूध उत्पाद के पैकेजों पर अंकित प्रतीक चिह्न यह दर्शाता है कि इकाई ने दूध और दूध उत्पादों के उत्पादन के लिए उचित खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के अनुसार आवश्यक सभी प्रक्रियाओं को अपनाया और कार्यान्वित किया है। इस वर्ष, कुल 117 डेरियों में से 56 को गुणवत्ता चिह्न प्रदान किया गया है।

एनडीडीबी ने भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) को अपने उत्पाद के प्रमाणीकरण में गुणवत्ता चिह्न को एकीकृत करने और "दूध एवं दूध उत्पादों के लिए कंफर्मिटी असेसमेंट स्कीम" (CAS MMP) के निर्माण में सहयोग प्रदान किया। उत्पाद का एकीकृत लोगो एफएसएमएस- प्रक्रिया प्रमाणीकरण के साथ में पूर्व संबंधित लोगो बीआईएस-आईएसआई चिह्न, एनडीडीबी गुणवत्ता चिह्न और कामधेनु गाय को प्रदर्शित करता है। प्रमुख राज्य दूध महासंघों और डेरी सहकारिताओं से सीएएस एमएमपी की शुरूआत करने के लिए संपर्क किया गया। डेरी सहकारिताओं से प्राप्त सीएएस एमएमपी हेतु 12 आवेदनों में से, 3 डेरी संयंत्रों को सीएएस एमएमपी लाइसेंस प्रदान किया गया और 4 डेरी संयंत्रों का चरण-I और चरण-II का अंकेक्षण पूरा हो चुका है तथा 5 डेरी संयंत्रों का चरण-I का अंकेक्षण पूरा हो चुका है। इसके अलावा, तमिलनाडु राज्य की 16 डेरी सहकारिताओं को सीएएस एमएमपी के लिए आवेदन जमा करने में सहयोग प्रदान किया गया।

एनडीडीबी ने दूध और दूध उत्पादों के प्रबंधन में सुधार के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान किया है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को मुख्यत: स्वच्छ दूध उत्पादन, गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली, आहार विनियमन और दूध तथा दूध उत्पादों के कोल्ड चेन पर केन्द्रित किया जा रहा है। एनडीडीबी बीआईएस के साथ निकटता से काम करते हुए , दूध तथा दूध उत्पादों के लिए भारतीय मानकों को अद्यतन करने में तकनीकी सहायता प्रदान कर रही है।

गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं में शुद्धता और खाद्य सुरक्षा में सुधार के लिए डेरी सहकारिताओं का तकनीकी रूप से आधुनिकीकरण किए जाने की शुरूआत की गई है, जिसमें उन्नत और शीघ्र परीक्षण उपकरण शामिल हैं।

एनडीडीबी विभिन्न विनियामक संस्थाओं, वैज्ञानिक और परामर्शदात्री निकायों जैसे पशुपालन एवं डेयरी विभाग (DAHD),भारत सरकार, एफएसएसएआई, कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन(CAC), एफएओ-टीसीपी आदि के विस्तार में सहायता प्रदान करती है। एनडीडीबी अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) की भारतीय राष्ट्रीय समिति (INC) के सचिवालय की गतिविधियों का समन्वय करती है।

परीक्षण गुणवत्ता सुनिश्चित करना

एनडीडीबी काफ प्रयोगशाला में अपनी बहु-विषयक विश्लेषणात्मक सुविधा के माध्यम से अत्याधुनिक गुणवत्ता परीक्षण सेवाएं उपलब्ध कराती है। काफ डेरी उत्पादों जैसे- फैट एवं तेल, शहद, फल - सब्जियां, पशु आहार, खनिज मिश्रण और विटामिन प्रीमिक्स के क्षेत्र मेँ परीक्षण की सेवाएँ प्रदान करता है। यह प्रयोगशाला राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार गायों के रोग निदान और आनुवंशिक विश्लेषण की दिशा में भी काम कर रही है। यह पूरे देश में डेरी सहकारिताओं, राज्य डेरी महासंघों, सरकारी संस्थानों, विनियामक एजेंसियों, शैक्षणिक और कृषि विश्वविद्यालयों, एनडीडीबी की सहायक कंपनियों के साथ-साथ निजी आहार, खाद्य और दूध उत्पाद के निर्माताओं को उत्पाद अनुपालन, गुणवत्ता संबंधी निर्णय तथा अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों की लिए सेवाएं उपलब्ध कराता है।

परिचालन संबंधी सत्यनिष्ठा और गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए, काफ आईएसओ 17025:2017 पर आधारित गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली का पालन करता है। प्रयोगशाला को एनएबीएल की मान्यता प्राप्त है, और इसे निर्यात निरीक्षण परिषद और एपीडा द्वारा अवशेष निगरानी योजनाओं (RMP) के अनुसार दूध, शहद, फलों एवं सब्जियों का परीक्षण कर निर्यात करने और बीआईएस द्वारा विभिन्न डेरी उत्पादों, खाद्य सामग्री और शिशु उत्पादो के परीक्षण करने की मान्यता प्रदान की गई है।

काफ परिणामों की शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी गुणवत्ता नियंत्रण कार्यक्रमों का पालन करता है। वर्ष के दौरान, काफ ने कार्यक्षेत्र के विस्तार और निगरानी के लिए एनएबीएल एकीकृत मूल्यांकन तथा एनएबीएल दक्षता

परीक्षण सुविधा के मूल्यांकन को सफलतापूर्वक पूरा किया, और कार्यक्षेत्र के विस्तार के साथ अपनी मान्यता को सफलतापूर्वक नवीनीकृत किया है।

वर्ष 2022-23 के दौरान, काफ ने केमिकल, माइक्रोबायोलॉजी और आनुवंशिकी विश्लेषण के लिए लगभग 41,000 सैम्पलों का परीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत किया। इस प्रयोगशाला ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के 255 मापदंडों के लिए 66 दक्षता परीक्षण/इंटर लैबोरेटरी कंपेरिजन (ILC) कार्यक्रमों में भाग लिया। भाग लेने वाले 97 प्रतिशत से अधिक परीक्षणों में प्रदर्शन संतोषजनक पाया गया, जो प्रयोगशाला में उच्च स्तर के प्रोफेशनल मानकों के अनुपालन को प्रदर्शित करता है।

काफ ने आईएसओ 17043 के अनुसार 9 दक्षता परीक्षण संचालित किए, जिसमें केमिकल एवं बायोलॉजिकल डिसीप्लीन में आहार और खाद्य उत्पादों के विभिन्न मानक शामिल है। पूरे देश की कुल 121 प्रयोगशालाओं ने इस दक्षता परीक्षण में भाग लिया, जिसमें डेरी सहकारिताएं शामिल हैं। काफ ने जनवरी 2023 में दक्षता परीक्षण कार्यक्षेत्र विस्तार मूल्यांकन को सफलतापूर्वक पूरा किया और दक्षता परीक्षण पैरामीटर के कार्यक्षेत्र को 149 पैरामीटर से बढ़ाकर 598 पैरामीटर तक कर दिया।

काफ ने इस उद्योग की 4 उपकरण सत्यापन परियोजनाओं को पूरा किया। नवंबर 2022 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें सरकारी संस्थाओं, डेरी महासंघों और दूध संघों अर्थात एआरआईएएस सोसाइटी, असम सरकार, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, कर्नाटक दूध महासंघ, राजस्थान सहकारी डेरी महासंघ और राजारामबापू पाटील सहकारी दूध संघ लिमिटेड ने भाग लिया। इसके साथ ही, प्रयोगशाला ने एफएसएसएआई, नई दिल्ली की 8वीं खाद्य विश्लेषक परीक्षा की प्रायोगिक परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित की।

काफ ने परीक्षण प्रयोगशाला की श्रेणी के अंतर्गत आयोजित प्रतिष्ठित प्रोफेसर एस के जोशी प्रयोगशाला उत्कृष्टता पुरस्कार समारोह में रजत पुरस्कार प्राप्त किया। क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) की ओर से देश का अपनी तरह का यह प्रथम प्रयोगशाला उत्कृष्टता पुरस्कार है। काफ यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली देश की पहली खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला है।

उत्पादों और प्रक्रियाओं का विकास

गुणवत्ता सुनिश्चित करने के अलावा, एनडीडीबी सहकारी डेरियों को सहयोग करने के लिए विभिन्न कार्य करता है जिसमें मशीनीकृत उत्पादन संयंत्र, प्रक्रियात्मक विकास और

शहद का विशलेषण इए-आईआरएमएस द्वारा

सही रियोलॉजी को लक्षित करना

मूल्य संवर्धन शामिल हैं। इस वर्ष, एक पारंपरिक फर्मन्टेड डेरी उत्पाद, लस्सी में तुलसी के बीज मिलाकर उन्नत बेवरेज का विकास किया गया। इस बेवरेज में दूध की अच्छाई और तुलसी के बीजों से होने वाले स्वास्थ्य लाभ जैसे कि टाइप -2 मधुमेह की रोकथाम, कार्डियो-प्रोटेक्शन, एंटीऑक्सिडेंट, एंटीइंफ्लेमेट्री, एंटीमाक्रोबियल प्रभाव आदि उपलब्ध है। उत्पाद को 4°C के अंदर रेफ्रिजरेशन में स्टोर करने पर उसकी सेल्फ लाईफ 7 दिनों की होती है। उत्पाद के निर्माण की विधि और तकनीक को व्यावसायीकरण के लिए उपलब्ध कराया गया है।

एनडीडीबी ने रेडी-टू-यूज़ कल्चर (RUC) के क्षेत्र में अपने अनुसंधान प्रयासों को आगे बढ़ाया है। इस वर्ष, 6 फॉर्मूलेशन का विकास किया गया जिसमें मल्टीपल स्ट्रेन शामिल है। 2 व्यावसायिक डेरियों में इसके परीक्षण किए गए और अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए इन फॉर्मूलेशन में आवश्यक संशोधन किए गए। इसके अलावा, आरयूसी निर्माण प्रक्रिया के फ्रीज ड्राईंग स्टेप को समायोजित किया गया ताकि विभिन्न तकनीकी विशेषताओं से युक्त कल्चर को प्रोसेस किया जा सके और इसके जरिए व्यावसायिक स्तर पर आरयूसी निर्माण प्रक्रियाओं को सुचारू रूप से अपनाने में सहयोग प्रदान किया जा सके।

संबद्ध डेरी गतिविधियों को तकनीकी सहयोग निरंतर जारी रखते हुए 2 अलग-अलग स्थानों पर फील्ड परिस्थितियों के अनुरूप साइलेज उत्पादन में लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया के आरयूसी फॉर्मूलेशन का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया।

इसी प्रकार, उचित हस्तक्षेपों द्वारा ऑर्गेनिक खाद विकास प्रक्रिया में ओर सुधार किया गया ताकि फील्ड में इसके और उपयोग में सुधार लाया जा सके।

EPSON
8.10

भारतीय डेरी क्षेत्र का डिजिटलीकरण

सरकार के डिजिटल इंडिया विजन के अनुरूप, एनडीडीबी डेरी क्षेत्र के डिजिटल इको-सिस्टम को उन्नत बनाने के लिए विभिन्न पहलों का क्रियान्वयन कर रहा है। इसमें पशुधन प्रबंधन, रोग निगरानी और डिजिटल प्रौद्योगिकी समाधानों का उपयोग करके एक राष्ट्रीय डेटाबेस का निर्माण किया जाना शामिल है।

एनडीएलएम भारत पशुधन के लिए इनाफ अवसंरचना

देश में पशु उत्पादकता वृद्धि और स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने तथा उसका मूल्यांकन करने के लिए, एनडीडीबी ने इनाफ (INAPH) की स्थापना की, जो पशुओं के आवश्यक विवरणों को दर्ज करने हेतु एक डिजिटल इको-सिस्टम है। अब इसे एक राष्ट्रीय डेटाबेस के रूप में घोषित किया गया है। यह इअर-टैगिंग द्वारा 'पशु आधार' या विशिष्ट पशु पहचान उत्पन्न करता है जिसे इअर-टैगिंग द्वारा पशुओं को आवंटित किया जाता है।

इनाफ में 724 जिलों के 5.59 लाख गांवों के 8.2 करोड किसानों के 25.8 करोड गायों का रिकॉर्ड उपलब्ध है और यह उत्पादकता वृद्धि कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के साथ-साथ रोग नियंत्रण जैसे NADCP एवं पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण (LH&DC), राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम (NAIP) एवं आरजीएम से संबंधित अन्य योजनाओं में मदद करता है। यह 354 व्यापक पशुपालन परियोजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए एक आधार के रूप में कार्य करता है। वर्ष 2022-23 में, 42 नई परियोजनाओं और चार वीर्य केन्द्रों को विभिन्न स्थानों से इनाफ में शामिल किया गया है। यह सॉफ्टवेयर टीकाकरण के आंकड़ों को भी कैप्चर करता है जैसे लम्पी त्वचा रोग, खुरपका एवं मुहंपका रोग (FMD) और याक और मिथुन प्रजातियों में ब्रूसेलोसिस से संबन्धित टीकाकरण। हाल ही में, एनडीडीबी और राष्ट्रीय मांस अनुसंधान केन्द्र (NCM), हैदराबाद के बीच एक अनुबंध निष्पादित किया गया है, जो देश में स्थापना, रखरखाव और पशुधन ट्रेसिबिलिटी डेटा की पुष्टि के लिए इनाफ के डाटाबेस का उपयोग करेगा।

एनडीडीबी इनाफ -स्वास्थ्य मॉड्यूल के माध्यम से कोल्हापुर दूध संघ को डिजिटल पशु स्वास्थ्य संबंधी इनपुट सेवाएं उपलब्ध करा रही है। कोल्हापुर दूध संघ पिछले पांच वर्षों से इनाफ -स्वास्थ्य मॉड्यूल का उपयोग कर रहा है, इससे उसको अपनी पशु चिकित्सा सेवा वितरण प्रणाली को अनुकूलित करने में सहयोग मिला है। वर्ष के दौरान, इस प्रणाली में 2.9 लाख केसों का दस्तावेजीकरण किया गया है। रिकार्ड किए गए आंकड़ों के अनुसार, थन से संबंधित बीमारियां 30 प्रतिशत से अधिक, पाचन संबंधी समस्याएं 26 प्रतिशत तथा प्रजनन संबंधी समस्याएं 10 प्रतिशत देखी गईं।

वर्तमान INAPH एप्लिकेशन, जिसने इस सेक्टर में अपनी सफलता को रेखांकित किया है, के फांउेडशन पर पशुधन डेटाबेस का सुदृढ़ीकरण करने और इस डेटा को विभिन्न सेक्टरों को उपलब्ध कराने के लिए एनडीडीबी और डीएएचडी संयुक्त रूप से (समान योगदान सहित) राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (NDLM) पर कार्यरत हैं ताकि इसके परिणामस्वरूप एंड-टू-एंड किसान-केंद्रित पशुधन पारिस्थितिकी तंत्र भारत पशुधन का विकास किया जा सके।

अक्तूबर 2021 में राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (NDLM) सॉफ्टवेयर विकास परियोजना की शुरूआत की गई। इसे तीन चरणों में विभाजित किया गया है। वर्तमान में प्रथम चरण को क्रियान्वित किया जा रहा है, इस चरण में पशु प्रबंधन, पशु स्वास्थ्य, पशु प्रजनन तथा प्रशासनिक मॉड्यूल, उपयोगकर्ता स्वीकृति परीक्षण (UAT) को विकसित किया जा रहा हैं। यह प्लेटफॉर्म एक क्लाउड बेस्ड राष्ट्रीय इको- सिस्टम होगा जो एफएलडब्ल्यू (Front line worker) को मोबाइल इंटरफेस का उपयोग करके डेटा दर्ज करने की अनुमति प्रदान करेगा और इसके साथ ही किसानों को अपने पशु रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से देखने एवं राष्ट्रीय कॉल सेंटर के माध्यम से अपने पशुओं की सेवाओं को प्राप्त करने की अनुमति प्रदान करेगा।

सीरो-सर्विलांस और सीरो-मॉनिटरिंग एप्लिकेशन का विकास

उत्पादकता वृद्धि के अलावा महामारी जनित पशु रोगों के प्रभावी रोकथाम और नियंत्रण के लिए रोग की पूर्व चेतावनी अनिवार्य है। इसलिए इस मिशन के अंतर्गत वर्ष 2022-23 के दौरान, एसएस एंड एसएम (सीरो-सर्विलांस और सीरो-मॉनिटरिंग) एप्लिकेशन विकसित किया गया है, जो एक रोग निगरानी प्रणाली है। एसएस एंड एसएम एप्लिकेशन किसी भी अधिसूचित रोग की स्थिति की निगरानी एवं समीक्षा करने की सुविधा प्रदान करती है। इस एसएस एंड एसएम एप्लिकेशन का उपयोग एफएमडी के लिए किया जा सकता है। इसमें एसएस एंड एसएम के लिए दो अलग-अलग मॉड्यूल उपलब्ध है। जब कोई उपयोगकर्ता इस एप्लिकेशन का उपयोग करके किसी सैम्पल फ़ाइल और OD वैल्यू फाइल को अपलोड करता है तो सिस्टम स्वचालित रूप से परीक्षण कर परिणामों की गणना करता है। इस एप्लिकेशन का उपयोग करके, सेन्ट्रल एडमिनिस्ट्रेटर विभिन्न प्रयोगशालाओं से सभी परीक्षण परिणामों को जान सकता है और रोग के उपचार की एक रणनीतिक योजना बना सकता है। वर्तमान में, पूरे भारत में सभी 34 सरकारी एफएमडी प्रयोगशालाएं एसएस एंड एसएम एप्लिकेशन का उपयोग कर रही है।

इस एप्लिकेशन के उपयोग से विशेष क्षेत्रों में टीकाकरण की प्रभावशीलता की निगरानी और रोग के प्रसार की भविष्यवाणी की जा सकती है। इसके अलावा, एसएस एंड एसएम एप्लिकेशन को अन्य महंगे इलाज वाले रोग जैसे ब्रुसेलोसिस, पीपीआर, एलएसडी, सीएसएफ आदि का पता लगाने में प्रयोग किया जा सकता है।

ई-गोपाला

ई-गोपाला प्लेटफार्म पर सभी प्रकार (वीर्य, भ्रूण आदि) के रोगमुक्त जर्मप्लाज्म की खरीदी और बिक्री उपलब्ध है, यह गुणवत्ता प्रजनन सेवाओं की उपलब्धता (कृत्रिम गर्भाधान, वेटनरी प्राथमिक उपचार, टीकाकरण, उपचार आदि) के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इवीएम आदि का उपयोग करके यह किसानों को पशु पोषण, पशुओं के उपचार आदि पर मार्गदर्शन देता है। एप्लिकेशन उपयोगकर्ताओं को टीकाकरण, गर्भावस्था निदान, ब्यांत अवधि के साथ-साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं की निर्धारित तिथि के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

ई-गोपाला किसानों को अपने पशुओं के लिए संतुलित आहार तैयार करने में मदद करता है जिससे आहार की लागत कम हो जाती है। इस ऐप में किसानों को पशुओ के प्रजनन से संबंधित सेवाएं जैसे उच्च आनुवंशिक गुण वाले साड़ो के वीर्य डोजों, सेक्स-सॉर्टेड सीमन एवं भ्रूण प्रत्यारोपण आदि की पहुच उपलब्ध कराई गई है जिससे उन्हें भावी संततियों में दूध की उत्पादकता में सुधार करने में मदद मिलेगी। इस प्रकार से हम कम पशु होने पर भी दूध की उत्पादकता में वृद्धि को बनाए रख सकेगें। इससे देश में डेरी क्षेत्र के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद मिलेगी।

एनडीडीबी डेरी ईआरपी

एनडीडीबी ने डेरी उद्योग की आवश्यकताओं पर आधारित ओपन सोर्स ईआरपी को अनुकूलित कर 'एनडीईआरपी' (एनडीडीबी डेरी ईआरपी) को विकसित किया है। यह उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं के लिए एक किफायती एकीकृत समाधान है जो लागत एवं रेकरिंग लाइसेंसिंग शुल्क के कारण प्रोपाइटरी ईआरपी को लागू करने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं।

इसे एएमसीएस सॉफ्टवेयर के साथ एकीकृत किया गया है जिसमें सभी मानक मॉड्यूल जैसे - वित्त एवं लेखा, क्रय, भंडार, विक्रय, निर्माण, मानव संसाधन और पे-रोल उपलब्ध हैं।

एंड्रॉइड ऐप (mNDERP) तथा पोर्टल (iNDERP) के साथ एकीकृत करके वितरक स्तर तक इसका पुनः विस्तार किया गया है।

एनडीईआरपी को झारखंड दूध महासंघ, झारखंड, पश्चिम असम दूध संघ लिमिटेड, असम, वाराणसी दूध संघ, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक तेल महासंघ, कर्नाटक और एनडीडीबी मृदा लिमिटेड, गुजरात में विकसित कर कार्यान्वित किया गया है।

एएमसीएस: डीसीएस स्तर पर प्रक्रिया दक्षता में सुधार

डेरी सहकारी व्यवसाय को मजबूत करने में डिजिटल नवाचार की भूमिका को ध्यान में रखते हुए एनडीडीबी ने ऑटोमैटिक मिल्क कलेक्शन सिस्टम (AMCS) विकसित किया है जो एक मजबूत, एकीकृत, बहुमंच, बहुभाषी सॉफ्टवेयर समाधान है। इसका डेरी सहकारी समिति स्तर पर वित्तीय समावेशन सहित संपूर्ण परिचालन के लिए प्रयोग होता है। यह समाधान पारदर्शिता और प्रमुख सूचना विंदु को सक्षम करने हेतु संघ/महासंघ/राष्ट्रीय स्तर तक एकीकृत है। यह समाधान पूरी तरह से ओपन सोर्स टेक्नालजी स्टैक पर आधारित है।

इस समाधान से संचालन में पारदर्शिता आई है और प्रक्रिया दक्षता में सुधार आया है। यह एप्लिकेशन संपूर्ण दूध संकलन प्रक्रिया को स्वचालित करता है और सिंगल-क्लिक दूध संकलन परिचालन को सक्षम बनाता है। इस स्वचालन से मैनुअल हस्तक्षेप नहीं होता है और यह दूध परीक्षण उपकरण के साथ एकीकृत रहता है जिससे दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है।

यह एप्लिकेशन किसानों और अन्य हितधारकों को वास्तविक समय में प्रासंगिक जानकारी से युक्त करेगा ताकि प्रक्रियाओं में सुधार के लिए हर कदम पर जवाबदेही लागू हो सके। इसमें किसानों को प्रत्येक लेन-देन से संबन्धित तत्काल एसएमएस मिलते हैं ताकि पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके और डेटा हेरफेर से बचा जा सके। किसानों के पास भी एएमसीएस एंड्रॉइड एप्लिकेशन के माध्यम से पिछले सभी लेनदेन की जानकारी रहती है। संपूर्ण डीसीएस गाँव स्तर का डेटा दूध संघ पोर्टल पर भी उपलब्ध कराया गया है ताकि बेहतर योजना और निष्पादन नियंत्रण सक्षम हो सके।

एएमसीएस वर्तमान में भारत के 7 राज्यों के 7500 से अधिक डीसीएस/ एमपीपी और 3,37,000 दूध प्रदाताओं को कवर करता है।

इंटरनेट आधारित डेरी सूचना प्रणाली

एनडीडीबी "इंटरनेट आधारित डेरी सूचना प्रणाली" (i-DIS) को लागू कर रही है, जो एक वेब-आधारित प्रणाली है, जिसका उद्देश्य डेरी सहकारिताओं को आसान पहुंच और विश्लेषण के लिए सुसंगत विधि से डेटा व्यवस्थित करने के लिए एक सामान्य प्लेटफार्म प्रदान करना है।

वर्तमान में 250 से अधिक दूध संघ, पशु आहार संयंत्र और दूध महासंघ इस इंटरनेट आधारित प्रणाली का उपयोग कर रहे हैं। एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं के प्रदर्शन पर नजर बनाए रखने एवं तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए इंटरनेट डेरी सूचना प्रणाली (i-DIS) का उपयोग का करना निरंतर जारी रखा है। एनडीडीबी आई-डीआईएस के विभिन्न पहलुओं पर अधिकारियों का मूल्यांकन करने और प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न दूध संघ के प्रबंधन सूचना प्रणाली (MIS) पदाधिकारियों के लिए पुनश्चर्या (refresher) कार्यशालाएं आयोजित कर रही है।

दूध मार्ग अनुकूलन

कुशल आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण किसी भी व्यवसाय के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। दूध परिवहन डेरी आपूर्ति श्रृंखला का एक अभिन्न अंग है, चाहे वह गाँवों से दूध का संकलन हो या उपभोक्ताओं के लिए दूध और दूध उत्पादों का वितरण हो।

दूध की आपूर्ति श्रृंखला को और अधिक कुशल बनाने के लिए दूध संकलन, प्रसंस्करण और वितरण का प्रति लीटर लागत कम करना अनिवार्य हो जाता है। हाल ही में मुद्रास्फीति के दबाव में विशेषकर ऊर्जा, ईंधन, परिवहन एवं पैकेजिंग आदि पर होने वाले व्यय के कारण, इसका महत्व अधिक हो गया है। अतः दूध परिवहन हमें लागत कम करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। इसे मुख्य रूप से दो तरीकों से हासिल किया जा सकता है अर्थात; फ्लीट अनुकूलन और मार्ग अनुकूलन।

एनडीडीबी ने विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना में दूध संकलन हेतु दूध मार्ग अनुकूलन कार्य शुरू किया है।

इसके तहत दो दूध चिलिंग केंद्रों के लिए दूध संकलन मार्ग को पर्याप्त परिवहन लागत बचत के साथ अनुकूलित किया गया है और चार और मार्ग अनुकूलन की प्रक्रिया में हैं।

झारखंड दूध महासंघ और वाराणसी दूध संघ में भी ऐसी ही अभ्यास शुरू किया गया है। दूध मार्ग अनुकूलन के परिणाम आशाजनक रहें है इनसे डेरी संचालन में परिवहन लागत में पर्याप्त बचत की अपार संभावना सामने आई है।

डेयरी संचालन में आईटी और डिजिटल प्रौद्योगिकी का एकीकृत उपयोग ।

समृद्ध भविष्य में निवेश

एनडीडीबी डेरी सेक्टर को उससे संबद्ध लोगों के लिए सतत् समृद्ध बनाने हेतु सक्रिय रही है। एनडीडीबी ने डेरी किसानों को खाद से बायोगैस और जैव-उर्वरकों के निर्माण के लिए फार्म लेवल एनारोबिक डाइजेस्टर स्थापित करने एवं स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ डेरी सहकारिताओं में सौर पैनलों को स्थापित करने में लगातार सहयोग कर रही है। एनडीडीबी ने एक सतत् डेरी सेक्टर के प्रति अपनी प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने के प्रयास के तहत वैश्विक और क्षेत्रीय साझेदारी को मजबूती प्रदान की है।

खाद प्रबंधन पहल

खाद प्रबंधन के क्षेत्र में प्रयासों को निरंतर जारी रखते हुए, एनडीडीबी ने परियोजना को बढ़ावा देने और विभिन्न खाद मूल्य शृंखला मॉडल को विकसित करने के लिए अनेक पहल की है, जिसके परिणामस्वरूप स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन और सतत् विकास को बढावा मिला है।

एनडीडीबी- सस्टेन प्लस खाद प्रबंधन कार्यक्रम का कार्यान्वयन

सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन के साथ सहभागिता जारी रखते हुए, एनडीडीबी ने सात राज्यों अर्थात असम, झारखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में नौ खाद प्रबंधन परियोजनाओं के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाया। सभी 1,040 बायोगैस संयंत्रों की स्थापना इस वर्ष के दौरान पूरी हुई, साथ ही कोल्हापुर और डुंगरपुर में एक स्लरी-आधारित जैविक उर्वरक की सुविधा भी स्थापित की गई।

एनडीडीबी और सस्टेन प्लस ने इस कार्यक्रम के अंतर्गत बायोगेस संयंत्रो की स्थापना द्वारा कार्बन उत्सर्जन में कमी के प्रति कार्बन क्रेडिट उत्पन्न करने का दायित्व ईकेआई एनर्जी सर्विसेज लिमिटेड को सौंपा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लाभार्थी परिवारों को न केवल पारंपरिक खाना पकाने के ईंधन पर उनकी निर्भरता को कम करना, बल्कि, उन्हें कार्बन क्रेडिट विक्रय के माध्यम से आय का एक अतिरिक्त स्रोत प्रदान करना है।

CSR द्वारा वित्त पोषित खाद प्रबंधन कार्यक्रम का कार्यान्वयन

सीएसआर सहायता के साथ बरौनी और कटक में शुरू की गई पूर्व परियोजनाओं के अलावा, इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड के सीएसआर सहयोग के साथ एनएफएन द्वारा ऊटी में एक और परियोजना शुरू की गई है।

"एनडीडीबी बायोगैस कार्यक्रम" का कार्यान्वयन

एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं को सहयोग निरंतर जारी रखने के साथ ही बायोगैस संवर्धन के लिए वर्ष 2021-22 में अपने एनडीडीबी बायोगैस कार्यक्रम की शुरूआत की, क्योंकि नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE), भारत सरकार ने अपने बायोगैस कार्यक्रम को बंद कर दिया था। वर्ष के दौरान, एमएनआरई (MNRE) द्वारा अपने बायोगैस कार्यक्रम को फिर से शुरू करने के बाद, एनडीडीबी ने नौ स्थानों पर 444 बायोगैस संयंत्रों की स्थापना की और एनडीडीबी बायोगैस कार्यक्रम का कार्यान्वयन पूरा किया।

गोबरधन योजना के अंतर्गत क्लस्टर गोबर गैस मॉडल का कार्यान्वयन

एनडीडीबी की क्लस्टर स्तरीय खाद प्रबंधन पहल जिसे "जाकरियापुरा मॉडल" के रूप में जाना जाता है, को गोबरधन योजना के तहत कार्यान्वयन के मॉडलों में से एक के रूप में अपनाया गया है। गुजरात सरकार ने गुजरात के 25 जिलों में केंद्रीय प्रायोजित गोबरधन योजना को लागू करने के लिए एनडीडीबी को "मुख्य कार्यान्वयन एजेंसी" के रूप में नामित किया है। इस योजना अंतर्गत, वर्ष के दौरान 25 जिलों मे क्लस्टर मॉडल के कुल 4,100 बायोगैस संयंत्र स्थापित किए गए।

इसके अतिरिक्त, गुजरात के 21 जिलों से योजना के तहत संभावित लाभार्थियों के लिए एनडीडीबी में व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जो बायोगैस संयंत्रों की बुनियादी जानकारी, संयंत्र स्थापित करने के लाभों और कृषि में बायोगैस स्लरी के उपयोग पर केंद्रित थे।

मध्य प्रदेश की स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (SBMGramin) टीम के अनुरोध पर, एनडीडीबी ने मध्य प्रदेश के 51 जिलों की स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण (SBMGramin) टीम के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमे मध्य प्रदेश के एसबीएम-ग्रामीण के 150 प्रतिभागियों का गोबरधन योजना के निर्माण और कार्यान्वयन पर अभिमुखन किया गया।

बायोगैस उत्पादन संयंत्र, उत्तर प्रदेश

घरेलू स्तर के बायोगैस संयंत्रों और क्लस्टर स्तर के खाद प्रबंधन मॉडल को बढ़ावा देने के अलावा, एनडीडीबी ने बड़ी क्षमता वाले गोबर आधारित बायोगैस संयंत्रों की स्थापना में भी कदम रखा। वाराणसी में अपनी तरह का पहला 4000 घन मीटर क्षमता का बायोगैस संयंत्र स्थापित किया गया, जिसमें प्रति दिन 100 मीट्रिक टन गोबर की आवश्यकता होती है। इस संयंत्र को, गोबर के माध्यम से डेरी संयंत्र की ऊर्जा

हाल ही में, वाराणसी में स्थापित अत्याधुनिक बायोगैस संयंत्र

आवश्यकताओं को पूरा करने के एक अद्वितीय उद्देश्य के साथ स्थापित किया गया है, जो सस्टेनेबिलिटी का अनूठा मॉडल स्थापित करता है।

गोबर को डेरी संयंत्र के आसपास के 10-15 कि मी क्षेत्र के किसानों और गौशालाओं से एकत्र किया जाएगा। संयंत्र से उत्पादित गैस का उपयोग मुख्य रूप से भाप और शेष बिजली उत्पादन करने के लिए किया जाएगा। संयंत्र से उत्पादित स्लरी को ठोस और तरल भाग में अलग किया जाएगा। तरल भाग मुख्य रूप से गोबर के साथ इनपुट के रूप में बायोगैस में पुन: उपयोग किया जाएगा।

स्लरी के ठोस हिस्से को फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद (PROM) नामक समृद्ध उर्वरकों का उत्पादन करने के लिए आगे संसाधित किया जाएगा। इस संयंत्र से दैनिक आधार पर लगभग 30 टन फॉस्फेट मिश्रित जैविक खाद (PROM) का उत्पादन होने की संभावना है, जिससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होगी और उस क्षेत्र की मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा।

यह अनूठा मॉडल गोबर की बिक्री के माध्यम से डेरी किसानों की आय बढ़ाने में योगदान देता है, और पारंपरिक ईंधन को बदलकर डेरी संयंत्र के कार्बन पदचिह्न को कम करने में मदद करता है। यह पहल गोबर के कुशल उपयोग द्वारा स्वच्छ भारत के विचार की दिशा में भी योगदान देगी। गैस और उर्वरक का स्थानीय उत्पादन पारंपरिक ईंधन और रासायनिक उर्वरकों की आयात निर्भरता को कम करने में भी योगदान देगा।

सौर और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना

दूध और दूध उत्पादों के प्रसंस्करण में विभिन्न स्रोतों के माध्यम से ऊर्जा की खपत होती है। जैसे-जैसे दूध उत्पादन और संस्थागत क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ेगी, इससें बढ़ती ऊर्जा खपत के कारण पारंपरिक संसाधनों के सीमित भंडार पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। इन समस्याओं से निपटने के लिए, सौर ऊर्जा एक आशाजनक विकल्प है।

कंसेंट्रेटेड सोलर थर्मल

एनडीडीबी, अभियांत्रिकी परियोजनाओं में कंसेंट्रेटेड सोलर थर्मल (CST) प्रणाली के एक निहित घटक के रूप शामिल करने की इच्छुक रही है, ताकि सौर विकिरण से पानी को गर्म किया जा सके। डेरी संयंत्रों के संचालन में इस गर्म पानी का उपयोग किया जाता है।

इस वर्ष, सागर, मध्य प्रदेश में 5 लाख किलो कैलोरी/दिन की क्षमता वाली कंसेट्रेटेड सोलर थर्मल (CST) परियोजना की कमिशनिंग की गई है और गुवाहाटी, असम में वामुल के लिए 10 लाख किलो कैलोरी/दिन की परियोजना का कार्य प्रगति पर है।

सौर फोटोवोल्टिक

डेरी संयंत्र परिसर में स्थित भवनों की छत और छायामुक्त रिक्त स्थान सौर फोटोवोल्टिक(PV) की स्थापना के लिए उत्तम स्थल है। बरौनी, बिहार में 300 किलोवाट (KWp) की क्षमता और एसएजी, बिडज, गुजरात में 250 किलोवाट (KWp) की क्षमता का परियोजना कार्य प्रगति पर है।

सस्टेनेबिलिटी हेतु साझेदारी का सुदृढीकरण

एनडीडीबी ने डेरी को स्थिरता प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्थाओं के साथ साझेदारी को बढ़ावा देना निरंतर जारी रखा है, जिसमें पशुओं के आनुवंशिकी में सुधार, सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना और डेरी क्षेत्र से कार्बन पदचिह्न के आकलन का प्रयास करना शामिल हैं।

डेरी विकास हेतु सौर ऊर्जा समाधान- पायलेट परियोजना

एनडीडीबी ने क्रेडिटैंस्टाल्ट फर विडेरौफबाउ (KfW) बैंक, जर्मनी के साथ सहभागिता की है जो विभिन्न प्रकार के सौर ऊर्जा समाधानों को अपनाने हेतु वित्त पोषण (ऋण और अनुदान) प्रदान करके डेरी सहकारिताओं का सहयोग प्रदान करेगा। एनडीडीबी इस परियोजना के लिए डेरी सहकारिताओं को कम ब्याज दर पर अनुदान सहायता और ऋण भी प्रदान करेगी। इस परियोजना का संचालन न केवल किफायती होगा, बल्कि इससे नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा, कार्बन फुटप्रिंट में कमी आयेगी और साथ ही समय पर चिलिंग होने से संचालन की दक्षता में सुधार लाने और दूध की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

एनडीडीबी ने "डेरी विकास हेतु सौर ऊर्जा समाधान" पर एक पायलट परियोजना तैयार की है जिसे पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय (DAHD), भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है।

आईडीएफ द्वारा वैश्विक कार्बन पदचिह्न मानक

पर्यावरण पर आईडीएफ की स्थायी समिति (SCENV) द्वारा दूध उत्पादन और प्रसंस्करण के लाइफ साइकल असेसमेंट(LCA) हेतु आईडीएफ कार्यप्रणाली पहली बार 2010 में प्रकाशित की गई, जिसमें एफएओ और सतत कृषि पहल प्लेटफार्म (SAI platform) की सक्रिय भागीदारी रही है। इस कार्यप्रणाली का उद्देश्य डेरी उद्योग में सहयोग प्रदान करना है जिससे मूल्य श्रृंखला में जीएचजी उत्सर्जन को कम किया जा सके। 2010 के बाद से, इस कार्यप्रणाली में दो संशोधन (पहला 2015 में और दूसरा 2022 में) हुए हैं। जिसमें एलसीए के वैज्ञानिक और अनुप्रयुक्त दोनों तकनीकों में नवीनतम अनुसंधान को शामिल किया गया है। पहले संशोधन में सीमाओं की पहचान करने और दूसरे संशोधन में वैज्ञानिक प्रगति की समीक्षा करने के लिए आईडीएफ ने एक एलसीए एक्शन टीम (AT) का गठन किया, जिसमें विश्व के 17 अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों से 54 विशेषज्ञ (शिक्षाविद, नीति निर्माता, डेरी कंपनी विशेषज्ञ, सलाहकार और डिवाइस डेवलपर्स) को शामिल किया गया। भारत से एनडीडीबी ने एलसीए एटी में प्रतिनिधित्व किया और आईडीएफ ग्लोबल कार्बन फुटप्रिंट मानक को अद्यतन करने में सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान किया। भारतीय डेरी क्षेत्र में कुछ प्रमुख अपडेट किए गए है जिनमें भैंस के दूध उत्पादन हेतु एलसीए पद्धति का उपयोग, मिश्रित दूध के कार्बन पदचिह्न के आकलन पर मार्गदर्शन, एलसीए में खाद को 'सह-उत्पाद' की मान्यता देना और क्षेत्र स्तर पर शमन विकल्पों की एक व्यापक सूची बनाना शामिल है। आईडीएफ गाइड का अद्यतन संस्करण का विमोचन विश्व डेरी शिखर सम्मेलन, 2022 के दौरान किया गया।

पशुपालन और डेरी पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करना

एनडीडीबी और नेशनल काउंसिल फॉर क्लाइमेट चेंज सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड पब्लिक लीडरशिप- इंडिया (NCCSD) ने संयुक्त रूप से पशुपालन और डेरी पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परषोत्तम रुपाला ने किया।

डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क

डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क (DSF) सहयोगी और पूर्व-प्रतिस्पर्धी तरीके से क्षेत्र की स्थिरता प्रगति की निगरानी और रिपोर्टिंग के लिए एक वैश्विक डेरी क्षेत्र की पहल है। डीएसएफ ग्लोबल डेरी प्लेटफॉर्म के 'पाथवेज टू डेरी नेट जीरो पहल' की रिपोर्टिंग शाखा के रूप में भी कार्य करता है, जिसे पहले से ही एनडीडीबी द्वारा सहयोग दिया जा रहा है। डीएसएफ रिपोर्टिंग प्रक्रिया में उभरती डेरी अर्थव्यवस्थाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, डीएसएफ की मौजूदा रिपोर्टिंग पद्धति को संशोधित करने के लिए एक कार्यकारी समूह का गठन किया गया है। एनडीडीबी ने इस कार्य समूह में सक्रिय रूप से योगदान दिया और यह सुनिश्चित किया कि संशोधित पद्धति इस क्षेत्र की सस्टेनेबिलिटी में सुधार लाने में छोटे धारक वाली डेरी उत्पादन प्रणाली के सकारात्मक योगदान को सही ढंग से दर्शाती है। एनडीडीबी भारत में चयनित सहकारी दूध संघों के साथ 'स्टेज 1 सदस्यता स्तर' पर संशोधित डीएसएफ पद्धति को पायलट करने में भी सक्रिय रूप से भाग लेगी। वर्ष के दौरान, एनडीडीबी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को डेरी एशिया के माध्यम से डीएसएफ गवर्नर के रूप में नामित किया गया है। डीएसएफ के साथ सहयोग करने से एनडीडीबी को भारतीय डेरी क्षेत्र द्वारा की गई स्थिरता पहलों को प्रदर्शित करने में मदद मिलेगी।

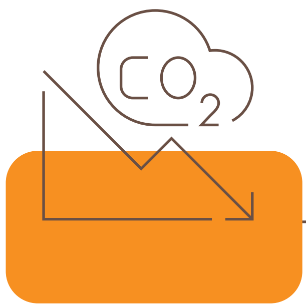

SMALL INTESTINE
ESOPHAGUS
RETICULUM
OMASUM

मानव संसाधन का प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

तेजी से हो रहे प्रौद्योगिकी में बदलाव के साथ, इस क्षेत्र की कार्यप्रणालियों और रोजगार दायित्वों में भी निरंतर बदलाव आ रहा है। एनडीडीबी का यह मत है कि डेरी हितधारकों को उन्नत कौशल विकास के लिए निरंतर प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

डेरी उद्यमियों का सहयोग

डेरी क्षेत्र में युवाओं को शामिल करना प्रमुख फोकस क्षेत्रों में से एक रहा है। डेरी उद्यमिता पर प्रशिक्षण ग्रामीण युवाओं को दिया गया, ताकि वे डेरी को आय के लाभदायक स्रोत के रूप में अपना सकें। पशुपालन पर डेरी उद्यमिता कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 120 ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यक्तिगत आधार के साथ ही विभिन्न संस्थाओं की भागीदारी को भी आकर्षित कर रहा है।

डेरी प्रोफेशनलों और युवाओं का प्रशिक्षण

एमआईटी, मेहसाणा और बेंगलुरु में गुणवत्ता आश्वासन और डेरी संयंत्र प्रबंधन के अंतर्गत विभिन्न दूध संघों के लगभग 1,000 अधिकारियों और तकनीशियनों को प्रशिक्षित किया गया।

आईसीटी आधारित एप्लिकेशन जैसे एनडीडीबी ईआरपी, एएमसीएस और एसएसएमएस पर प्रशिक्षण विभिन्न अंतिम कार्यान्वयन एजेसिंयों (EIA) के प्रतिभागियों के लिए आयोजित किए गए। खानपान के नए विकल्पों के संबंध में, बिक्री और वितरण रणनीतियों हेतु दूध और दूध उत्पादों पर विभिन्न दूध संघों के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

सीएएस, एमएमपी-प्रक्रिया प्रमाणन और उत्पाद प्रमाणन पर प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला में 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

लगभग 800 युवाओं को बेसिक या रिफ्रेसर एआई कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षित किया गया, जिससे ग्रामीण स्तर पर प्रशिक्षित कार्यबल में वृद्धि हुई। 3,000 से अधिक डेरी किसानों ने डेरी पशु प्रबंधन पर एनडीडीबी आरडीटीसी के प्रशिक्षण में भाग लिया और 200 डीसीएस सचिवों ने रिफ्रेसर डीसीएस सचिवों के प्रशिक्षण में भाग लिया।

संबद्ध क्षेत्र के लिए प्रशिक्षण

एनडीडीबी ने किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य को पूरा करने हेतु संबद्ध क्षेत्र के लिए प्रशिक्षण आयोजित किए। एनबीएचएम के अंतर्गत लगभग 800 किसानों को वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षित किया गया और 400 प्रतिभागियों ने एनडीडीबी-सस्टेनेबल प्लस खाद प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत खाद मूल्य शृंखला पर पीआईए के किसान अभिमुखन कार्यक्रमों में भाग लिया। गुजरात के 25 जिलों के 1,000 से अधिक डेरी किसानों को स्लरी प्रसंस्करण केंद्र और फ्लेक्सी-बायोगैस इकाइयों का दौरा कराने के साथ-साथ खाद प्रबंधन पर प्रशिक्षित किया गया।

तेल सहकारिताओं को मजबूत करने के लिए, कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रीय तिलहन उत्पादक सहकारिता संघ लिमिटेड के सीईओ और वरिष्ठ प्रबंधकों के लिए रणनीतिक व्यवसाय प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य एवं विस्तार की मान्यता प्राप्त एजेंट (A-HELP)

एनडीडीबी के प्रयास स्थानीय जानकार व्यक्तियों, विशेष रूप से महिलाओं को शामिल करके, किसानों के घर तक वैज्ञानिक पशुपालन प्रक्रियाओं और डेरी के माध्यम से क्षमता निर्माण करने पर केंद्रित हैं।

इस उद्देश्य के लिए डीएएचडी और डीओआरडी, भारत सरकार के बीच एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें एनडीडीबी एक नोडल एजेंसी है, जो एसएचजी/पशुसाखियों/

ए-हेल्प के अंतर्गत महिला सदस्यों को पशुधन जानकार व्यक्तियों के रूप में प्रशिक्षित करना

मैत्री/एआई कर्मियों की महिला सदस्यों को लाइव स्टोक रिसोर्स पर्सन और प्राथमिक सेवा प्रदाताओं के रूप में एक नए मान्यता प्राप्त मॉडल 'ए-हेल्प' (पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य एवं विस्तार की मान्यता प्राप्त एजेंट) के माध्यम से सेवाएं उपलब्ध कराती है।

यह परिकल्पना की गई है कि ए-हेल्प कार्यक्रम ग्रामीण स्तर पर पशु स्वास्थ्य और प्रबंधन सेवाओं हेतु एक प्राथमिक सेवा प्रदाता तथा विस्तार प्रतिनिधि की जिम्मेदारी निभायेगा। इसके अलावा, ए-हेल्प हितधारकों और पशुपालन विभाग के बीच एक सम्पर्क सूत्र के रूप में कार्य करेगा। ए-हेल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम को एक पायलेट के तौर पर 2,000 हितधारकों की मान्यता के लिए सात राज्यों - बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर और कर्नाटक में चलाया जा रहा है।

एनडीडीबी ने संबंधित राज्यों के चिह्नित प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण (TOT) - मास्टर ट्रेनर्स हेतु छ: दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। 2022-23 के दौरान, 200 से अधिक मास्टर ट्रेनर्स को प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा, ए-हेल्प के अंतर्गत, संबंधित राज्यों के प्रशिक्षण केन्द्रों पर आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के लिए 16 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किए गए। ए-हेल्प जैसा स्वतंत्र मूल्यांकन और मान्यता का कार्य नेशनल एकेडमी ऑफ रूडसेटी (NAR) द्वारा एनडीडीबी के सहयोग से किया गया। 2022-23 के दौरान, ए-हेल्प कार्यक्रम के माध्यम से लगभग 500 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

एनडीडीबी संवाद

एनडीडीबी संवाद के अंतर्गत डेरी और अन्य इनोवेशन के माध्यम से आय में वृद्धि से संबंधित विभिन्न विषयों पर डिजिटल परिचर्चा सत्र आयोजित किए गए जिससे लगभग 14,000 प्रतिभागी लाभान्वित हुए। 'सहकार की शक्ति: 'डेरी में महिलाओं की भूमिका' विषय पर विशेष डिजिटल इंटरैक्टिव संवाद की श्रृंखला आयोजित की गई जिसमें 1,000 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए।

2022 में आयोजित विश्व डेरी शिखर सम्मेलन (IDF WDS 2022) के दौरान प्राप्त जानकारी को प्रसारित करने के उद्देश्य से आईडीएफ-डब्ल्यूडीएस -2022 के सीख पर अनेक एपिसोड आयोजित किए जिसमें 2,000 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए।

एनडीडीबी कार्मिकों का प्रशिक्षण

एनडीडीबी कार्मिकों को नेतृत्व विकास, रणनीतिक प्रबंधन, स्टैंडर्ड आईएसओ 17025: 2017 की आवश्यकता, प्राथमिक उपचार, ऑर्गेनिक और बायोडायनामिक फार्मिंग, संचार कौशल, इफैक्टिव डेलिगेशन, निर्णय लेने की क्षमता और नागरिक प्रबंधन कौशल, एमएस ऑफिस और निष्पादन उत्कृष्टता के क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया गया। कर्मचारियों के लिए अनुकूलित प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रभावी सफलता पर और कामगारों के लिए आत्म अभिव्यक्ति की शक्ति पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रकार वर्ष के दौरान, कुल 534 कार्मिकों ने विभिन्न प्रशिक्षणों में भाग लिया। 27 नियुक्त कार्मिकों का अभिमुखन करने के लिए एक इंडक्शन कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें संस्था के विजन, मूल्य और गतिविधियों पर उनका अभिमुखन किया गया।

2022-23 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्रम सं.	विषय क्षेत्र	कार्यक्रमों की संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
1	सहकारिता सेवाएँ	116	4,216
2	डेरी और तेल सहकारिताओं में डेरी विकास/व्यवसाय प्रबंधन	89	3,244
3	पशु पालन पर डेरी उद्यमिता कार्यक्रम	9	127
4	दूध विपणन	10	199
5	उत्पादकता में वृद्धि	138	4,052
6	गुणवत्ता आश्वासन एवं डेरी संयंत्र प्रबंधन	71	1,663
7	एनडीडीबी ईआरपी/एएमसीएस/एसएसएमएस/डेरी सर्वेयर/ आईडीआईएस पर प्रशिक्षण	33	680
8	दूध संघ कार्मिकों हेतु अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम	45	771
9	डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रशिक्षण आयोजित	117	4,247
10	एनडीडीबी कर्मचारियों का प्रशिक्षण	49	534
11	पीएसयू/पीएसबी के अधिकारियों का प्रशिक्षण	12	260
	कुल योग	**689**	**19,993**

महिला सदस्यों को वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन पर प्रशिक्षण

कर्मचारी सहभागिता गतिविधियां

वर्ष के दौरान, विचारों के आदान-प्रदान और सतत् शिक्षा के लिए कर्मचारी सहभागिता गतिविधियां, अर्थात् समकालीन और आत्म-विकास विषयों पर वार्ता और गतिविधियां, प्रेरणादायक वीडियो सत्र और पुस्तक समीक्षा नियमित रूप से आयोजित की गईं।

इस वर्ष, मानव संसाधन सप्ताह समारोह नामक एक नई पहल आरंभ की गई, जिसके तहत कई कार्यक्रम/गतिविधियां आयोजित की गईं। इनमें चयनित विषयों पर उद्योग के प्रोफेशनलों और शिक्षाविदों के व्याख्यान सत्र, अभिमुखन और अध्ययन हेतु विभिन्न संस्थानों में कार्मिकों का भ्रमण, एनडीडीबी मूल्य पर व्याख्यान सत्र, एनडीडीबी ग्रुपों द्वारा शुरू की गई पहलों पर प्रस्तुतियां, कार्मिकों द्वारा अनुभव साझा कार्यक्रम, आभार और धन्यवाद ज्ञापन दिवस, मनोरंजक खेल और प्रतिभा दिवस कार्यक्रम संबंधी आयोजन शामिल रहें। एनडीडीबी ने वर्ष के दौरान, छात्रों की रोजगार की संभावना को बढ़ाने के लिए विभिन्न संस्थानों के 50 छात्रों को इंटर्नशिप की सुविधा भी प्रदान की।

पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल मैनेजमेंट के लिए अधिकारियों का प्रायोजन

डेरी सहकारिताओं, उत्पादक संस्थाओं और अन्य नामित संस्थाओं के अधिकारियों को उनके प्रोफेशनल डेवलपमेंट के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, आणंद में 15 महीने के एक्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल मैनेजमेंट के लिए प्रायोजित किया जा रहा है। इस वर्ष, उपर्युक्त पाठयक्रम के लिए 30 अधिकारियों को प्रायोजित किया गया।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बैंकों के अधिकारियों का इंडक्शन और मीडिल कैरियर प्रशिक्षण

केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा शुरू की गई पहल के एक भाग के रूप में, एनडीडीबी ने' लीडिंग ऑर्गेनाईजेशनल चेंज' विषय पर पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSU) और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) के मिड कैरियर के अधिकारियों हेतु आयोजित किए, 179 अधिकारियों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/ पीएसबी से इंडक्शन स्तर के अधिकारियों हेतु "भावी नेतृत्व एवं प्रबंधकों का विकास" विषय पर तीन प्रशिक्षण आयोजित किए। उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड, गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, बैंक ऑफ बड़ौदा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में गांव का फील्ड विजिट, किसानों के साथ बातचीत करना और विभिन्न ग्राम स्तरीय संस्थाओं के कामकाज को समझना शामिल था। इसमें क्लास रूम ट्रेनिंग में नेतृत्व, मूल्य/ नैतिक शिक्षा, संस्थागत संस्कृति, सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्व, स्व -विकास और प्रबंधन पर संवाद परिचर्चा सत्रों का आयोजन शामिल था। 2 बैचों में दिल्ली मेट्रो रेल निगम के 36 मध्यम/ वरिष्ठ प्रबंधन अधिकारियों और सचिवालय प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (ISTM), नई दिल्ली के 45 अधिकारियों कि लिए अभिमुखन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

एससी/एसटी कार्मिकों का कल्याण

वर्ष के दौरान, एससी/एसटी के कर्मचारियों के लिए कल्याणकारी उपाय निरंतर जारी रहे, जिसमें एससी/एसटी के कार्मिकों के मेधावी बच्चों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किया जाना शामिल है। एनडीडीबी ने शैक्षिक अभिमुखन को प्रोत्साहित करने के लिए, एससी/एसटी कार्मिकों द्वारा शिक्षा पर किए गए व्यय की प्रतिपूर्ति को निरंतर जारी रखा। वर्ष के दौरान, एससी/एसटी के कार्मिकों को तकनीकी, कार्यात्मक और सामान्य प्रबंधन के क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया। एनडीडीबी के भावी नेतृत्व विकास कार्यक्रम के अंतर्गत एससी/एसटी अधिकारियों ने योजना प्रबंधन और नेतृत्व विकास पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। सभी एससी/एसटी कार्मिकों को 69 प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नामांकित करने की कार्रवाई की गई। एनडीडीबी के सभी कार्यालयों में अंबेडकर जयंती समारोह का आयोजन किया गया।

राजभाषा का प्रगामी प्रयोग

हिंदी दिवस समारोह

एनडीडीबी को राजभाषा कीर्ति द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ

वर्ष के दौरान, दैनिक कार्यालयीन पत्राचार हेतु राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए गए। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुरूप एनडीडीबी में विभिन्न पहलों की शुरूआत की गई है।

एनडीडीबी, आणंद को राजभाषा हिंदी के कुशल प्रचार-प्रसार के लिए 14 सितंबर 2022 को सूरत में आयोजित अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन के दौरान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - 2021-22 (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार गृह मंत्रालय के माननीय गृह राज्य मंत्री श्री निशिथ प्रमाणिक द्वारा प्रदान किया गया।

कार्मिकों द्वारा अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित पहल की गईं-

- तिमाही के दौरान "साहित्य-संवाद" हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन। वर्ष के दौरान, साहित्य-संवाद के अंतर्गत चार सत्र आयोजित किए गए।
- प्रत्येक ग्रुप में हिंदी की समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं और कार्मिकों के लिए माइक्रोसॉफ्ट क्विक पार्ट्स, कस्टम ऑफिस टेम्प्लेट, हिंदी प्रूफरीडिंग और वॉयस टाइपिंग टूल के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनके अलावा, प्रत्येक तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। 14-28 सितंबर 2022 के दौरान एनडीडीबी के सभी कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया।
- स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, अम्बेडकर जयंती आदि का आयोजन हिंदी भाषा में किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर, एनडीडीबी के कर्मचारियों ने हिंदी में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों का पालन करने की प्रतिज्ञा ली।
- इसके अलावा, हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे - निबंध लेखन, कविता पाठ और अनुवाद प्रतियोगिता में एनडीडीबी के कार्मिकों की सक्रिय भागीदारी रही, और उन्होंने हिंदी में अपने साहित्यिक कौशल का प्रदर्शन किया।
- सभी कंप्यूटर पर हिंदी ईमेल की ट्रैकिंग और रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर इंस्टाल किया गया, ताकि कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी के प्रयोग की गणना की जा सके।
- हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्ट (QPR) का कार्यान्वयन करने और विभिन्न एनडीडीबी ग्रुपों से रियल टाइम पर कांसोलिडेटेड डेटा प्राप्त करने हेतु कांसोलिडेटेड क्यूपीआर फॉर्म का निर्माण किया गया।

अधिक से अधिक कार्मिकों की भागीदारी बढ़ाने के लिए, एनडीडीबी ने कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने संबंधी विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं। ऐसी ही एक योजना हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना है। वर्ष 2022-23 के दौरान, इस योजना में 30 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया और उन्होंने नकद प्रोत्साहन राशि प्राप्त की। जिन कार्मिकों के बच्चों ने कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षा में हिंदी विषय में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए, उन्हें नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन

गिफ्टमिल्क कार्यक्रम के तहत स्कूली बच्चों को फ्लेवर्ड मिल्क का वितरण ।

वर्ष के दौरान, एनएफएन ने संबंधित स्टील प्लांटों के परिचालन क्षेत्रों में गिफ्टमिल्क कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के लिए स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL) की विभिन्न इकाइयों - राउरकेला स्टील प्लांट, ओडिशा, दुर्गापुर स्टील प्लांट, पश्चिम बंगाल, इस्को स्टील प्लांट, बर्नपुर, पश्चिम बंगाल और भिलाई स्टील प्लांट, छत्तीसगढ़ के साथ अनुबंध निष्पादित किया है।

एनएफएन ने एनबीसीसी, शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (SCI) और मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स (MDL), के सीएसआर के अंतर्गत गढचिरौली (महाराष्ट्र), इरकॉन के सीएसआर के अंतर्गत मल्कानगिरी (ओडिशा), इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ECIL) के सीएसआर के अंतर्गत जयशंकर भूपलपल्ली (तेलंगाना), नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (NFL) के सीएसआर के अंतर्गत गुना (मध्य प्रदेश) और बोकारो पावर सप्लाई कंपनी लिमिटेड (BPSCL) के सीएसआर के अंतर्गत बोकारो (झारखंड) के आकांक्षी जिलों में अपनी प्रतिबद्ध गिफ्टमिल्क परियोजनाओं को भी क्रियान्वित किया।

एनएफएन ने एनडीडीबी की सहायक कंपनियों - मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल लिमिटेड, आईआईएल और आईडीएमसी लिमिटेड के सीएसआर के अंतर्गत अपने गिफ्टमिल्क कार्यक्रम को निरंतर जारी रखा है।

वर्ष 2022-23 के दौरान, एनएफएन ने नौ राज्यों के लगभग 310 स्कूलों में 50,000 बच्चों को 7.6 लाख लीटर दूध (38 लाख बाल दूध दिवस) वितरित किया। एनएफएन ने तमिलनाडु राज्य के नीलगिरी जिले में आईआईएल के सीएसआर के अंतर्गत गो-ग्रीन खाद प्रबंधन कार्यक्रम के अंतर्गत 120 बायो-गैस इकाइयों की स्थापना की।

एनएफएन ने 26-30 सितंबर 2022 के दौरान, पोषण माह और विश्व स्कूल दूध दिवस मनाया, जिसमें "बच्चों के स्वास्थ्य के विकास हेतु दूध और दूध उत्पादों का महत्व" विषय पर वॉकथॉन, व्याख्यान, पेंटिंग और निबंध तथा फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

सहायक कंपनियां

आईडीएमसी लिमिटेड

प्लास्टिक स्लिटिंग मशीन

इंडियन डेरी मशीनरी कंपनी की स्थापना 1978 में हुई। इसे कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत आईडीएमसी लिमिटेड के रूप में निगमित किया गया है। डेरी उपकरण और घटकों का निर्माण और उनकी कीमतों को नियंत्रित करना मुख्य उद्देश्य है। इन वर्षों में, कंपनी ने अपने विनिर्माण आधार में महत्वपूर्ण वृद्धि का अनुभव किया है, जिसका मुख्य कारण मेक इन इंडिया पहल है। वर्तमान में, आईडीएमसी को उसके मेटल और प्लास्टिक सेगमेंट के अंतर्गत विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग समाधान की एक अग्रणी प्रदाता संस्था के रूप में पहचान प्राप्त है | वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, आईडीएमसी ने 754.21 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया।

आईडीएमसी डेरी और संबद्ध उद्योगों को अनेक प्रकार के खाद्य प्रसंस्करण उपकरणों को उपलब्ध कराता है। इन उत्पादों में दूध साइलो, सीआईपी सिस्टम, हीटर, चिलर, पास्चुराइज़र, अल्ट्रा हीट ट्रीटेड (UHT) स्टरलाइज़र, सतत् मक्खन उत्पादन मशीन (CBMM), बटर टब फिलिंग मशीन, सतत् खोआ उत्पादन मशीन (CKMM), आइसक्रीम फ्रीजर, फ्रूट फीडर, रोटरी और लिनियर कप फिलिंग मशीन, स्टेनलेस स्टील सैनिटरी फिटिंग, सैनिटरी पंप, न्यूमेटिक वॉल्व और अन्य फ्लो कंपोनेंट शामिल हैं। आईडीएमसी के बल्क मिल्क कूलर और स्वदेशी रूप से विकसित मिल्किंग मशीनों की ग्राहकों द्वारा बहुत प्रशंसा की जा रही है।

मेटल सेगमेंट

आईडीएमसी ने अपने ग्राहकों के लिए कई स्वचालित डेरी संयंत्र निर्मित किए है, इन संयंत्रों में 50 हलीप्रदि से लेकर 5 लालीप्रदि तक दूध प्रसंस्करण क्षमताओं वाले संयंत्रों के साथ-साथ विभिन्न दूध उत्पादों जैसे- मक्खन, चीज़, पनीर, आइसक्रीम और फ़र्मेंटेड उत्पादों का निर्माण शामिल है। इसके अलावा, आईडीएमसी ने व्हे प्रसंस्करण के लिए 10 हजार लीटर प्रतिघंटे (KLPH) की क्षमता वाले और आइसक्रीम प्लांट के लिए 70 हजार लीटर प्रतिदिन (KLPD) की क्षमता वाले अल्ट्राफिल्ट्रेशन प्लांट की सफलतापूर्वक कमिशनिंग की। उल्लेखनीय रूप से, कंपनी को 5 लालीप्रदि

दूध प्रसंस्करण संयंत्र के निर्माण और आपूर्ति का एक महत्वपूर्ण ऑर्डर प्राप्त हुआ, जिसमें फ्रेश मिल्क उत्पाद, आइसक्रीम और मिठाई शामिल हैं। इसके अलावा, आईडीएमसी ने दूध और दूध उत्पाद संयंत्रों के निर्माण के कई ऑर्डर प्राप्त किए हैं, जिनमें यूएचटी प्रसंस्करण संयंत्र और मोज़ेरेला चीज़ संयंत्र शामिल हैं। कंपनी ने स्वदेशी रूप से विकसित ऑनलाइन ऑटो दूध मानकीकरण इकाई की भी आपूर्ति और उसका प्रदर्शन किया, जिसकी वर्तमान में दो इकाइयां चालू स्थिति में हैं। इसके अलावा, आईडीएमसी ने पहली बार एक टन प्रतिघंटे (TPH) क्षमता का खोआ संयंत्र निर्मित किया है, जिसे स्थापित करने का कार्य वर्तमान में प्रगति पर है।

थर्मल मैनेजमेंट सेगमेंट

आईडीएमसी ने पूर्णत: से स्वचालित अमोनिया रेफ्रिजरेशन प्रणालियों की सफलतापूर्वक कमिशनिंग की है। जिसमें 40 टन रेफ्रिजरेशन (TR) से 1735 टन रेफ्रिजरेशन तक विभिन्न क्षमताओं वाली प्रणालियाँ उपलब्ध हैं। इसके अलावा, कंपनी को एक निजी डेरी से एक बड़े प्रशीतन संयंत्र के निर्माण का ऑर्डर मिला है, जिसकी कुल क्षमता 4,000 टन रेफ्रिजरेशन है। वर्तमान में यह परियोजना निर्माणाधीन है।

आईडीएमसी ने अनेक स्टेनलेस-स्टील आइस साइलो की स्थापना और कमिशनिंग की प्रक्रिया पूर्ण कर ली है, जिसमें ऊर्जा के उपयोग को अनुकूलित किया गया है। वर्तमान में, कंपनी में पांच आइस साइलो के निर्माण की प्रक्रिया जारी हैं, जो उच्च गुणवत्ता और सतत् थर्मल प्रबंधन का समाधान हैं।

फार्मास्युटिकल सेगमेंट

आईडीएमसी वर्तमान में दक्षिण भारत में एक बड़ी फर्मन्टेशन परियोजना क्रियान्वित कर रही है, जिसमें 55 किलोलीटर के फर्मेन्टर शामिल हैं। कंपनी को 100 किलोलीटर फर्मेन्टर और प्रोसेस वेसल्स के निर्माण का आर्डर मिला है। उल्लेखनीय रूप से, आईडीएमसी को 4 x 200 किलोलीटर क्षमता के फर्मेन्टर की आपूर्ति हेतु एक निर्यात का आर्डर प्राप्त हुआ है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

अनुसंधान एवं विकास केन्द्र

आईडीएमसी के अनुसंधान और विकास विभाग ने विभिन्न नए उत्पादों जैसे- लिनियर कप फिलिंग मशीन, छोटे बल्क मिल्क कूलर मॉड्यूल, सेल्फ-प्राइमिंग पंप, फ्लो रेगुलेटिंग एवं मॉड्यूलेटिंग वाल्व, उच्च क्षमता वाली स्वचालित दूध सैम्पलिंग प्रणाली, सतत् खोआ उत्पाद मशीनों के लिए श्रेष्ठ डिजाइन, सैनिटरी पंप, न्यूमेटिक वाल्व और न्यू प्लेट हीट एक्सचेंजर मॉडल के उन्नत मॉडल विकसित किए हैं।

प्लास्टिक सेगमेंट

आईडीएमसी द्वारा विभिन्न पैकेजिंग समाधानों की आपूर्ति की गई जिसमें दूध उत्पादों जैसे तरल दूध, घी, दही और छाछ के लिए पैकेजिंग फिल्मों का निर्माण और दूध पाउडर एवं अन्य खाद्य उत्पादों के लिए हाई बैरियर लैमिनेट्स और खाद्य तेल की पैकेजिंग के लिए मल्टी लेयर फिल्मों का निर्माण शामिल है। इसके अलावा, आईडीएमसी विशेष रूप से अल्ट्रा हीट ट्रीटेड दूध की पैकेजिंग के लिए निर्मित बैरियर फिल्मों का निर्यात भी करती है।

आईडीएमसी का एनएफएन के साथ सहयोग

आईडीएमसी ने एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन के 'गिफ्ट मिल्क' पहल के साथ साझेदारी की है। अपने सीएसआर के अंतर्गत, कंपनी गुजरात के आणंद जिले के 22 सरकारी स्कूलों के लगभग 6,700 छात्रों को प्रतिदिन 200 मिलीलीटर फोर्टिफाइड फ्लेवर्ड पाश्चुरीकृत दूध की आपूर्ति कर सहयोग प्रदान करती है। इसके अलावा आईडीएमसी स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देने की दिशा मे प्रयासरत है|

ऊर्जा संरक्षण के संबंध में, कंपनी ने अपने दो निर्माण सुविधा पर कुल 220 किलोवाट रूफटॉप सोलर पीवी सिस्टम को सफलतापूर्वक स्थापित किया है, वर्तमान में अन्य सुविधा पर 100 किलोवाट रूफटॉप सोलर पीवी प्रणाली को क्रियान्वित करने का कार्य जारी है।

वर्तमान में, आईडीएमसी पहली बार आंतरिक स्तर पर एसेप्टिक टैंक और इसके प्रोसेस मॉड्यूल के निर्माण कार्य कर रही है। इसके अलावा, कंपनी को 15,000 लीटर प्रतिघंटे की क्षमता वाले मल्टी-प्रोडक्ट यूएचटी स्टेरिलाइज़र निर्माण का ऑर्डर मिला है, ये एक ऐसा उत्पाद है जिसका अब तक मुख्यत: आयात किया जाता रहा है। साथ ही, वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, अधिक संख्या में ऑर्डर की बुकिंग होने और बाजार की अनुकूलता होने, वस्तुओं के मूल्य में स्थिरता आने, इसके उत्पादों की मांग में वृद्धि और टर्न की प्रोजेक्ट समाधानों में वृद्धि होने के कारण आईडीएमसी को महत्वपूर्ण लाभ मिलने की संभावना है। कंपनी अपने उत्पादों का निर्यात करने के लिए अनुकूल अवसरों का पता लगाने हेतु सक्रिय रूप से साझेदारी के लिए प्रयासरत है। उच्च गुणवत्ता के उत्पाद वितरण और परियोजनाओं के कुशल निष्पादन की विश्वसनीयता के साथ आईडीएमसी डेरी और संबद्ध क्षेत्रों को विकास के अवसरों का लाभ दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

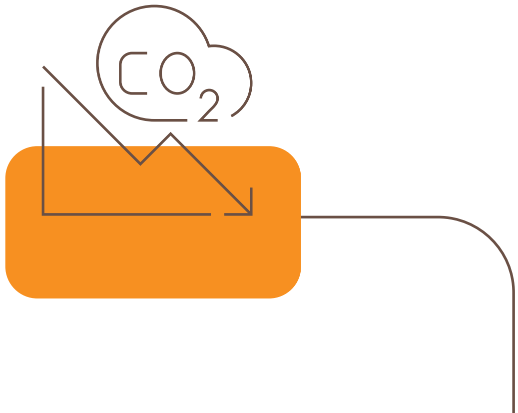

इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2023 के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में आईआईएल के स्टॉल में

इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) को एनडीडीबी द्वारा वर्ष 1982 में स्थापित और वर्ष 1999 में निगमीकृत किया गया। आईआईएल भारत में पशु चिकित्सा और मानव जीवविज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी संस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। पिछले दो दशकों में, आईआईएल खुरपका एवं मुहंपका रोग (FMD) और मानव एंटी-रेबीज के लिए टीकों का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता बन गया है। उपर्युक्त के अलावा, आईआईएल के स्पेक्ट्रम में पशु संबंधी पीपीआर के टीके, रक्तस्रावी सेप्टिसीमिया, ब्लू टंग, ब्रूसेला, शीप पॉक्स, गोट पॉक्स, थिलेरियोसिस, कैनाइन पर्वोवायरस, कैनाइन डिस्टेंपर वायरस, पोर्काइन सिस्टीसरकोसिस, क्लासिकल स्वाइन फीवर आदि के टीके शामिल हैं। मानव स्वास्थ्य के लिए, आईआईएल पेंटावेलेंट का उत्पादन, डीपीटी और हेपेटाइटिस - बी टीकों का उत्पादन करता है। आईआईएल, भारत सरकार के वैश्विक टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत टीकों का एक सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है।

आईआईएल ने पूर्ण स्वामित्व वाली एक सहायक कंपनी प्रिस्टीन बायोलॉजिकल्स एनजेड लिमिटेड (PBNL), जो डार्गाविले, ऑकलैंड के पास न्यूजीलैंड में स्थित हैं, में निवेश किया है। यह सहायक कंपनी एडल्ट बोवाइन सीरम (ABS) की आपूर्ति करती है, जो खुरपका एवं मुहंपका रोग के वैक्सीन निर्माण की एक अनिवार्य सामग्री है।

2022-23 के दौरान, आईआईएल ने वित्त वर्ष 2021-22 की तुलना में 15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 918 करोड़ रुपये का अपना उच्चतम बिक्री राजस्व दर्ज किया। कुल कारोबार में घरेलू बाजार का योगदान 85 प्रतिशत रहा, वही 60 से अधिक देशों के निर्यात में शेष 15 प्रतिशत का योगदान रहा। राजस्व में पशु स्वास्थ्य सेगमेंट का योगदान 50 प्रतिशत और शेष योगदान मानव स्वास्थ्य सेगमेंट का रहा।

वर्ष 2022-23 की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

- डॉ. संजीव बालयान, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री, पशुपालन और डेयरी एवं सुश्री वर्षा जोशी, अपर सचिव (मवेशी एवं डेयरी विकास) पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय का आईआईएल भ्रमण
- डॉ.एल मुरूगन, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री, पशुपालन एवं डेयरी का आईआईएल के रेबीज़ वैक्सीन उत्पादन केन्द्र का भ्रमण
- राष्ट्र की आवश्यकता के समय, आईआईएल ने लम्पी त्वचा रोग के प्रकोप की रोकथाम के लिए टीकों के लाखों डोज का उत्पादन किया।
- आईआईएल ने मिजल्स-रूबेला वैक्सीन के लिए एक व्यवसायिक लाइसेंस प्राप्त किया और इसे हेपाटाइटिस ए के टीडी वैक्सीन का लाइसेंस भी शीघ्र मिलने की संभावना है।

डॉ. संजीव बालियान, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री आईआईएल हैदराबाद स्थित वैक्सीन निर्माण सुविधा देखने के दौरान।

- आईसीएआर के तकनीकी सहयोग से आईआईएल ने एक्वा हेल्थ सेगमेंट में प्रवेश किया है।
- आईआईएल विश्व की पहली कंपनी है जिसने मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी विभाग (DADF), भारत सरकार और अरुणाचल प्रदेश सरकार के सहयोग से ड्रोन का उपयोग करके पशु टीके वितरित किए हैं।
- आईआईएल ने मानव स्वास्थ्य सेगमेंट में डिजिटल मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव (eMOz) की शुरूआत की है। इस पहल का उद्देश्य आईआईएल के उत्पादों को बढ़ावा देने वाले प्रतिनिधि के रूप में बॉट्स द्वारा वर्चुअल बातचीत करना है।

कार्पोरेट सामाजिक दायित्व

आईआईएल का कार्पोरेट सामाजिक दायित्व पशु कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य और कुपोषण, रोग उन्मूलन और सामुदायिक विकास पर केंद्रित है।

आईआईएल के परिचालन क्षेत्रों के आसपास स्कूल के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए अनेक पहल की गई हैं, जैसे- अंडे और केले जैसे पूरक पोषक आहार उपलब्ध कराकर मिड डे मील कार्यक्रम में सहयोग करना, छात्रों को बैग, ड्रेस और स्टेशनरी प्रदान करना, स्कूल परिसर का रखरखाव करना, एनएफएन के माध्यम से एनडीडीबी की "गिफ्ट मिल्क" कार्यक्रम के द्वारा फोर्टिफाइड दूध की आपूर्ति करना।

"ऑपरेशन गोरक्षा" परियोजना के माध्यम से पूरे देश की गौशालाओं और पांजरापोल में एक लाख से अधिक गायों के टीकाकरण और डी-वर्मिंग सहयोग द्वारा स्वास्थ्य कवरेज प्रदान किया गया।

उपर्युक्त सीएसआर कार्यक्रम के अलावा, आईआईएल ने विशेष उद्देश्य वाली परियोजनाएं शुरू की हैं जैसे कि एनएफएन के सहयोग से 120 बायोगैस संयंत्रों की स्थापना, जिससे खेत के अपशिष्ट को खाना पकाने की गैस में परिवर्तित किया जा सके और बायोगैस इकाइयों के अवशेषों को जैविक खाद में परिवर्तित किया जा सके। इस परियोजना के माध्यम से फॉसिल फ्यूल पर निर्भरता कम हुई और जैविक खाद की बिक्री द्वारा एक अतिरिक्त आय उत्पन्न हुई है।

आईआईएल, केरल सरकार और कंपैशन फॉर एनिमल वेलफेयर एसोसिएशन (CAWA) को वित्त पोषित करके रेबीज रोग उन्मूलन के क्षेत्र में कार्यरत है। सामुदायिक विकास पहल के अंतर्गत, आईआईएल ने तेलंगाना क्षेत्र में रणनीतिक रूप से प्रमुख स्थानों पर सीसी टीवी मॉनिटर्स स्थापित किया और उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में हाई मास्ट लाइट

लगाकर ग्रामीण स्ट्रीट लाइटिंग उपलब्ध कराने में सहयोग किया है। आईआईएल का औसत सीएसआर व्यय प्रतिवर्ष लगभग 3.5 करोड़ रुपये है।

आगामी योजनाएं

पिछले कई वर्षों से वन हेल्थ आईआईएल का प्रमुख उद्देश्य रहा है। पशुधन, केनाइन और मानव स्वास्थ्य के अलावा, आईआईएल शुद्ध जल, मुर्गीपालन और एथनो-वेटनरी मेडिकल/वैक्सीन निर्माण को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर है।

निर्माण क्षमताओं के विकास के अलावा, आईआईएल एथनो-वेटनरी मेडिकल और पोल्ट्री ड्रग उत्पादों के लिए वैक्सीन निर्माण की सुविधाएं भी स्थापित करना चाहती है। इसके साथ-साथ, आईआईएल के पास विकासीय चरण में विभिन्न वैक्सीन उत्पाद जैसे - जीई डिलिटेड संक्रामक बोवाइन राइनोट्रेकाइटिस, थनैला (मस्टाइटिस), केनाइन 10-इन-1, वेटनरी टीटी, पैर की सड़न(फूट रॉट), डेंगू, चिकनगुनिया, टाइफाइड, इनएक्टिवेटेड पोलियो, जाईका, बाई-वैलेंट एंटी-रेबीज एमएबी आदि उपलब्ध है। इसी तरह, एक्वा के संदर्भ में, कॉलमनरिस रोग, एडवर्ड्सिलोसिस, हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया, नेक्रोसिस, विब्रियोसिस आदि के लिए टीके विकसित किए जा रहे हैं।

वर्तमान में 1,000 करोड़ रुपये से अधिक की निवल सम्पति के साथ, जीवन की खुशहाली के लिए आईआईएल के पास अच्छा निवेश राशि उपलब्ध है।

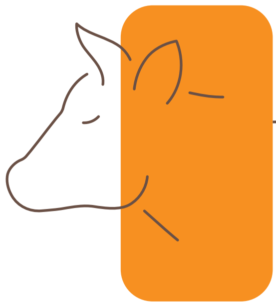

वैक्सीन बैच की फिलिंग लाइन।

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड

श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री, भारत आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2023 के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में मदर डेयरी स्टॉल का अवलोकन करते हुए।

दिल्ली में दूध की मांग की पूर्ति करने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1974 में मदर डेरी, दिल्ली के रूप में मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की गई, जिसे वर्ष 2000 में निगमित किया गया। मदर डेरी का मुख्य ध्यान " गुणवत्ता युक्त आहार और पेय पदार्थों (बेवरेज) को उचित मूल्य पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराने और उत्पादकों को उचित लाभ दिलाने" पर केंद्रित है।

वर्ष के दौरान, कंपनी ने 14,573 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसमें 16 प्रतिशत की कुल वृद्धि दर्ज की गई। दो वर्षों की स्थिरता के बाद, पिछले वित्त वर्ष में विभिन्न उत्पाद श्रेणियों में उपभोक्ता मांग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जो रेस्तरां, कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों आदि में महामारी से संबधित प्रतिबंधों को हटाए जाने के कारण उत्पन्न हुई थी। इसके साथ ही त्योहार, शादियों और पर्यटन की भी वापसी हुई, और इसके कारण होरेका सेगमेंट में जीवंतता आई।

उद्योग से संबंधित आने वाली चुनौतियों का सामना करते हुए व्यवसायिक गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित की गईं, जिसमें सामग्री के मूल्य में वृद्धि, नीतिगत संशोधन और विनियामक ढांचे में सुधार शामिल है। वर्ष के दौरान, खपत की बढ़ती मांग के कारण वस्तुओं का अधिक उपभोग हुआ, जिसके परिणामस्वरूप मांग-आपूर्ति में अंतर आया। इसके साथ ही आहार और चारे की बढती कीमतों के कारण दूध के संकलन मूल्य में वृद्धि हुई। मदर डेरी ने दूध उत्पादक कंपनियों, अपने क्षेत्र के नेटवर्क और सहकारिताओं से अधिक से अधिक दूध का संकलन कर दूध उत्पादकों को सहयोग उपलब्ध कराना निरंतर जारी रखा।

पिछले वित्त वर्ष में **दूध व्यवसाय** में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई चूंकि इसने बढ़ती उपभोक्ता मांगो को पूरा किया। पहुच में सुधार के लिए, विशेष खुदरा बिक्री केन्द्र अर्थात् मदर डेरी प्वाइंट्स और कियोस्क सभी क्षेत्रों के खुदरा बाजार और आवासीय सोसाइटियों में स्थापित किए गए। वित्त वर्ष के दौरान, नए जमाने के कियोस्क डिजाइन - कियोस्क 2.0 की शुरूआत की गई, जिससे एक समृद्ध उपभोक्ता अनुभव का मार्ग प्रशस्त हुआ।

महामारी के बाद की सुविधा और सुरक्षा चिंताओं के मद्देनजर, दूध एसबीयू ने ई-कॉमर्स और आधुनिक खुदरा बिक्री केन्द्रों पर ध्यान केंद्रित किया है जिससे नए उत्पादों को उपलब्ध कराते समय उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएं प्रदान की जा सके। मदर डेरी ने सभी प्रमुख प्लेटफार्म जैसे- बिग बास्केट डेली, मिल्क बास्केट, ज़ेप्टो आदि पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई है। इसी प्रकार, आधुनिक बिक्री केन्द्रों जैसे - डीमार्ट, बिग बाजार, रिलायंस, स्पेंसर आदि में पिछले कुछ वर्षों से उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि हुई है। दूध एसबीयू ने उपभोक्ताओं तक अपनी पहुंच को बढ़ाने की पहल को निरंतर जारी रखा और नए परीक्षणों पर ध्यान केंद्रित किया।

मूल्य वर्धित डेरी उत्पाद (VADP) पोर्टफोलियो ने पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 39 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। वित्त वर्ष 2022-23 विशेष रूप से आइसक्रीम सेगमेंट के लिए एक वापसी का वर्ष था। फ्रेश डेरी सेगमेंट के अंतर्गत छाछ और लस्सी अधिक आकर्षण के केन्द्र में रहे, जबकि दही सेगमेंट के अंतर्गत सभी प्रकार के दही - सजाव दही, मिष्टी दोई और योगर्ट उद्योग में अभूतपूर्व वृद्धि दर हासिल हुई।

सुरक्षित और स्वच्छ पैक्ड उत्पादों के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ-साथ स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों के लिए बढ़ती पसंद के कारण, न्यूट्रीफिट श्रेणी को बड़े तबके के ग्राहकों के बीच स्वीकृति मिली है। लंबी शेल्फ-लाइफ के उत्पाद श्रेणियों जैसे यूएचटी क्रीम, यूएचटी डेरी- बेवरेज़ (मिल्कशेक, छाछ और लस्सी) समेत सभी उत्पादों को बढ़त हासिल हुई।

इस व्यवसाय ने नए बाजारों में प्रवेश करने और मौजूदा बाजारों में अपनी उपस्थिति को मजबूत बनाने के लिए नए वितरण चैनलों का सफलतापूर्वक लाभ उठाया। चैनलों के बीच, आधुनिक खुदरा बिक्री केंद्रों में इस कारोबार में 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि ई-कॉमर्स/क्विक कॉमर्स प्लेटफार्मों में 41 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आइसक्रीम के टेलीविज़न कैम्पेन को प्रमुख उपभोग सीज़न के दौरान चलाया गया। इसके अलावा, मिष्टी दोई के सेलिब्रिटी लेड-मीडिया कैम्पेन और वितरण विस्तार ने इस व्यवसाय को पुनर्जीवित करने में मदद की, जिससे पूर्व में ब्रांड की पकड़ मजबूत हुई। मीडिया कैम्पेन और उपभोक्ता द्वारा किए गए प्रचारों के परिणामस्वरूप समग्र वीएडीपी पोर्टफोलियो के प्रदर्शन से महत्वपूर्ण योगदान मिला।

धारा ब्रांड के अंतर्गत, **मदर डेरी के खाद्य तेल** व्यवसाय में पिछले पांच वर्षों में लगातार एक बेहतर सीएजीआर नज़र आ रहा है, जिसमें मूल्य और वाल्यूम में क्रमशः 21 प्रतिशत और 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान, **'खाने पे कहना'** नए संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक मार्केटिंग अभियानों की शुरूआत की गई। जिसके कारण उपभोक्ताओं के ब्रांड के साथ गहरा जुड़ाव हो सके।

सफल ब्रांड - मदर डेरी के **बागवानी** कारोबार में पिछले वित्त वर्ष के दौरान 10 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज़ हुई। वर्ष के दौरान, सभी प्रमुख निष्पादन मानदंड जैसे फल और सब्जियों के उत्पादन की मात्रा, औसत बिल मात्रा और बूथों

डॉ एल. मुरुगन, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री मदर डेयरी के पटपरगंज प्लांट का दौरा करते हुए ।

श्री मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी, माननीय डॉ. मनसुख एल मंडाविया, केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, रसायन और उर्वरक मंत्री को बल्क वेंडिंग मशीन की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी देते हुए ।

की उपलब्धता औसत बिल मूल्य एवं रिटेल मार्जिन में महत्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव हुए।

नए लिंकेज के विकास द्वारा संकलन नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण किया गया जिसमें GUJCOOP के साथ इसकी आपूर्ति शृंखला का समावेश करना शामिल है जिससे मार्केट लिंकेज प्रदान किया जा सके और फसल कटाई के बाद सहयोग उपलब्ध कराया जा सके।

मौसम में होने वाले बदलावों के बावजूद, आम उत्पादन पर लगभग 30 प्रतिशत का असर पड़ने के बाद भी, पल्प और कांसंट्रेट के व्यवसाय ने उत्तम प्रदर्शन किया और पिछले वर्ष की तुलना में 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

सूचना प्रौद्योगिकी के मसले पर, सूचना की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए कई रणनीतिक परियोजनाओं पर काम की शुरूआत हुई है। मदर डेरी ने क्षेत्रीय सेल्स टीमों की बिक्री गतिविधियों को कारगर बनाने के लिए मोबाइल ऐप-आधारित प्रौद्योगिकी समाधान का उपयोग कर सेल्स फोर्स ऑटोमेशन के कार्यान्वयन की शुरुआत की। इसका पहला चरण दिल्ली एनसीआर में दूध, आइसक्रीम और धारा सेल्स टीमों के लिए शुरू हुआ, जिसमें मार्केट एक्टिविटी ट्रैकिंग, बीट विजिट, फील्ड में उपस्थिति और बिक्री प्रदर्शन शामिल है। मदर डेरी ने चरणबद्ध तरीके से दूध की दुकानों पर प्वाइंट ऑफ सेल्स समाधान का क्रियान्वयन भी शुरू कर दिया है।

अनुसंधान एवं विकास टीम ने उपभोक्ताओं की नई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक उत्पाद शृंखलाएं विकसित कीं। वित्त वर्ष 2022-23 में, मदर डेरी ने इम्पल्स आइसक्रीम सेगमेंट और टेक-होम पैक काजू कतली को पैकेज्ड फॉर्मेट में लॉन्च किया। सफल ब्रांड के तहत, रेडी-टू-कुक फ्रोज़न स्नैक्स की नई रेंज जैसे वेजी स्टिक्स, वेजी पॉप्स, चीज़ पॉप्स और पिज्जा पॉकेट्स भी लॉन्च किए गए।

स्वच्छ पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए, इस कंपनी ने 'प्लास्टिक वेस्ट न्यूट्रल कंपनी' बनने का संकल्प लिया है। मार्च 2023 तक, इस कंपनी ने 19,000 मीट्रिक टन से अधिक उपभोक्ता द्वारा इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक अपशिष्ट को एकत्रित करने और रीसाइक्लिंग/को-प्रोसेस करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विस्तारित उत्पादक दायित्व कार्यक्रम के अंतर्गत, यह कंपनी भारत के 27 राज्यों में क्रियाशील है।

पुरस्कार और सम्मान

भूतपूर्व सैनिकों के रोजगार में योगदान के लिए सशस्त्र बल झंडा दिवस सीएसआर कॉन्क्लेव 2022 के दौरान भारत के माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा **रजत पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

सिनेक्स ग्रुप द्वारा आयोजित 6 वें वार्षिक भारतीय खाद्य सुरक्षा समिट एवं पुरस्कार 2022 के दौरान, **इनोवेटिव डेरी कंपनी ऑफ द ईयर** का प्रतिष्ठित पुरस्कार जीता।

भारतीय पैकेजिंग अनुसंधान और विकास संस्थान द्वारा आयोजित **"पैकेजिंग एक्सीलेंस इंडिया स्टार अवार्ड"** जीता और साथ ही इसकी टीम ने चार पैकेजिंग नवाचारों के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार जीता।

हैप्पीएस्ट वर्कप्लेस अवार्ड्स एंड समिट के दौरान BWPeople.in और Happy+ ने **हैप्पीएस्ट वर्कप्लेस अवार्ड 2022** प्रदान किया।

सस्टेनेबिलिटी की दिशा में विशिष्ट योगदान के लिए 10वें राष्ट्रीय सीएसआर समिट 2022 में सम्मानित किया गया। यूएन-ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया के सहयोग से यह समिट शिखर ऑर्गेनाइजेशन फॉर सोशल डेवलपमेंट द्वारा आयोजित किया गया।

एनडीडीबी डेरी सर्विसेज

दूध उत्पादक संस्था में किसानों की बैठक

एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS) एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जिसे अक्तूबर 2009 में कंपनी अधिनियम की धारा 8 के अंतर्गत एक गैर-लाभकारी (Not for Profit) कंपनी के रूप में निगमित किया गया। इसका उद्देश्य दूध उत्पादक संस्थाओं (MPO) और उत्पादकता वृद्धि सेवाओं को बढ़ावा देना है।

वर्ष के दौरान, एनडीएस ने श्री बाबा गोरखनाथ कृपा एमपीओ गोरखपुर, उत्तर प्रदेश; सृजनी एमपीओ बरेली, उत्तर प्रदेश और दूधश्री एमपीओ हुगली, पश्चिम बंगाल की स्थापना में सहयोग किया। इन एमपीओ की स्थापना क्रमशः उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन; भारतीय ग्रामीण आजीविका मिशन और पश्चिम बंगाल राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों (SNRLM) के वित्तीय सहयोग से की गई है। एनडीएस द्वारा सहायता प्राप्त एमपीओ की कुल संख्या 22 है। उनमें से सात को दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत और तीन एमपीओ को उत्तर प्रदेश एसआरएलएम के माध्यम से उत्तर प्रदेश सरकार की क्षेत्रीय योजना 'महिला सामर्थ्य योजना' के अंतर्गत और शेष एमपीओ को राष्ट्रीय डेरी योजना एवं टाटा ट्रस्ट का सहयोग प्राप्त हुआ। 22 एमपीओ में से, 15 में सम्पूर्ण महिला सदस्यता है और उनके संबंधित बोर्ड में सभी उत्पादक निदेशक महिला डेरी किसान हैं।

कुल मिलाकर 22,277 गांवों के 8.7 लाख डेरी किसान इन एमपीओ में उत्पादक सदस्य है। इन उत्पादकों में 71 प्रतिशत महिलाओं का प्रतिनिधित्व है और 65 प्रतिशत छोटे दूध उत्पादक हैं। इन उत्पादक संस्थाओं के सदस्यों ने शेयर पूंजी के रूप में 200.6 करोड़ रुपये की राशि जुटाई, 36.8 लाकिग्राप्रदि दूध डेरी में दिया और कुल 7,446.94 करोड़ रुपये का कारोबार किया।

एमपीओ के निदेशक मंडल के कौशल और ज्ञान आधार को विकसित करने के लिए, एनडीएस ने पुनश्चर्या प्रशिक्षण, अभिमुखन और कौशल विकास कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान किया। सदस्यों के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम, नव नियुक्त कार्मिकों के लिए अभिमुखन कार्यक्रम और एमपीओ की वर्तमान क्षेत्रीय टीमों के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। एनडीएस ने सूचना प्रौद्योगिकी, उत्पादों के विपणन आदि के क्षेत्रों में भी इन एमपीओ को सहयोग प्रदान किया।

उत्पादक संस्थाओं ने आईडीएफ -डब्ल्यूडीएस 2022 में अनेक उत्पादों को लांच किया और प्रॉमिसिंग रूरल स्टार्ट-अप के रूप में स्वंय को स्थापित किया।

दुधारू पशुओं की उत्पादकता में सुधार के लिए एमपीओ अपने परिचालन क्षेत्रों में विभिन्न सामग्रियां (पशु आहार, क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण, चारा बीज आदि) और सेवाएं (एआई, डेरी विस्तार) उपलब्ध कराती है। वर्ष के दौरान, एमपीओ ने 1.06 लाख मीट्रिक टन पशु आहार और 500 मीट्रिक टन खनिज मिश्रण की आपूर्ति की और परिचालन क्षेत्रों में 11.6 लाख एआई निष्पादित किए। एमपीओ द्वारा एंटीबायोटिक-रहित दूध को बढ़ावा देने के साथ-साथ एथनो-वेटनरी पद्धतियों के उपयोग को भी बढ़ावा दिया गया।

एनडीएस के स्वामित्व और प्रबंधन वाले चार वीर्य केन्द्रों ने मिलकर 5.26 करोड़ हिमिकृत वीर्य डोजों की बिक्री की। देश में देशी नस्लों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, वर्ष के दौरान, गायों की 18 विभिन्न देशी नस्लों के लगभग 1.14 करोड़ वीर्य डोजों और भैंस के आठ विभिन्न नस्लों के लगभग 1.60 करोड़ वीर्य डोजों की बिक्री की।

एनडीएस भ्रूण प्रत्यारोपण द्वारा शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (ABIP IVF - ET) के कार्यान्वयन में शामिल एक सेवा प्रदाता है, जिसका उद्देश्य पशुपालन एवं डेयरी विभाग (DAHD) के आरजीएम के अंतर्गत दूध उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना है। महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और झारखंड राज्यों में किसानों के घर पर चयनित प्राप्तकर्ता पशुओं में भ्रूण प्रत्यारोपण की गतिविधि आयोजित की गईं, जिसके परिणामस्वरूप उच्च आनुवंशिक गुण वाले बछड़ें पैदा हुए। वर्ष के दौरान, एसएजी बीडज की आईवीएफ प्रयोगशाला में कुल 1,158 भ्रूणों का उत्पादन किया गया, जिनमें से लगभग 943 भ्रूण देशी नस्लों के हैं।

एनडीएस ने आरजीएम, भारत सरकार के अंतर्गत एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वित विभिन्न परियोजनाओं के लिए विभिन्न देशी नस्लों के 4,100 उच्च आनुवंशिक गुण वाले पशुओं को शामिल करने में सहयोग प्रदान किया।

एनडीएस आरजीएम योजना के अंतर्गत मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में एनडीडीबी की गौ अभयारण्य परियोजना को क्रियान्वित कर रहा है, जो भारत की अपनी तरह की पहली परियोजना है। इस परियोजना का उद्देश्य 5,000 गायों को आवासीय शेड उपलब्ध कराना है, जिसमें बायोगैस और गाय के गोबर पर आधारित उर्वरक उत्पादन की अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

राहुरी वीर्य केंद्र, महाराष्ट्र

मापदंड	कुल 22 एमपीसी
जिलों की संख्या	130
शामिल गांवों की संख्या	22,277
सदस्यों की संख्या	8,72,956
महिला सदस्यता (%)	71
छोटे धारक (सदस्यों का %)	65
प्रदत्त शेयर पूंजी (मिलियन रुपये में)	2,006.00
औसत दूध संकलन एफवाईटीडी (हकिग्राप्रदि)	3,685
कुल कारोबार एफवाईटीडी (मिलियन रुपये में)	74,469.4

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड

श्री परषोत्तम रुपाला, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, डॉ. संजीव बालियान और डॉ एल. मुरुगन, माननीय केन्द्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री, के साथ एनडीडीबी मृदा लिमिटेड के शुभारंभ के अवसर पर।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जिसे 1 जुलाई 2022 को एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी के रूप में स्थापित किया है। यह कंपनी पूरे देश में खाद प्रबंधन पहल को केंद्रित ढंग से आगे बढ़ाएगी। एनडीडीबी मृदा का उद्देश्य बायोगैस और गोबर से संबंधित परियोजनाओं जैसे खाद मूल्य श्रृंखला परियोजनाओं, बायोगैस आधारित बायो-सीएनजी उत्पादन, डेरी संयंत्रों के लिए बायोगैस आधारित ऊर्जा उत्पादन और गोबर आधारित जैविक उर्वरकों की वृहत स्तरीय संगठित बिक्री को बढावा देना है।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड किसानों के जीवन पर प्रत्यक्ष और दीर्घकालिक प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। गोबर प्रबंधन की किफायती तकनीक को विकसित करने और गोबर आधारित नवीन अनुसंधान के लिए समान विचारधारा वाली एजेंसियों, विश्वविद्यालयों, स्टार्ट-अप आदि को सहयोगात्मक प्लेटफार्म उपलब्ध कराने हेतु यह कंपनी अनुसंधान एवं विकास की योजनाओं पर कार्य कर रही है।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने गुजरात में एनडीडीबी-सस्टेन प्लस खाद प्रबंधन कार्यक्रम और गोबरधन योजना के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने वाराणसी में 4000 घन मीटर क्षमता के बायोगैस संयंत्र का प्रबंधन भी कर रही है। वाराणसी संयंत्र में उत्पादित फॉस्फेट रिच ऑर्गेनिक खाद (PROM) की बिक्री और वितरण के लिए एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने गुजरात राज्य फर्टिलाईजर और केमिक्ल्स लिमिटेड (GSFC) के साथ समझौता किया है। प्रोम की बिक्री "सरदार सुधन" नामक ब्राण्ड से की जाएगी|

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने शहरी उपभोक्ताओं की जैविक उर्वरक की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए "सुधन गार्डन न्यूट्रीकिट" नामक एक शहरी किट भी पेश की है। न्यूट्रिकिट ठोस और तरल घोल आधारित जैविक उत्पादों का एक पैकेज है जिसे विशेष रूप से शहरी उपभोक्ताओं के किचन गार्डन के बगीचों/छोटी नर्सरी/सजावटी पौधों की पोषक तत्वों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है। इन जैविक उत्पादों के उपयोग से पौधों की वृद्धि होती है और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के अलावा फूलों/फलों के उत्पादन के साथ-साथ गुणवत्ता भी बढ़ती है।

"गोबर से समृद्धि" बायोगैस कार्यक्रम

आधुनिक बायोगैस संयंत्रों के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने "Sistema.bio" के सहयोग से, जो बायोगैस संयंत्रों की निर्माता है, "गोबर से समृद्धि" बायोगैस कार्यक्रम को क्रियान्वित किया है। यह एक विशेष कार्बन फायनांस आधारित बायोगैस कार्यक्रम है, जिससे बायोगैस संयंत्रों की स्थापना हेतु आवश्यक अग्रिम निवेश में कमी आती है।

इस कार्यक्रम के तहत डेरी सहकारिताओं और किसान-केंद्रित संस्थाओं द्वारा क्लस्टर में व्यापक स्तर पर घरेलू बायोगैस संयंत्रों की स्थापना की जाती है। इसके परिणामस्वरूप लगभग 5,000 रुपये में लाभार्थी किसान दो घन मीटर क्षमता वाले घरेलू बायोगैस संयंत्र का लाभ ले सकते हैं।

डेरी सहकारिताओं की प्रगति

डेरी सहकारी समितियां

उत्तर

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
हरियाणा	505	3,229	3,318	7,019	7,837	7,964	7,909
हिमाचल प्रदेश		210	288	740	1,084	1,067	1,097
जम्मू एवं कश्मीर		105	**	**	896	910	970
पंजाब	490	5,726	6,823	7,069	8,539	8,666	9,104
राजस्थान	1,433	4,976	5,900	16,290	21,300	23,274	25,408
उत्तर प्रदेश	248	7,880	15,648	21,793	40,353	39,855	36,414
उत्तराखंड					4,205	4,112	4,388
क्षेत्रीय कुल	**2,676**	**22,126**	**31,977**	**52,911**	**84,214**	**85,848**	**85,290**

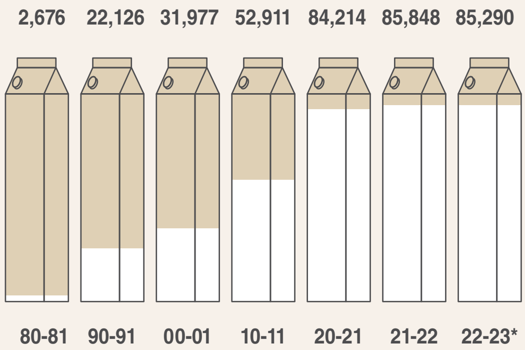

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ

पूर्व

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
असम		117	125	155	522	485	672
बिहार	118	2,060	3,525	9,425	26,275	27,897	29,570
झारखंड				53	769	879	1,046
मणिपुर						233	233
मेघालय					30	20	21
मिजोरम					42	55	36
नागालैंड		21	74	49	52	52	52
ओडिशा		736	1,412	3,256	6,151	6,651	6,378
सिक्किम		134	174	287	587	648	675
त्रिपुरा		73	84	84	119	133	143
पश्चिम बंगाल	584	1,223	1,719	3,019	3,804	3,709	3,824
क्षेत्रीय कुल	**702**	**4,364**	**7,113**	**16,328**	**38,351**	**40,762**	**42,650**

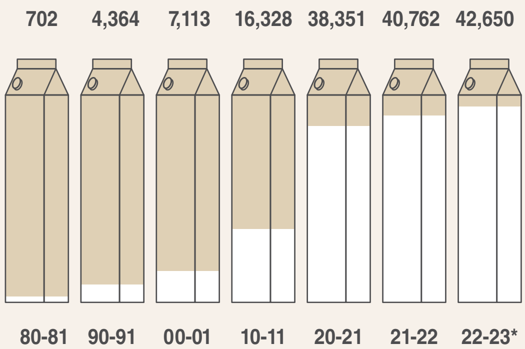

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ

पश्चिम

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
छत्तीसगढ				757	1,110	1,098	949
गोवा		124	166	178	183	183	183
गुजरात	4,798	10,056	10,679	14,347	22,341	22,384	22,402
मध्य प्रदेश	441	3,865	4,877	6,216	10,757	11,176	11,646
महाराष्ट्र	718	4,535	16,724	21,199	22,895	19,516	20,403
क्षेत्रीय कुल	**5,957**	**18,580**	**32,446**	**42,697**	**57,286**	**54,357**	**55,583**

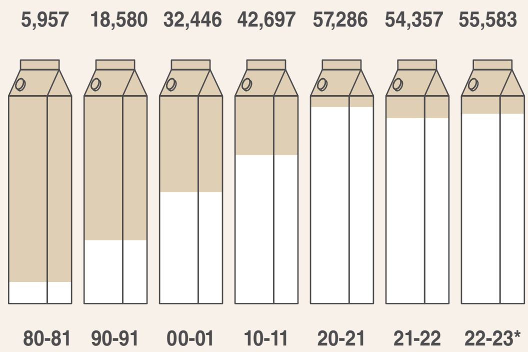

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ

दक्षिण

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
आंध्र प्रदेश	298	4,766	4,912	4,971	6,458	7,225	9,550
कर्नाटक	1,267	5,621	8,516	12,372	16,721	17,043	17,586
केरल		1,016	2,781	3,666	3,337	3,378	3,399
तमिलनाडु	2,384	6,871	8,369	10,079	10,555	10,859	10,982
तेलंगाना					6,581	6,835	6,843
पुदुचेरी		71	92	102	107	108	108
क्षेत्रीय कुल	**3,949**	**18,345**	**24,670**	**31,190**	**43,759**	**45,448**	**48,468**

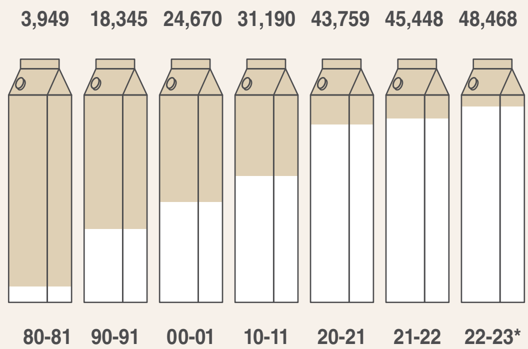

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ

महायोग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
13,284	**63,415**	**96,206**	**1,43,126**	**2,23,610**	**2,26,415**	**2,31,991**

^ डेरी सहकारिताओं के लिए, यह संगठित (संचयी) है, इसमें पारंपरिक समितियां और पूर्व गठित तालुका संघ शामिल है। 2020-21 के बाद के आंकड़ों में एमपीओ के एमपीपी और एमडीएफवीपीएल के एमपीआई शामिल हैं।

* अनंतिम

** रिपोर्ट नहीं मिली

स्रोत: दूध संघ एवं महसंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

उत्पादक सदस्य

उत्तर

(हजार में)

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
हरियाणा	39	184	185	313	326	325	329
हिमाचल प्रदेश		17	20	32	46	46	47
जम्मू एवं कश्मीर		2	**	**	30	40	41
पंजाब	26	304	370	385	419	417	427
राजस्थान	80	340	436	669	1,044	1,063	1,095
उत्तर प्रदेश	18	392	649	977	1,568	1,103	712
उत्तराखंड					159	157	165
क्षेत्रीय कुल	**163**	**1,239**	**1,660**	**2,376**	**3,593**	**3,151**	**2,816**

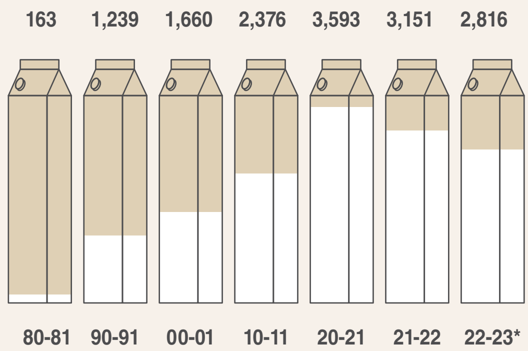

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य

पूर्व

(हजार में)

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
असम	-	2	1	4	34	40	48
बिहार	3	100	184	523	1,308	1,358	1,408
झारखंड	-	-	-	1	23	26	29
मणिपुर	-	-	-	-	-	6	6
मेघालय	-	-	-	-	1	1	0.8
मिजोरम	-	-	-	-	1	1	1
नागालैंड	-	1	3	2	2	2	2
ओडिशा	-	46	111	187	325	293	325
सिक्किम	-	4	5	10	15	16	17
त्रिपुरा	-	4	4	6	8	6	6
पश्चिम बंगाल	20	66	114	213	247	236	226
क्षेत्रीय कुल	**23**	**223**	**422**	**946**	**1,964**	**1,984**	**2,069**

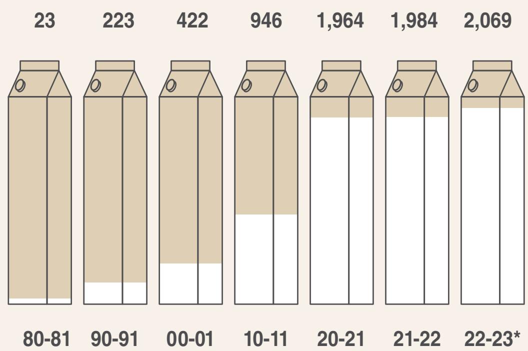

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य

पश्चिम

(हजार में)

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
छत्तीसगढ				31	43	42	37
गोवा		12	18	19	19	19	19
गुजरात	741	1,612	2,147	2,970	3,740	3,762	3,776
मध्य प्रदेश	24	150	242	271	372	385	401
महाराष्ट्र	87	840	1,398	1,818	1,853	1,659	1,687
क्षेत्रीय कुल	**852**	**2,614**	**3,805**	**5,109**	**6,027**	**5,867**	**5,919**

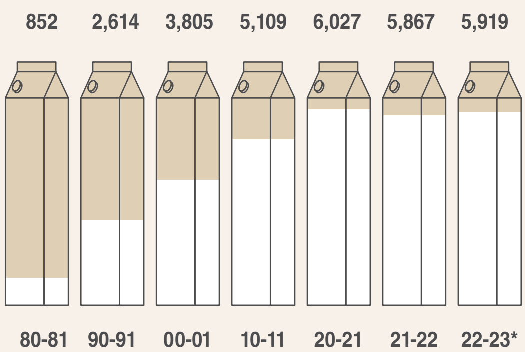

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य

दक्षिण

(हजार में)

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
आंध्र प्रदेश	33	561	702	846	661	660	666
कर्नाटक	195	1,013	1,528	2,124	2,633	2,589	2,644
केरल		225	637	851	1,025	1,042	1,063
तमिलनाडु	481	1,590	1,957	2,176	1,983	1,977	1,927
तेलंगाना					258	239	293
पुदुचेरी		17	27	36	42	42	42
क्षेत्रीय कुल	**709**	**3,406**	**4,851**	**6,033**	**6,602**	**6,550**	**6,636**

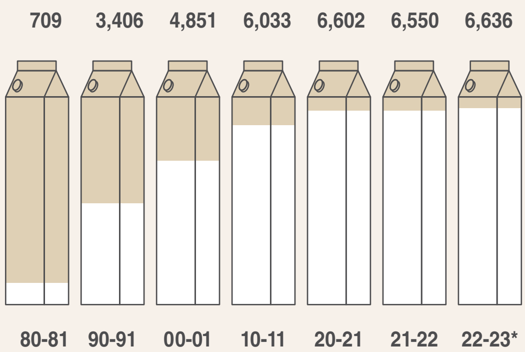

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य

महायोग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
1,747	7,482	10,738	14,464	18,185	17,552	17,441

* अनंतिम
** रिपोर्ट नहीं मिली
2020-21 के बाद के आंकड़ों में एमपीओ के सदस्य और एमडीएफवीपीएल के एमपीजी शामिल हैं

स्रोत: दूध संघ एवं महसंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

उत्तर

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
हरियाणा	33	94	276	511	590	544	481
हिमाचल प्रदेश		14	24	60	92	107	109
जम्मू एवं कश्मीर		11	**	**	92	122	116
पंजाब	75	394	912	1,037	2,155	2,224	2,150
राजस्थान	138	364	887	1,629	3,613	3,984	4,284
उत्तर प्रदेश	64	382	791	504	1,330	1,630	1,437
उत्तराखंड					189	201	187
क्षेत्रीय कुल	**310**	**1,259**	**2,890**	**3,741**	**8,061**	**8,811**	**8,762**

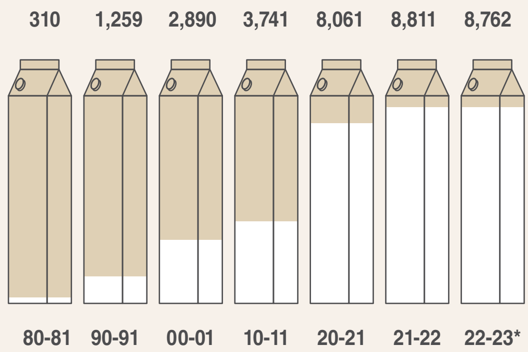

क्षेत्रवार दूध संकलन

पूर्व

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
असम		4	3	5	29	43	48
बिहार	3	95	330	1,091	1,505	1,295	1,764
झारखंड				5	134	154	185
मणिपुर						3	4
मेघालय					14	14	13
मिजोरम					5	4	3
नागालैंड		1	3	2	3	3	3
ओडिशा		41	94	276	366	416	410
सिक्किम		4	7	12	40	53	52
त्रिपुरा		3	1	2	7	5	5
पश्चिम बंगाल	31	52	204	273	203	180	231
क्षेत्रीय कुल	**34**	**200**	**642**	**1,666**	**2,305**	**2,170**	**2,719**

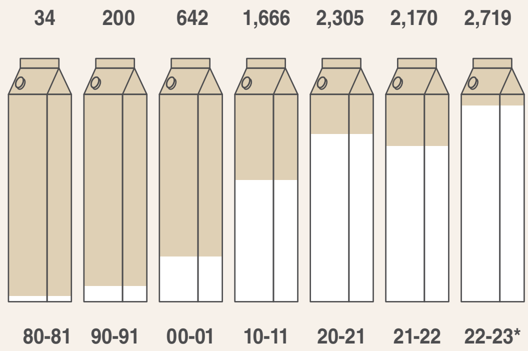

क्षेत्रवार दूध संकलन

पश्चिम

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
छत्तीसगढ				25	68	66	58
गोवा		16	32	38	55	55	49
गुजरात	1,344	3,102	4,567	9,158	25,237	27,393	26,975
मध्य प्रदेश	68	256	319	588	954	981	926
महाराष्ट्र	165	1,872	2,979	3,053	3,751	3,865	3,607
क्षेत्रीय कुल	**1,577**	**5,246**	**7,897**	**12,862**	**30,065**	**32,360**	**31,614**

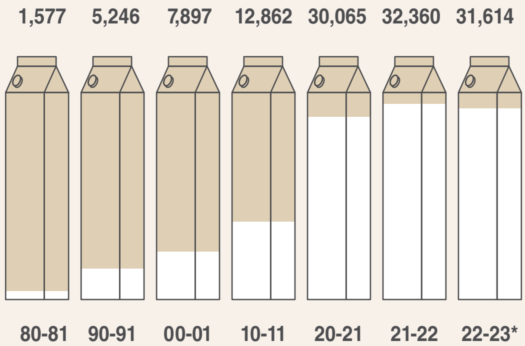

क्षेत्रवार दूध संकलन

दक्षिण

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
आंध्र प्रदेश	79	763	879	1,371	1,742	1,986	2,243
कर्नाटक	261	917	1,887	3,742	7,879	8,158	8,030
केरल		185	646	688	1,388	1,565	1,438
तमिलनाडु	301	1,106	1,618	2,097	3,709	3,600	3,541
तेलंगाना					461	460	490
पुदुचेरी		26	45	35	60	68	68
क्षेत्रीय कुल	**641**	**2,997**	**5,075**	**7,932**	**15,240**	**15,836**	**15,809**

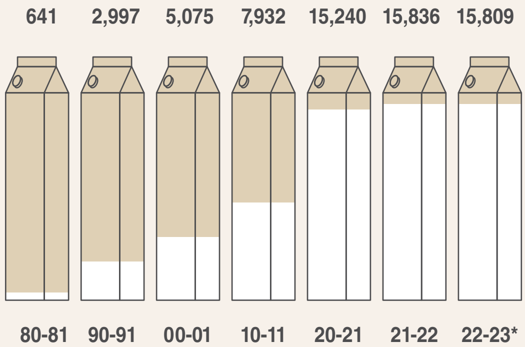

क्षेत्रवार दूध संकलन

महायोग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
2,562	**9,702**	**16,504**	**26,202**	**55,672**	**59,178**	**58,904**

राज्य के बाहर के परिचालन शामिल है
* अनंतिम
** रिपोर्ट नहीं मिली
2022-23 में गुजरात के कुल दूध संकलन में राज्य के बाहर से 4,871 हकिग्राप्रदि शामिल है और 2021-22, में यह आंकडा 4,240 हकिग्राप्रदि था
2020-21 के बाद के आंकडों में एमडीएफवीपीएल के एमपीओ और एमपीजी का संकलन शामिल है

स्रोत: दूध संघ एवं महसंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

तरल दूध का विपणन

उत्तर

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
हरियाणा	2	80	108	362	289	307	331
हिमाचल प्रदेश		15	20	23	25	25	28
जम्मू एवं कश्मीर		9	**	**	99	98	121
पंजाब	7	139	420	802	1,013	1,111	1,213
राजस्थान	12	136	540	1,505	2,129	2,333	2,885
उत्तर प्रदेश	1	326	436	380	1,444	1,675	1,903
उत्तराखंड					161	164	163
दिल्ली	697	1,051	1,524	3,050	6,647	6,952	7,526
क्षेत्रीय कुल	**719**	**1,756**	**3,048**	**6,122**	**11,806**	**12,665**	**14,170**

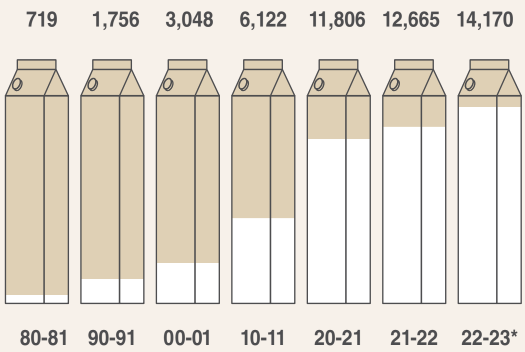

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन

पूर्व

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
असम		10	7	22	59	64	74
बिहार	8	111	324	454	1,269	1,464	1,547
झारखंड				253	374	418	447
मणिपुर						5	4
मेघालय					13	12	13
मिजोरम					4	4	3
नागालैंड		1	4	3	6	5	5
ओडिशा		65	98	290	324	326	350
सिक्किम		5	7	17	44	47	46
त्रिपुरा		6	7	15	9	7	7
पश्चिम बंगाल	17	26	27	41	83	93	108
कोलकाता	283	526	840	644	1,207	1,295	1,315
क्षेत्रीय कुल	**308**	**750**	**1,314**	**1,739**	**3,392**	**3,740**	**3,917**

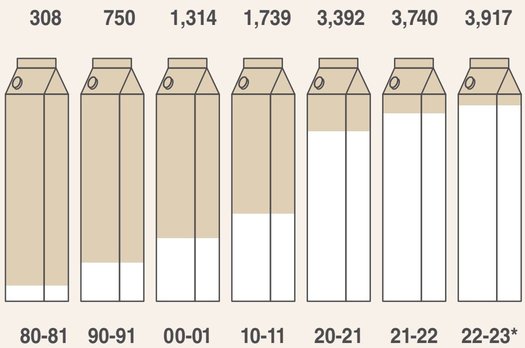

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन

पश्चिम

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
छत्तीसगढ				34	176	199	242
गोवा		36	83	69	57	58	50
गुजरात	210	1,052	1,905	3,237	5,663	6,044	6,419
मध्य प्रदेश	39	279	244	495	800	854	952
महाराष्ट्र	18	363	1,178	2,023	1,641	1,783	1,929
मुंबई	950	1,057	1,390	841	2,650	2,849	3,028
क्षेत्रीय कुल	**1,217**	**2,787**	**4,800**	**6,699**	**10,986**	**11,786**	**12,620**

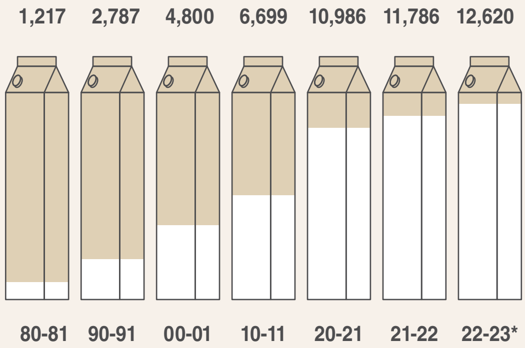

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन

दक्षिण

(हजार किलोग्राम प्रतिदिन में)#

क्षेत्र/राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
आंध्र प्रदेश	19	552	733	1,565	1,346	1,352	1,397
कर्नाटक	166	889	1,501	2,661	4,261	4,472	5,041
केरल		223	640	1,092	1,315	1,429	1,590
तमिलनाडु	109	405	559	989	1,175	1,306	1,500
तेलंगाना					878	934	966
पुदुचेरी		22	43	93	92	93	92
चेन्नई	245	662	725	1,025	1,220	1,308	1,381
क्षेत्रीय कुल	**539**	**2,753**	**4,201**	**7,425**	**10,286**	**10,893**	**11,967**

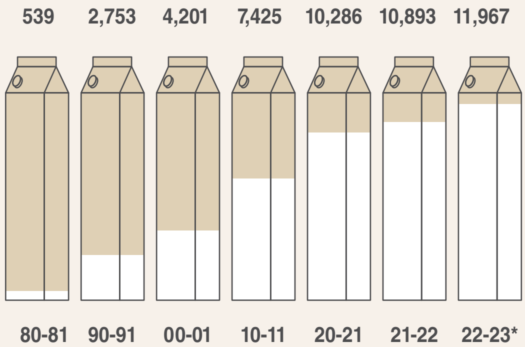

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन

महायोग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	21-22	22-23*
2,783	8,046	13,363	21,985	36,470	39,085	42,673

मेट्रो डेरियों तथा राज्य के बाहर के परिचालन शामिल हैं

* अनंतिम ** रिपोर्ट नहीं मिली

2022-23 में, गुजरात की कुल दूध बिक्री 15,827 हलीप्रदि है जिसमें राज्य के बाहर के आंकडे शामिल है और 2021-22 में, यही आंकडा 14,437 हलीप्रदि था

2010-11 में, यही महाराष्ट्र के दूध संघो द्वारा मुंबई में बेची गई मात्रा का विवरण उपलब्ध नहीं है

2020-21 के बाद के आंकड़ों में एमपीओ और एमडीएफवीपीएल की बिक्री शामिल है

स्रोत: दूध संघ एवं महसंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

देश में डेरी अवसंरचना

डेरी सहकारिताओं की कोल्ड चेन अवसंरचना (क्षमता)*

उत्तर

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
दिल्ली	-	-	1,500
हरियाणा	494	454	7,525
हिमाचल प्रदेश	136	80	150
जम्मू एवं कश्मीर	212	200	150
पंजाब	2,278	1,095	3,085
राजस्थान	4,471	2,349	5,120
उत्तर प्रदेश	1,817	2,067	5,370
उत्तराखंड	77	60	256
क्षेत्रीय कुल	**9,485**	**6,305**	**23,156**

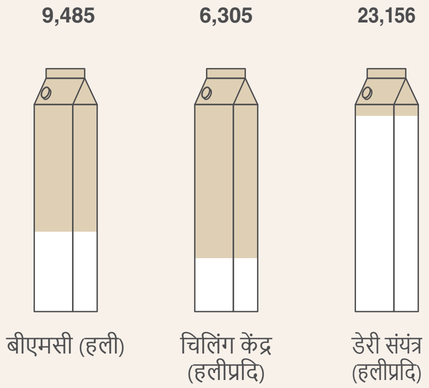

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता

पूर्व

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
असम	88	-	60
बिहार	2,229	414	3,920
झारखंड	252	-	790
मणिपुर	13	-	20
मेघालय	6	-	50
मिजोरम	11	-	35
नागालैंड	2	-	10
ओडिशा	909	95	1,200
सिक्किम	48	-	105
त्रिपुरा	19	-	24
पश्चिम बंगाल	205	123	1,274
क्षेत्रीय कुल	**3,782**	**632**	**7,488**

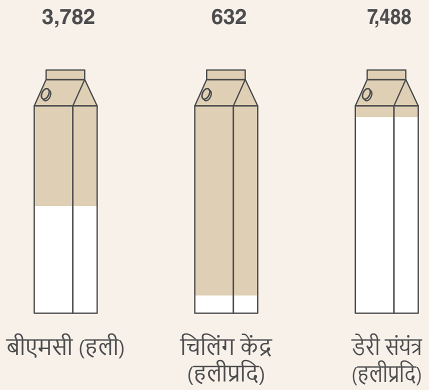

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता

पश्चिम

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
छत्तीसगढ	100	71	160
गोवा	42	-	110
गुजरात	26,923	6,590	33,515
मध्य प्रदेश	1,759	647	1,896
महाराष्ट्र	2,450	2,590	13,430
क्षेत्रीय कुल	**31,274**	**9,898**	**49,111**

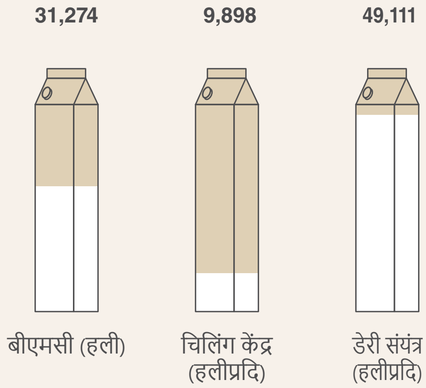

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता

दक्षिण

(मार्च 2023)^

क्षेत्र/राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
आंध्र प्रदेश	2,646	1,039	3,155
कर्नाटक	6,489	3,450	10,890
केरल	1,614	115	3,075
तमिलनाडु	2,410	1,455	4,613
तेलंगाना	903	363	1,475
पुदुचेरी	65	-	120
क्षेत्रीय कुल	**14,127**	**6,422**	**23,328**

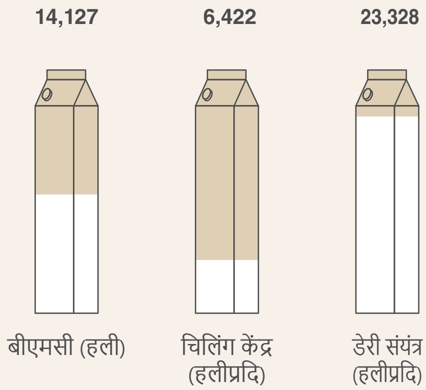

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता

महायोग

58,668
बीएमसी (हली)

23,257
चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)

1,03,080
डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)

* अनंतिम
हली: हजार लीटर
हलीप्रदि: हजार लीटर प्रतिदिन
^एमपीसी और एमडीएफवीपीएल के स्वामीत्व वाला बुनियादी ढांचा शामिल है

स्रोत: दूध संघ एवं महसंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

आगंतुक

वित्त वर्ष 2022-2023 के दौरान, एनडीडीबी में भारत और विदेश से 2,252 अतिथि पधारे।

श्री के अयुकावा, कार्यकारी उपाध्यक्ष मारुति सुजुकी

श्री मार्टिन बर्क, सीईओ, इंटरनेशनल कमिटी फॉर एनिमल रिकार्डिंग, द नीदरलैंड

श्री ब्रायन लिंडसे, निदेशक, डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क

श्री एडोल्फ़ो ओरिव, सीईओ टेट्रा पैक

डॉ. जो रुडेक, टीम लीडर व वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री जॉन टौज़ेल, वरिष्ठ निदेशक एवं डॉ. जो मैकफैडेन, सहायक प्रोफेसर, कॉर्नेल यूनिवर्सिटी, एन्वायरमेंटल डिफेंस फंड

सुश्री किरण करामिल, एग्रिकल्चर काउंसलर, श्री चार्ल्स मैकएल्होन, श्री कार्ल एलिस एवं सुश्री जैनीन वालर, ऑस्ट्रेलियन हाई कमीशन

श्री धर्मपाल सिंह, माननीय पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार

श्री तागे टाकी, माननीय पशुपालन, पशु चिकित्सा और डेरी विकास (AHV&DD) मंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार

श्री कुलदीप सिंह धालीवाल, माननीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेरी विकास मंत्री, पंजाब सरकार

श्री गैब्रियल पांडुरेनी सिनिम्बो, उच्चायुक्त, नामीबिया

सुश्री मार्गरेट किबोगी, प्रबंध निदेशक, केन्या डेरी बोर्ड

श्री राजेश कुमार सिंह, सचिव, पशुपालन एवं डेयरी, भारत सरकार

लेखा-जोखा

केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)

स्वतंत्र लेखा परीक्षक की रिपोर्ट

प्रति
निदेशक मंडल
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा पर रिपोर्ट

मत

1. हमने राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ("एनडीडीबी") के संलग्न वित्तीय विवरणों लेखा परीक्षा की है, जिसमें 31 मार्च, 2023 की स्थिति में तुलन पत्र, उसी तारीख को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय लेखों और नकदी-प्रवाह विवरण और महत्वपूर्ण लेखा नीतियों के सार तथा अन्य स्पष्टीकरण विवरणों ("वित्तीय विवरण") सहित वित्तीय विवरणों की टिप्पणियां शामिल हैं।

2. हमारे मत में और हमें प्राप्त सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार, उपर्युक्त ये वित्तीय विवरण राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 ("अधिनियम"), जो राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (निधि, लेखा और बजट का संचालन) विनियम, 1988 ("विनियमन") के साथ पठित हैं, अपेक्षित जानकारी प्रदान करते हैं तथा इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया ("ICAI") द्वारा अधिसूचित लेखा मानकों और भारत में आम तौर पर स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुरूप, 31 मार्च, 2023 तक एनडीडीबी के कामकाज की स्थिति और तब समाप्त वर्ष के लिए इसके अधिशेष तथा इसके नकदी-प्रवाह का वास्तविक एवं स्पष्ट विवरण प्रस्तुत करते हैं।

मत का आधार

3. हमने अपनी लेखा परीक्षा आईसीएआई द्वारा जारी लेखा परीक्षा मानकों ("SAs") के अनुसार की है। इन मानकों के अंतर्गत हमारी जिम्मेदारियों का विवरण हमारी रिपोर्ट के वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा वाले खंड में लेखा परीक्षकों की जिम्मेदारियों में दिया गया है। हम इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया ("ICAI") द्वारा जारी आचार संहिता के अनुसार एनडीडीबी से स्वतंत्र हैं, साथ ही नैतिक आवश्यकताओं के साथ जो विनियमन के प्रावधानों के तहत वित्तीय विवरणों के हमारे ऑडिट के लिए प्रासंगिक हैं, और हमने इन अपेक्षाओं और आचार संहिता के अनुसार अपनी नैतिक जिम्मेदारियां पूरी की हैं। हमारा विश्वास है कि जो लेखा परीक्षा साक्ष्य हमने प्राप्त किए हैं वे हमारे मत - वित्तीय विवरणों को आधार देने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त हैं।

अन्य सूचनाएं

4. अन्य सूचनाओं को तैयार करने का दायित्व एनडीडीबी के प्रबंधन और निदेशक मंडल का है जिसमें सूचनाएं जैसे निदेशक मंडल की रिपोर्ट और एनडीडीबी की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल अन्य प्रकटन शामिल हैं, परंतु वित्तीय विवरण और उस पर हमारे लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट शामिल नहीं है। अन्य सूचनाएं इस लेखा परीक्षक की रिपोर्ट की तारीख के बाद हमें उपलब्ध कराए जाने की आशा है।

5. वित्तीय विवरणों पर हमारे मत में अन्य सूचना शामिल नहीं है और हम उस पर किसी भी प्रकार का कोई आश्वासन अथवा निष्कर्ष व्यक्त नहीं करते हैं।

6. वित्तीय विवरणों की हमारी लेखा परीक्षा के संदर्भ में हमारा यह दायित्व है कि हम अन्य सूचना पढ़ें और ऐसा करते समय यह देखें कि अन्य सूचना वित्तीय विवरणों से अथवा लेखा परीक्षा के दौरान हमें प्राप्त हुई जानकारी से किसी महत्वपूर्ण मामले में असंगत तो नहीं है अथवा उसमें अन्यथा कोई महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुति तो नहीं दिखती। यदि, हमारे द्वारा किए गए कार्य के आधार पर, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि इस अन्य जानकारी का एक भौतिक गलत बयान है, तो हमें उस तथ्य की रिपोर्ट करने की आवश्यकता है।

सनसाइन टॉवर, लेवल 19, सेनापती बापट मार्ग, एलफिस्टन रोड, मुंबई - 400013, भारत
दूरभाष: +91 22 6143 7333 ईमेल: info@kkcllp.in वेबसाइट: www.kkcllp.in | LLPIN-AAP-2267

सूट 52, बॉम्बे म्युचुअल भवन, सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, मुंबई - 400001, भारत

वित्तीय विवरणों के लिए प्रबंधन का उत्तरदायित्व

7. प्रबंधन एवं एनडीडीबी के निदेशक मंडल का उत्तरदायित्व है कि वे विनियम के अनुसार इन वित्तीय विवरणों को इस प्रकार तैयार करें, जो एनडीडीबी की वित्तीय स्थिति, वित्तीय निष्पादन और नकदी-प्रवाह का वास्तविक और निष्पक्ष चित्र प्रस्तुत करते हों। इस दायित्वों में एनडीडीबी की परिसंपत्ति की सुरक्षा के लिए और धोखाधड़ी एवं अन्य अनियमितताओं को रोकने तथा उनका पता लगाने के लिए पर्याप्त लेखा अभिलेखों का रख-रखाव करना; उचित लेखा नीतियों का चयन करना और उन्हें लागू करना, उचित और विवेकपूर्ण निर्णय और आकलन करना तथा लेखा अभिलेखों की सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी ढंग से काम कर रहे पर्याप्त ऐसे आंतरिक वित्तीय नियंत्रणों की रूपरेखा तैयार करना, उनका कार्यान्वयन और रखरखाव करना शामिल हैं जिनका परिचालन वित्तीय विवरणों को इस प्रकार तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए अपेक्षित था कि वे धोखाधड़ी या त्रुटि के कारण किसी महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों से मुक्त वास्तविक और निष्पक्ष चित्रण करने वाले एक आधार पर तैयार वित्तीय विवरणों को तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए संगत लेखा अभिलेखों की शुद्धता और पूर्णता सुनिश्चित कर सकें।

8. वित्तीय विवरणों को तैयार करते समय, प्रबंधन और निदेशक मंडल एनडीडीबी की क्षमता का आकलन करने के लिए भी जिम्मेदार हैं, जैसा कि वर्तमान सरोकार के रूप में जारी रखने की लागू हो, सरोकार करने और लेखांकन के वर्तमान सरोकार के आधार का उपयोग करने से संबंधित मुद्दों को प्रकट करते हैं, जब तक कि प्रबंधन या तो एनडीडीबी को परिसमाप्त करने या परिचालनों को बंद करने की मंशा नहीं रखती है, या ऐसा करने के अलावा कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं होता है।

9. एनडीडीबी की वित्तीय रिपोर्टिंग प्रक्रिया की देख-रेख के लिए निदेशक मंडल भी जिम्मेदार हैं।

वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा के लिए लेखा परीक्षक का उत्तरदायित्व

10. हमारा उद्देश्य इस बात का तर्क पर आधारित आश्वासन प्राप्त करना है कि वित्तीय विवरण पूर्णतः धोखाधड़ी अथवा त्रुटि के कारण होने वाले किसी महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों से मुक्त हैं। अन्य उद्देश्य लेखा परीक्षा रिपोर्ट जारी करना है जिसमें हमारा मत शामिल हो। तर्क पर आधारित आश्वासन उच्च स्तरीय आश्वासन है। लेकिन इस बात की गारंटी नहीं है कि लेखांकन मानदंडों के अनुसार संचालित लेखा परीक्षा किसी विद्यमान महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों का हमेशा पता लगा ही लेगी। गलत प्रस्तुतियां धोखाधड़ी अथवा त्रुटि से उत्पन्न हो सकती हैं और उन्हें महत्वपूर्ण तब माना जाता है जब वे व्यक्तिगत रूप से या पूर्ण रूप से इन विवरणों के आधार पर उपयोगकर्ताओं द्वारा लिए जाने वाले आर्थिक निर्णयों को एक तर्कपूर्ण सीमा तक प्रभावित कर सकती हों।

11. लेखा मानकों के अनुसार, लेखा परीक्षा के एक भाग के रूप में, हम लेखा परीक्षा के दौरान व्यावसायिक निर्णय क्षमता का प्रयोग करते हैं और व्यावसायिक संदेहवाद बनाए रखते हैं। साथ ही:

    11.1 हम धोखाधड़ी अथवा त्रुटि के कारण वित्तीय विवरणों की महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों के जोखिमों की पहचान और आकलन करते हैं, उन जोखिमों के जवाब में लेखा परीक्षा कार्य पद्धतियों की रूपरेखा तैयार करते हैं और उनका कार्यान्वयन करते हैं और महत्वपूर्ण मदों के लिए ऐसा लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त करते हैं जो मत के लिए आधार प्रदान करने की दृष्टि से पर्याप्त और उपयुक्त हो। धोखाधड़ी के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों का पता न लगाने का जोखिम त्रुटि के परिणामस्वरूप होने वाले जोखिम से बड़ा होता है क्योंकि धोखाधड़ी में मिलीभगत, जालसाजी, गलत मंशा से उपेक्षा करना, गलत प्रस्तुतियां इत्यादि शामिल हो सकते हैं या आंतरिक नियंत्रणों की अवहेलना की गई हो सकती है।

    11.2 हम लेखा परीक्षा के लिए संगत आंतरिक नियंत्रण की समझ प्राप्त करते हैं। ऐसा मौजूदा परिस्थितियों के लिए उचित लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करने के लिए किया जाता है न कि एनडीडीबी के आंतरिक नियंत्रण की प्रभावकारिता पर अपना मत व्यक्त करने के लिए।

11.3 हम प्रबंधन द्वारा उपयोग में लाई जा रही लेखांकन नीतियों की उपयुक्तता और लेखांकन अनुमानों तथा संबंधित प्रकटनों के औचित्य का मूल्यांकन करते हैं।

11.4 हम लेखांकन के 'निरंतर चल रही संस्था' आधार के प्रबंधन द्वारा उपयोग की उपयुक्तता पर निष्कर्ष निकालते हैं और प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य के आधार पर यह देखते हैं कि क्या किसी ऐसी घटना या परिस्थिति से जड़ी कोई महत्वपूर्ण अनिश्चितता विद्यमान है जो 'निरंतर चलने वाली संस्था' के रूप में एनडीडीबी की क्षमता पर उल्लेखनीय संदेह पैदा करती हो। यदि हमारा निष्कर्ष यह होता है कि ऐसी महत्वपूर्ण अनिश्चितता विद्यमान है तो हमसे यह अपेक्षित होता है कि हम अपनी लेखा परीक्षा रिपोर्ट में वित्तीय विवरणों में संबंधित प्रकटनों की ओर ध्यान आकृष्ट करें, अथवा यदि ऐसे प्रकटन अपर्याप्त हैं तो अपने मत को संशोधित करें। हमारे निष्कर्ष हमारी लेखा परीक्षा रिपोर्ट की तारीख तक प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य पर आधारित होते हैं. तथापि भविष्यगत घटनाएं या परिस्थितियां एनडीडीबी के 'निरंतर चलने वाली संस्था' नहीं बने रहने का कारण बन सकती हैं।

11.5 हम प्रकटनों सहित वित्तीय विवरणों की समग्र प्रस्तुति, संरचना और उनमें निहित विषय-वस्तु का मूल्यांकन करते हैं और देखते हैं कि क्या वित्तीय विवरण अंतर्निहित लेन-देनों और घटनाओं को इस तरह अभिव्यक्त करते हैं कि निष्पक्ष प्रस्तुति का उद्देश्य पूरा हो।

11.6 हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को, अन्य बातों के साथ-साथ, लेखा परीक्षा के दायरे और समय की योजना तथा उल्लेखनीय लेखा परीक्षा निष्कर्ष संप्रेषित करते हैं जिनमें आंतरिक नियंत्रण में उन महत्वपूर्ण कमियों को शामिल किया जाता है जो हमारी लेखा परीक्षा के दौरान पहचान में आती हैं. हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को ऐसा अभिकथन भी उपलब्ध कराते हैं कि हमने अपनी निष्पक्षता और हमारी निष्पक्षता को उचित रूप से प्रभावित करने वाले माने जाने वाले सभी संबंधों तथा अन्य विषयों को उन्हें संप्रेषित करने के संबंध में, और जहां प्रयोजनीय हो वहां संबंधित रक्षा के उपायों के बारे में सभी संगत नैतिक अपेक्षाओं का पालन किया है।

11.7 हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को संप्रेषित मदों के आधार पर ऐसी मदों को निर्धारित करते हैं जो चालू अवधि के वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हों और इस कारण वे प्रमुख लेखा परीक्षा मदें हों। हम इन मदों को अपनी लेखा परीक्षा रिपोर्ट में वर्णित करते हैं जब तक कि विधि या विनियम द्वारा उन मदों के बारे में सार्वजनिक प्रकटन को निषेध न किया गया हो, या जब विशेष परिस्थितियों में हम यह तय करें कि हमें अपनी रिपोर्ट में उस मद को संप्रेषित नहीं करना चाहिए क्योंकि संप्रेषित करने से सार्वजनिक हित को होने वाले संभावित लाभ ऐसे सम्प्रेषण के प्रतिकूल परिणामों की अपेक्षा कम होगा।

अन्य विधिक और विनियामक आवश्यकताओं पर रिपोर्ट

12. एनडीडीबी का तुलन पत्र और आय एवं व्यय लेखा विनियमन के अध्याय VI की अनुसूची "I" और अनुसूची "II" के अनुसार तैयार किया गया है।

जैसा कि इसके अंतर्गत विहित विनियमन के प्रावधानों द्वारा अपेक्षित है, हम आगे रिपोर्ट यह करते हैं कि:

12.1 हमने उन सभी सूचनाओं और स्पष्टीकरणों की मांग की है और प्राप्त किए हैं जो हमारे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के लिए हमारे लेखा परीक्षा के प्रयोजनों के लिए आवश्यक थे।

12.2 एनडीडीबी के लेन-देन, जो हमारी लेखा परीक्षा के दौरान हमारे ध्यान में आए हैं, एनडीडीबी की शक्तियों के भीतर रहे हैं।

12.3 हमारे मत के अनुसार, इस रिपोर्ट द्वारा निष्पादित वित्तीय विवरण लेखा बही खातों के अनुरूप हैं।

12.4 हमारे मत के अनुसार, वित्तीय विवरण लागू लेखांकन मानकों का अनुपालन करते हैं।

केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)
फर्म पंजीकरण सं.: 105146W/W100621

हसमुख बी डेढ़िया
साथी
आईसीएआई सदस्यता संख्या: 033494
यूडीआईएन: 23033494BGWSUO6721

स्थान: मुंबई
दिनांक: 07 जुलाई 2023

तुलनपत्र

31 मार्च, 2023 का

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	31.03.2023	31.03.2022
देयताएं			
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड निधि	I	32,763.64	32,288.49
सुरक्षित ऋण	II	23,158.99	9,888.03
चालू देयताएं और प्रावधान	III	7,641.85	10,233.00
आस्थगित कर देयताएं	XVI (नोट 8)	279.69	256.40
योग		**63,844.17**	**52,665.92**
परिसंपत्तियाँ			
नकद और बैंक शेष	IV	15,207.92	14,452.80
वस्तुसूची	V	0.31	0.55
विविध देनदार		182.88	117.50
ऋण, अग्रिम और अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	VI	24,450.34	15,046.77
निवेश	VII	22,269.11	21,313.81
सम्पत्ति, संयंत्र तथा उपकरण	VIII	1,733.61	1,734.49
कुल		**63,844.17**	**52,665.92**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियां जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XV		
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XVI		

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)
फर्म की पंजीकरण सं. 105146W/W-100621

हँसमुख बी डेढ़िया
भागीदार
सदस्यता संख्या 033494

स्थान: मुंबई
दिनांक: 07 जुलाई 2023

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक (संचालन)

अमित गोयल
उप ग्रुप प्रमुख (लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 07 जुलाई 2023

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ('एनडीडीबी' या 'बोर्ड')
(राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित एक निगमित निकाय)

आय एवं व्यय लेखा-जोखा

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष का

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	2022-23	2021-22
आय			
ब्याज		2,682.90	2,592.30
सेवा प्रभार	IX	321.94	229.77
किराया और हायर चार्ज		236.69	220.67
लाभांश		347.05	310.92
अन्य आय	X	671.25	87.51
योग (क)		**4,259.83**	**3,441.17**
व्यय			
ब्याज और वित्तीय प्रभार		710.37	673.50
पारिश्रमिक एवं कार्मिकों को लाभ	XI	1,081.59	1,101.70
प्रशासनिक व्यय	XII	195.78	111.86
अनुदान		325.66	10.29
अनुसंधान एवं विकास		123.58	107.14
परिसंपत्तियों का रख-रखाव	XIII	233.83	178.64
प्रशिक्षण खर्च		236.50	41.65
कंप्यूटर खर्च		22.46	20.73
अन्य व्यय	XIV	94.88	72.45
मानक परिसंपत्ति, एनपीए और आकस्मिकता के लिए प्रावधान		300.00	250.00
मूल्यह्रास	VIII	193.57	187.08
योग (ख)		**3,518.22**	**2,755.04**
कर से पूर्व वर्ष के दौरान अधिशेष (ग) = (क-ख)		**741.61**	**686.13**
घटाइए : कराधान के लिए प्रावधान			
वर्तमान कर		226.22	259.30
आस्थगित कर	XVI (नोट 8)	23.28	(16.95)
कर के पश्चात् वर्ष के दौरान अधिशेष		**492.11**	**443.78**
घटाइए : विनियोजन-			
विशेष आरक्षित	XVI (नोट 13)	29.92	32.10
सामान्य निधि में ले जाई गई शेष राशि		462.19	411.68
योग (घ) = (ख+ग)		**4,259.83**	**3,441.17**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XV		
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XVI		

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)
फर्म की पंजीकरण सं. 105146W/W-100621

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

हँसमुख बी डेढ़िया
भागीदार
सदस्यता संख्या 033494

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक (संचालन)

अमित गोयल
उप ग्रुप प्रमुख (लेखा)

स्थान: मुंबई
दिनांक: 07 जुलाई 2023

स्थान: आणंद
दिनांक: 07 जुलाई 2023

नकदी-प्रवाह (कैश फ्लो) विवरण

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष का

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	2022-23		2021-22	
प्रचालन गतिविधियां से नकदी-प्रवाह					
वर्ष के दौरान कर से पूर्व अधिशेष			**741.61**		**686.13**
समायोजन निम्नलिखित के लिए:					
मूल्यह्रास		193.57		187.08	
मानक परिसंपत्ति, एनपीए और आकस्मिकता के लिए प्रावधान		300.00		250.00	
निवेशों की बिक्री पर (लाभ)/हानि		(10.61)		(2.43)	
सावधि जमा एवं बांड पर ब्याज आय को अलग माना जाए		(1,850.24)		(1,780.44)	
लाभांश आय को अलग माना जाए		(347.05)		(310.93)	
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री (लाभ)/हानि को अलग माना जाए		(148.57)		(10.49)	
स्वीकृत परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति		(17.10)		(21.31)	
कर्मचारी सेवा निवृत्ति लाभ		34.97		151.98	
बैंक को देय ब्याज तथा वित्तीय प्रभार		60.77		6.91	
बांड तथा राज्य विकास ऋणों पर परिशोधित प्रीमियम		44.82	(1,739.44)	43.71	(1,485.91)
			(997.83)		**(799.78)**
कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन नकदी-प्रवाह					
वस्तुसूची में (वृद्धि)/कमी		0.25		0.49	
विविध देनदारों में (वृद्धि)/कमी		(65.39)		24.31	
ऋणों एवं अग्रिमों में (वृद्धि)/कमी		(9,400.98)		960.43	
वर्तमान देयताओं में वृद्धि/(कमी)		(2,926.10)	(12,392.22)	(537.95)	447.28
प्रचालन गतिविधियों से अर्जित/(प्रयुक्त) नकदी-प्रवाह			**(13,390.05)**		**(352.50)**
कर वापस किया/(प्रदत)			(193.56)		(277.31)
प्रचालन गतिविधियों से अर्जित/(प्रयुक्त) निवल नकदी-प्रवाह (क)			**(13,583.61)**		**(629.81)**
निवेश गतिविधियों से नकदी- प्रवाह					
ब्याज से आय		1,814.98		1936.64	
लाभांश आय		347.05		310.92	
निवेशों (बॉन्डस) की परिपक्वता से प्राप्त लाभ		250.00		351.45	
निवेशों की खरीद (शेयर)		(915.00)		-	
निवेशों की खरीद (बॉन्डस एवं राज्य विकास ऋण)		(324.51)		(1,428.54)	
90 दिनों से अधिक बैंकों में रखे एफडीआर में कमी/(वृद्धि) (निवल)		4,099.00		(1,801.05)	
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री से लाभ		193.46		10.58	
स्थायी परिसंपत्ति की खरीद के लिए प्राप्त अनुदान (अनुदान वापस किया)		0.14		(2.86)	
स्थायी परिसंपत्ति की खरीद		(237.58)		(98.75)	
निवेश गतिविधियों में अर्जित/(प्रयुक्त) निवल नकदी-प्रवाह (ख)			**5,227.54**		**(721.61)**
वित्तीय गतिविधियों से नकदी-प्रवाह					
उधार निधियों की प्राप्ति/(पुन: भुगतान)			13,270.96		318.71
बैंकों को देय ब्याज एवं वित्तीय प्रभार			(60.77)		(6.91)
वित्तीय गतिविधियों से निवल नकदी-प्रवाह (ग)			**13,210.19**		**311.80**
वर्ष के दौरान निवल नकदी-प्रवाह (क + ख + ग)			**4,854.12**		**(1,039.62)**
वर्ष के आरंभ में नकद एवं नकद समतुल्य			**2,277.05**		**3,316.67**
वर्ष के अंत में नकद एवं नकद समतुल्य			**7,131.17**		**2,277.05**
नकद और नकद समतुल्य					
बैंकों के पास शेष:					
सावधि जमा			12,816.56		14,324.53
घटाइए: 90 दिनों से अधिक मूल परिपक्वता सहित जमा			8,076.75		12,175.75
			4,739.81		**2,148.78**
चालू/बचत खातों में			2,391.33		128.24
नकद एवं चेक इन हैंड			0.03		0.03
योग			**7,131.17**		**2,277.05**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	**XV**				
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	**XVI**				

टिप्पणी: नकदी-प्रवाह विवरण लेखा मानक - 3 के नकदी-प्रवाह विवरण में दिए गए 'अप्रत्यक्ष तरीके' से तैयार किया गया है।

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)
फर्म की पंजीकरण सं. 105146W/W-100621

हँसमुख बी डेढ़िया
भागीदार
सदस्यता संख्या 033494

स्थान: मुंबई
दिनांक: 07 जुलाई 2023

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक (संचालन)

अमित गोयल
उप ग्रुप प्रमुख (लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 07 जुलाई 2023

एनडीडीबी निधि

संलग्नक - I

मिलियन रुपये में

विवरण		31.03.2023		31.03.2022
सामान्य आरक्षित (टिप्पणी क)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष		3,559.61		3,559.61
स्थायी परिसंपत्तियों के लिए अनुदान (टिप्पणी ख)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	56.40		80.57	
जोड़िए : वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	0.14		2.19	
घटाइए : वर्ष के दौरान वापस किया गया अनुदान	-		5.05	
घटाइए : मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति	17.10		21.31	
		39.44		56.40
आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36 (1) (viii) के अन्तर्गत विशेष आरक्षित (अनुलग्नक XVI का नोट 13 देखें)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	1,594.32		1,562.22	
जोड़िए : आय एवं व्यय लेखा से अंतरण	29.92		32.10	
		1,624.24		**1,594.32**
आय-व्यय का लेखा-जोखा				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	27,078.16		26,666.48	
जोड़िए: वर्ष के दौरान विनियोजन के बाद अधिशेष	462.19		411.68	
		27,540.35		27,078.16
योग		**32,763.64**		**32,288.49**

टिप्पणी:

क. राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अनुसार डेरी एवं अन्य कृषि आधारित तथा संबद्ध उद्योगों एवं जैविकों को प्रोत्साहित करना, योजना बनाना एवं कार्यक्रमों का आयोजन करना।

ख. लेखा मानक - 12 के अनुरूप - 'सरकारी अनुदानों के लेखे'

सुरक्षित ऋण

संलग्नक - II

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2023	31.03.2022
बैंक ओवरड्राफ्ट (बैंकों में सावधि जमा पर लीयन के प्रति सुरक्षित)	8,256.02	640.76
नाबार्ड से ऋण (डीआईडीएफ स्कीम के तहत दिए गए सुरक्षित ऋण)	14,902.65	9,247.27
उधार लिए गए ऋण पर अर्जित ब्याज (डीआईडीएफ)	0.32	-
योग	**23,158.99**	**9,888.03**

वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान

संलग्नक - III

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2023		31.03.2022	
(क) वर्तमान देयताएं				
अग्रिम एवं जमा		60.49		58.07
विविध लेनदार (अनुलग्नक XVI का नोट 10 देखें)		169.76		215.23
अन्य देनदारियां		152.72		150.79
परामर्श परियोजना के कारण निवल देयता				
प्राप्त निधियाँ	20,374.42		21,918.80	
जोड़िए : आपूर्तिकर्ताओं को व्यय हेतु देय	913.29		1,017.06	
	21,287.71		22,935.86	
घटाइए : व्यय हुई राशि	18,953.31		19,947.15	
आपूर्तिकर्ताओं को अग्रिम	420.66		117.12	
	1,913.74		2,871.59	
जोड़िए : एनडीडीबी को देय	41.97		141.17	
(पर कॉन्ट्रा अनुलग्नक VI देखें)		1,955.71		3,012.76
(ख) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधिः				
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष	4,179.02		3,583.16	
भारत सरकार से प्राप्त निधि	2,049.46		2,956.86	
जोड़िए : अर्जित ब्याज आय/(व्यय)	(19.13)		19.64	
घटाइए : किया गया खर्च	2,936.70		2,377.61	
घटाइए : अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियों को अग्रिम	535.42		0.84	
घटाइए : एनडीएलएम अंशदान अनुदान में अंतरण	0.14		2.19	
		2,737.09		4,179.02
(ग) निम्नलिखित के लिए प्रावधानः				
अनर्जक परिसंपत्तियां (अनुलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	559.34		816.58	
मानक परिसंपत्तियों पर सामान्य आकस्मिकता (अनुलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	93.67		51.79	
आकस्मिकता (अनुलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	1,755.25		1,497.87	
		2,408.26		2,366.24
(घ) निम्नलिखित हेतु प्रावधानः				
छुट्टी नकदीकरण (संलग्नक XVI की टिप्पणी 5 देखें)	48.35		99.27	
सेवा निवृत्ति पश्चात् चिकित्सा योजना (संलग्नक XVI की टिप्पणी 5 देखें)	109.45		110.75	
उपदान (संलग्नक XVI की टिप्पणी 5 देखें)	-		40.85	
वीआरएस मासिक लाभ	0.02		0.02	
		157.82		250.89
योग		**7,641.85**		**10,233.00**

नकद और बैंक शेष

संलग्नक - IV

मिलियन रुपये में

विवरण	**31.03.2023**		**31.03.2022**	
बैंकों में शेष				
सावधि जमा में (निम्नलिखित नोट क से ड. देखें)	12,816.56		14,324.53	
बचत खाते में (नीचे नोट च देखें)	2,343.59		-	
चालू खाते में (नीचे नोट छ देखें)	47.74		128.24	
		15,207.89		14,452.77
नकद एवं चेक ऑन हैंड		0.03		0.03
योग		**15,207.92**		**14,452.80**

नोट:

सावधि जमा में निम्नलिखित शामिल है -

(क) 10771.28 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 4613.92 मिलियन रूपये) राशि जो लियन के अंतर्गत ओवरड्राफ्ट सूविधा प्राप्त करने के लिए बैंक के पास रखी गई है।

(ख) 1000.01 मिलियन रूपये (610.50 मिलियन रूपये) जो डीआईडीएफ योजना के अंतर्गत प्राप्त ऋणों के लिए नाबार्ड के पक्ष में खोले गए डीएसआरए खाते के लिए लियन के अधीन है।

(ग) बैंक गारंटी अंतर राशि 0.05 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 0.05 मिलियन रूपये) शामिल है।

(घ) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए 376.31 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 3702.40 मिलियन रूपये) की निधि प्राप्त हुई।

(ड) एनडीएलएम परियोजना के लिए निर्धारित एनडीएलएम परियोजना में एनडीडीबी का शेयर 468.90 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 506.48 मिलियन रूपये) है।

(च) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए 2343.59 मिलियन रूपये की निधि प्राप्त हुई।

(छ) भारत सरकार की परियोजनाओं में चालू खातों में 23.19 मिलियिन रूपये (पूर्व वर्ष 110.55 मिलियन रूपये) की निधि प्राप्त हुई।

वस्तु सूची

संलग्नक - V

मिलियन रुपये में

विवरण	**31.03.2023**		**31.03.2022**	
स्टोर्स, स्पेयर्स और अन्य	1.43		1.67	
परियोजना उपकरण	3.19		3.19	
	4.62		4.86	
घटाइए : अप्रचलन के लिए प्रावधान	4.31		4.31	
		0.31		0.55
योग		**0.31**		**0.55**

ऋण, अग्रिम और अन्य वर्तमान संपत्ति

संलग्नक - VI

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2023		31.03.2022	
सहकारी संस्थाओं को ऋण				
दूध - सुरक्षित (निम्नलिखित नोट क एवं ख देखें)	18,972.57		10,475.43	
असुरक्षित	684.43		48.25	
		19,657.00		10,523.68
तेल - सुरक्षित	80.00		100.00	
असुरक्षित (उपार्जित ब्याज सहित)	578.57	658.57	805.03	905.03
सहायक कंपनियों/प्रबंधित इकाइयों को दिए गए ऋण एवं अग्रिम				
सुरक्षित (निम्नलिखित नोट क एवं ख देखें)	1,795.07		1,343.96	
असुरक्षित	662.98		523.27	
		2,458.05		1,867.23
कार्मिकों को ऋण				
सुरक्षित	0.13		0.20	
असुरक्षित	6.55		8.02	
		6.68		8.22
उपार्जित ब्याज पर -				
ऋण एवं अग्रिम	3.14		5.05	
सावधि जमा एवं निवेश	671.35		636.09	
		674.49		641.14
आपूर्तिकर्ताओं एवं ठेकेदारों को दिए गए अग्रिम		40.15		22.30
टर्नकी परियोजनाओं के लेखे पर वसूली योग्य		41.97		141.17
(पर कॉन्ट्रा, संलग्नक III देखें)				
विविध जमा		18.20		17.76
भुगतान किया गया आयकर (निवल प्रावधान) (नीचे नोट ग देखें)		733.39		766.05
प्रीपेड ग्रेच्युटी (अनुलग्नक XVI का नोट 5 देखें)		52.39		-
अन्य प्राप्तियां (नीचे नोट घ देखें)		109.45		154.19
योग		**24,450.34**		**15,046.77**

टिप्पणी :

(क) सुरक्षित ऋण परिसंपत्तियों के रेहन और/अथवा स्टॉक/परिसंपत्तियों के बंधन में रक्षित हैं।

(ख) सुरक्षित ऋण में 16775.18 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 8,301.42 मिलियन रुपये) डीआईडीएफ स्कीम के तहत दिए गए।

(ग) निवल कर का प्रावधान 2247.21 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 2020.99 मिलियन रुपये)

(घ) अन्य प्राप्तियों में जिसमें अनुदान राशि 26.01 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 2020.99 मिलियन रूपये) शामिल है, और एफयूसी की प्रतिक्षा है।

निवेश

संलग्नक - VII

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2023		31.03.2022	
दीर्घकालीन निवेश (लागत पर):				
सहायक कंपनियों में इक्विटी शेयर (अनकोटेड):				
मदर डेरी फ्रूट एन्ड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL)	2,500.00		2,500.00	
आईडीएमसी लिमिटेड (IDMC)	283.90		283.90	
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL)	90.00		90.00	
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS)	2,000.00		2,000.00	
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	95.00		-	
एनडीडीबी काफ लिमिटेड	750.00		-	
		5,718.90		4,873.90
संयुक्त उद्यम में इक्विटी शेयर (अनकोटेड):				
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (निम्नलिखित नोट क और घ देखें)		50.00		-
सरकारी कंपनियों, वित्तीय संस्थानों और बैंकों के बांड (कोटेड) (परिशोधित प्रीमियम के निवल मूल्य पर)		10,858.22		11,125.03
(तुलन-पत्र की तारीख के अनुसार बांड का कुल बाजार मूल्य 10,924.46 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 11,122.49 मिलियन रूपये) है)				
राज्य विकास ऋण (कोटेड) (परिशोधित प्रीमियम के निवल मूल्य पर)		5,603.09		5,295.98
(तुलन पत्र की तारीख के अनुसार राज्य विकास ऋण का कुल बाजार मूल्य 5,557.73 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 5387.76 मिलियन रूपये) है)				
सहकारिताओं और महासंघों में शेयर (अनकोटेड)	39.00		19.00	
(नीचे नोट ख देखें)				
घटाइए: निवेश के मूल्य में कमी का प्रावधान	0.10		0.10	
		38.90		18.90
योग		**22,269.11**		**21,313.81**

सहायक कंपनियों में निवेश का विवरण

मिलियन रुपये में

सहायक कंपनी का नाम	31.03.2023		31.03.2022	
	शेयर की संख्या	अंकित मूल्य (प्रति शेयर)	शेयर की संख्या	अंकित मूल्य (प्रति शेयर)
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL)	250,000,070	10.00	250,000,070	10.00
आईडीएमसी लिमिटेड (IDMC)	12,144,544	10.00	12,144,544	10.00
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) (नीचे नोट ग देखें)	54,000,042	10.00	9,000,007	10.00
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS)	200,000,000	10.00	200,000,000	10.00
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	9,500,000	10.00	-	-
एनडीडीबी काफ लिमिटेड (नीचे नोट घ देखें)	75,000,000	10.00	-	-
	600,644,656		**471,144,621**	

टिप्पणी :

(क) एनडीडीबी और असम सरकार (GoA) के बीच संयुक्त उद्यम कंपनी शामिल की गई।

(ख) नेशनल को-ऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड और भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड में प्रत्येक में 10 मिलियन रुपये का निवेश किया गया।

(ग) इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) ने 10 रुपये अंकित मूल्य के 4,50,00,035 बोनस शेयर जारी किए हैं।

(घ) शेयर प्रमाणपत्र/आईएसआईएन जारी करने की प्रक्रिया चल रही है।

संपत्ति, संयंत्र एवं उपकरण

संलग्नक - VIII

मिलियन रुपये में

विवरण	सकल कोष्ठ (लागत पर)				मूल्य ह्रास				निवल कोष्ठ	
	01.04.2022 को	जोड़िए	कटौतियाँ/ (समायोजन)	31.03.2023 को	01.04.2022 को	वर्ष के लिए	कटौतियाँ/ (समायोजन)	31.03.2023 को	31.03.2023 को	31.03.2022 को
पूर्ण स्वामित्व (फ्रीहोल्ड) भूमि (टिप्पणी 1 से 3 देखें)	456.45	-	43.96	412.49	-	-	-	-	412.49	456.45
पट्टाधृत (लीज़ होल्ड) भूमि	64.16	-	-	64.16	15.32	0.75	-	16.07	48.09	48.84
भवन और सड़कें	2,012.58	9.96	-	2,022.54	1,230.15	52.59	-	1,282.74	739.80	782.43
संयंत्र और मशीनरी	53.82	-	42.74	11.08	53.50	0.16	42.74	10.92	0.16	0.32
विद्‌तीय स्थापन	190.29	6.11	4.28	192.12	144.56	9.85	4.25	150.16	41.96	45.73
फर्नीचर, कंप्यूटर्स एवं अन्य उपकरण	1,093.86	80.27	19.57	1,154.56	879.24	102.04	18.67	962.61	191.95	214.62
सॉफ्टवेयर लाइसेंस	258.72	18.33	-	277.05	236.22	6.11	-	242.33	34.72	22.50
रेल दूध टैंकर्स	372.64	-	(3.00)	375.64	247.53	19.58	(3.00)	270.11	105.53	125.11
वाहन	23.00	5.14	2.25	25.89	19.91	2.49	2.25	20.15	5.74	3.09
योग	**4,525.52**	**119.81**	**109.80**	**4,535.53**	**2,826.43**	**193.57**	**64.91**	**2,955.09**	**1,580.44**	**1,699.09**
पूर्व वर्ष	***4,473.01***	***75.38***	***22.87***	***4,525.52***	***2,662.12***	***187.08***	***22.77***	***2,826.43***	***1,699.09***	***1,810.89***
पूँजी अग्रिम सहित पूँजीगत कार्य प्रगति पर है									153.17	35.40
कुल स्थायी परिसंपत्तियाँ									**1,733.61**	**1,734.49**

टिप्पणियां

1. तमिलनाडु सरकार से मुहंपका एवं खुरपका रोग नियंत्रण परियोजना से संबंधित भू-हस्तांतरण द्वारा प्राप्त की गई है जिसका मूल्य 0.39 मिलियन रूपये है।
2. पूर्ण स्वामीत्व भूमि 17.94 मिलियन रूपये राशि की ऑइल टेंक फार्म, नरेला की भूमि सम्मिलित है। जिसे स्थायी लीज पर प्राप्त किया गया है। और जिसके लिए अभी लीज डीड का निष्पादन करना बाकी है।
3. कृषि एवं बागवानी विभाग, कर्नाटक सरकार से प्राप्त भूमि का मूल्य 65.98 मिलियन रूपये है, जो कन्नामंगला हार्टीकल्चर फार्म में सहायक कंपनी मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर है। भू-स्वामीत्व का हस्तांतरण अभी लंबित है।

सेवा शुल्क

संलग्नक - IX

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
प्रशिक्षण शुल्क	20.11	6.90
अधिप्राप्ति एवं तकनीकी सेवा शुल्क	164.39	112.01
परीक्षण प्रभार	117.82	107.98
परामर्श एवं साध्यता (फीजिबिलिटी) अध्ययन से शुल्क	17.75	1.66
रॉयल्टी एवं प्रक्रिया जानकारी शुल्क	1.87	1.22
योग	**321.94**	**229.77**

अन्य आय

संलग्नक - X

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री पर लाभ (निवल)	148.57	10.49
निवेशों की बिक्री पर लाभ	10.61	2.43
अन्य ब्याज से आय	38.34	31.67
अतिरिक्त प्रावधान तथा एनपीए का प्रतिलेखन	74.81	2.65
स्वीकृत परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति	17.10	21.31
दूध की बिक्री	2.02	1.95
विविध आय	379.80	17.01
योग	**671.25**	**87.51**

कार्मिकों को पारिश्रमिक और लाभ

संलग्नक - XI

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
वेतन और मजदूरी (अनुग्रह राशि सहित)	862.64	852.48
भविष्य निधि, अधिवर्षिता निधि तथा उपदान राशि में योगदान	145.93	185.77
स्टाफ कल्याण व्यय	73.02	63.45
योग	**1,081.59**	**1,101.70**

पारिश्रमिक में अनुसंधान एवं विकास व्यय के भाग के रूप में इंगित गए 35.58 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष: 24.88 मिलियन रूपये) शामिल नहीं हैं।

प्रशासनिक व्यय

संलग्नक - XII

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
मुद्रण एवं लेखन सामग्री	5.44	3.85
संचार प्रभार	9.77	8.68
लेखा परीक्षा शुल्क एवं व्यय (कर सहित)		
लेखा परीक्षा शुल्क	1.09	0.98
आयकर लेखा परीक्षा	0.33	0.27
आऊट ऑफ पॉकेट व्यय	0.02	0.02
	1.44	1.27
विधि शुल्क	5.21	3.85
व्यावसायिक शुल्क	32.09	10.90
वाहन व्यय	4.45	2.61
भर्ती व्यय	0.44	0.25
विज्ञापन व्यय	10.94	5.69
यात्रा एवं वाहन व्यय	87.87	43.35
बिजली एवं किराया	33.18	27.38
अन्य प्रशासनिक व्यय	4.95	4.03
योग	**195.78**	**111.86**

परिसंपत्तियों का अनुरक्षण

संलग्नक - XIII

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
मरम्मत एवं अनुरक्षण		
भवन	144.17	112.31
अन्य	73.31	55.47
दर एवं कर	13.34	8.45
बीमा	3.01	2.41
योग	**233.83**	**178.64**

अन्य व्यय

संलग्नक - XIV

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22
प्रीमियम परिशोधन	44.82	43.71
पूर्व अवधि के व्यय	0.15	0.59
अन्य व्यय	49.91	28.15
योग	**94.88**	**72.45**

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

1. तैयारी का आधार

वित्तीय विवरण, ऐतिहासिक लागत परिपाटी तथा भारत में सामान्य तौर पर स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों (GAAP) के साथ-साथ इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टेड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा जारी बोर्ड पर लागू लेखांकन मानकों का प्रयोग करते हुए संग्रहण आधार पर तैयार किए गए हैं। वित्तीय विवरणों को, जब तक अन्यथा न कहा जाए, भारतीय रुपए के निकटतम पूर्णांकित दस लाख में प्रदर्शित किया गया है।

2. आंकलन का प्रयोग

जीएएपी के अनुरूप वित्तीय विवरण तैयार करने के लिए प्रबंधन को आकलन तथा पूर्वानुमान करना पड़ता है जो परिसंपत्तियों तथा देयताओं, राजस्व तथा खर्च और वित्तीय विवरणों की तारीख के अनुसार आकस्मिक देयताओं के प्रकटीकरण की सूचित राशियों को प्रभावित करते हैं। ऐसे आंकलन तथा पूर्वानुमान, प्रबंधन के वित्तीय विवरण की तारीख पर संबंधित तथ्यों और परिस्थितियों के मूल्यॉंकन पर आधारित हैं। प्रबंधन का यह मानना है कि वित्तीय विवरणों को तैयार करने में प्रयुक्त आंकलन विवेकपूर्ण एवं उचित है; हालांकि, वास्तविक परिणाम इस आकलन से भिन्न हो सकते हैं जिन्हें वर्तमान तथा भविष्य की अवधियों में भविष्यलक्षी प्रभाव से मान्यता प्राप्त है। ऐसे आकलनों में कोई भी परिवर्तन वर्तमान तथा भविष्य की अवधि में भविष्यलक्षी प्रभाव से मान्य हैं।

3. परिसंपत्तियों का वर्गीकरण तथा प्रावधान

सार्वजनिक वित्तीय संस्था होने के नाते एनडीडीबी परिसंपत्तियों के वर्गीकरण के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के दिशा-निर्देशों का पालन करती है 'जोकि व्यवस्थित रूप से महत्त्वपूर्ण नॉन डिपॉजिट टेकिंग कंपनी एवं डिपॉजिट टेकिंग कंपनी (रिजर्व बैंक) दिशा-निर्देश, 2016 पर लागू है'। अनर्जक एवं मानक परिसंपत्तियों के लिए प्रावधान बोर्ड द्वारा अनुमोदित दरों पर किया गया है।

4. राजस्व मान्यता

मानक परिसंपत्तियों पर ब्याज आय में आरबीआई के दिशा-निर्देशों के अनुसार संग्रहण के आधार पर मान्यता दी गई है। अनर्जक परिसंपत्तियों पर ब्याज आय, लागू दिशा-निर्देशों के अनुरूप वर्गीकृत हैं।

बैंक के साथ सावधि जमा एवं बांड्स में निवेश पर ब्याज आय को आनुपातिक समय आधार पर मान्यता दी गई है।

सहकारिता आदि की सेवाओं से आय को आनुपातिक पूरा होने के आधार पर तथा सम्बद्ध अनुबंध की शर्तों के अनुसार मान्य किया गया है।

दूध पण्य वस्तुओं की बिक्री का हिसाब परिवहन के समय पर्याप्त जोखिम और ईनाम के आधार पर पण्यवस्तुओं की गोदाम से प्रेषण की तारीख पर किया जाता है।

लाभांश आय का हिसाब आय प्राप्त होने के बिना शर्त अधिकार स्थापित होने पर किया गया है।

अन्य आय को तब मान्यता दी जाती है जब इसके अंतिम संग्रहण में कोई अनिश्चितता नहीं होती।

5. अनुदान

क) स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित अनुदानों को आरंभ में सामान्य निधि के अंतर्गत स्थायी परिसंपत्तियों के लिए अनुदान में क्रेडिट किया जाता है।

ख) वर्ष के दौरान प्राप्त राजस्व अनुदानों को आय तथा व्यय लेखे में मान्यता दी जाती है।

ग) विशिष्ट परियोजनाओं के लिए प्राप्त अनुदान को परियोजना निधि में क्रेडिट किया जाता है तथा इन परियोजनाओं के लिए धन वितरण में इसका उपयोग किया जाता है।

6. अनुसंधान एवं विकास व्यय

अनुसंधान एवं विकास व्यय को (अधिगृहीत स्थायी परिसंपत्तियों की लागत के अलावा) वर्ष में व्यय के रूप में प्रभारित किया गया है। अनुसंधान तथा विकास के लिए उपयोग की गई स्थायी परिसंपत्तियाँ जिनका अन्य जगह उपयोग हो सकता है उनका बोर्ड की नीति के अनुसार उनके उपयोगी जीवन के बाद मूल्यह्रास किया जाता है।

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

7. कर्मचारी लाभ

क. परिभाषित योगदान योजनाः भविष्य निधि तथा अधिवार्षिता निधि में योगदान पूर्व निर्धारित दर पर किया जाता है तथा उसे आय और व्यय लेखे में प्रभारित किया जाता है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन द्वारा निर्धारित दर और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड कर्मचारी भविष्य निधि योजना के वास्तविक आय के बीच यदि कोई कमी है, तो बोर्ड द्वारा आय और व्यय खाते में डेबिट के रूप में योगदान दिया जाता है।

ख) परिभाषित लाभ योजनाएंः उपदान, मुआवजा अनुपस्थिति तथा सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं प्रक्षेपित इकाई क्रेडिट पद्धति का प्रयोग करते हुए बोर्ड की देयताएं निर्धारित की जाती हैं जिसमें प्रत्येक सेवा अवधि को गिना जाता है जिससे लाभ हकदारी की अतिरिक्त इकाई में वृद्धि होती है तथा अंतिम दायित्व को निर्धारित करने के लिए प्रत्येक इकाई को अलग से मापा जाता है। बीमांकिक लाभ तथा हानियाँ जो स्वतंत्र बीमांकिक द्वारा वार्षिक तौर पर की जाती हैं, बीमांकिक मूल्यांकन पर आधारित हैं, उन्हें तुरंत आय तथा व्यय लेखा में आय अथवा व्यय के रूप में मान्यता दी जाती है। दायित्व को, छूट दर का प्रयोग करते हुए, अनुमानित भविष्य के नकद प्रवाह के वर्तमान मूल्य पर मापा गया है। इनका निर्धारण तुलन पत्र की तारीख पर भारत सरकार के बांड पर बाजार लाभ के संदर्भ में किया जाता है, जहाँ सरकारी बॉन्डों की वैधता अवधि तथा शर्तें परिभाषित लाभ दायित्व की वैधता अवधि और अनुमानित शर्तों के अनुरूप हैं।

अनुपस्थिति क्षतिपूर्तिः बोर्ड की कर्मचारियों के लिए अनुपस्थिति क्षतिपूर्ति लाभ हेतु एक योजना है जिसकी देयता वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर निर्धारित की जाती है।

बोर्ड ने भारतीय जीवन बीमा निगम की गुरप ग्रैच्यूटी सह लाइफ एशोरेन्स योजना में प्रतिभागिता द्वारा उपदान के पक्ष में इनकी देयताओं को वित्त पोषण प्रदान किया है।

8. संपत्ति, संयंत्र और उपकरण (PPE) तथा मूल्यह्रास

मूर्त स्थायी परिसंपत्तियों को मूल्यह्रास तथा क्षति हानि घटा कर लागत पर लिया जाता है। लागत में खरीद का मूल्य, आयात शुल्क तथा अन्य गैर वापसी कर अथवा उगाही तथा ऐसी कोई प्रत्यक्ष अपसामान्य लागत शामिल होती है जो परिसंपत्ति पर उसके अपेक्षित इस्तेमाल के लिए तैयार करने हेतु खर्च की जाती है।

प्रत्येक 10,000 रुपये से अधिक की लागत वाली पीपीई पर मूल्यह्रास बोर्ड द्वारा निर्धारित दरों पर सीधी रेखा पद्धति के आधार पर प्रभारित किया जाता है। परिसंपत्ति के पूँजीकरण के वर्ष में पूरा मूल्याह्रास प्रभारित किया जाता है तथा उसके निपटान के वर्ष में मूल्यह्रास प्रभारित नहीं किया जाता। 10,000 रुपये तथा उससे कम राशि की प्रत्येक परिसंपत्ति को क्रय के वर्ष में 100 प्रतिशत मूल्यह्रास किया जाता है। बोर्ड द्वारा विभिन्न श्रेणी की परिसंपत्तियों के लिए अनुमोदित मूल्यह्रास दरें नीचे दी गई हैंः-

परिसंपत्तियां	दर (% में)
फैक्टरी भवन, गोदाम तथा रोड	4.00
अन्य भवन	2.50
कोल्ड स्टोरेज	15.00
विदुत स्थापन	5.00
कम्प्यूटर (सॉफ्टवेयर सहित)	33.33
कार्यालय तथा प्रयोगशाला उपकरण	15.00
संयंत्र तथा मशीनरी	10.00
सौर उपकरण	30.00
फर्नीचर	10.00
वाहन	20.00
रेल दूध टैंकर	10.00

पट्टे पर ली गई जमीन का पट्टे की अवधि तक एमोर्टाइज किया गया है। पट्टे पर ली गई जमीन पर स्थित परिसंपत्तियों का मूल्यह्रास पट्टे की अवधि से कम होगा या उस परिसंपत्ति की उपयोगी जीवन से कम होगी।

स्थापन/निर्माणाधीन पूँजीगत परिसंपत्तियों को तुलनपत्र में 'पूँजीगत कार्य प्रगति पर' के रूप में दिखाया गया है।

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

9. परिसंपत्तियों की हानि

प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर, परिसंपत्तियों के रखाव मूल्य की परिसंपत्तियों की हानि के लिए समीक्षा की जाती है। यदि इस प्रकार की हानि होने का कोई संकेत मिलता है, तो ऐसी परिसंपत्ति की वसूली योग्य राशि का अनुमान लगाया जाता है और हानि को मान्य किया जाता है, यदि इन परिसंपत्तियों के रख रखाव की राशि वसूली योग्य राशि से अधिक है। वसूली योग्य राशि शुद्ध बिक्री मूल्य तथा उनके उपयोग के मूल्य से अधिक है। उपयोग मूल्य को, उनके वर्तमान मूल्य में से भविष्य के नकद प्रवाह में छूट के आधार पर निकाला जाता है जो उपयुक्त छूट घटक पर आधारित होती है। जब ऐसा संकेत हो कि लेखा अवधियों से पूर्व किसी परिसंपत्ति के लिए मान्य क्षति हानि अब विद्यमान नहीं है अथवा कम हो गई होगी तो अपसामान्य हानि के ऐसे परिवर्तन को आय तथा व्यय लेखा

10. निवेश

दीर्घकालीन निवेशों को निम्न प्रकार से मूल्यांकित किया गया है:

क) सहायक कंपनियों, सहकारिताओं तथा महासंघों के शेयर - अधिग्रहण की लागत पर;

ख) सरकारी कंपनियों, वित्तीय संस्थाओं तथा बैंकों में डिबेंचर/बांड - राज्य विकास ऋण - अधिग्रहण की लागत पर शुद्ध परिशोधित प्रीमियम, यदि कोई हो।

वर्तमान निवेशों को कम लागत अथवा बाजार मूल्य पर निर्धारित किया गया है।

दीर्घकालिक निवेशों को लागत पर निर्धारित किया गया है। यदि अंकित मूल्य से लागत मूल्य अधिक होता है तो अंतर्निहित प्रतिभूति की शेष परिपक्वता अवधि पर प्रीमियम को परिशोधित किया जाता है। इस प्रकार के निवेश का उल्लेख तुलनपत्र में कम परिशोधित प्रीमियम अधिग्रहण मूल्य पर किया गया है।

वर्ष के दौरान किए गए निवेशों के मूल्य में, अस्थायी के अलावा अन्य कमी हेतु प्रावधान कमी का मूल्यांकन किए जाने वाले वर्ष में किया गया है।

11. वस्तुसूची

स्टोर तथा परियोजना उपकरण सहित वस्तु सूचियों को लागत पर अथवा शुद्ध नकदीकरण मूल्य, जो भी कम हो, पर मूल्यांकित किया गया है। लागत को प्रथम आवक, प्रथम जावक आधार पर निकाला गया है। जहाँ कहीं आवश्यक है वहाँ अप्रचलन के लिए प्रावधान किया गया है।

12. विदेशी मुद्रा लेन-देन

विदेशी मुद्रा का लेन-देन, लेन देन की तारीख पर प्रचलित विनिमय दर पर अभिलिखित किया जाता है।

विदेशी मुद्रा में मूल्यांकित मुद्रा संबंधी वस्तुएं तथा जो तुलन पत्र की तारीख में बकाया हैं उन्हें वर्ष के अंत में प्रचलित विनिमय दर पर परिवर्तित किया जाता है। गैर-मौद्रिक मदों को ऐतिहासिक लागत पर लिया जाता है।

विदेशी मुद्रा लेन-देन में होने वाले विनिमय अन्तर को उनके सामने आने वाली अवधि में आय एवं व्यय के रूप में मान्यता दी गई है।

13. स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना का लेखांकन

अनुग्रह राशि सहित स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना की लागत, कर्मचारी के सेवा वियोजन अवधि में आय तथा व्यय लेखे में प्रभारित की जाती है। स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना लेने वाले कर्मचारियों के लिए, कर्मचारियों की सेवा वियोजन अवधि में मासिक लाभ योजना हेतु प्रावधान किया गया है तथा इसका समायोजन भुगतान मिलने पर किया जाता है।

14. आय पर कर

वर्तमान कर, वर्ष के दौरान कर योग्य आय पर देय है जिसका निर्धारण आयकर अधिनियम 1961 के प्रावधानों के अनुसार किया जाता है।

आस्थगित कर समय के अंतर पर मान्य है, यह कर योग्य आय तथा लेखा आय का वह अंतर है जो एक अवधि से उत्पन्न होता है तथा एक अथवा अधिक अनुवर्ती अवधि में परिवर्तन योग्य है।

अनवशोषित मूल्यह्रास तथा अग्रेनीत हानियों के संबंध में आस्थगित कर परिसंपत्तियों को मान्य किया गया है यदि यह आभासी निश्चितता है कि ऐसे कर घाटों को दूर करने के लिए भविष्य की पर्याप्त कर योग्य आय उपलब्ध होगी। अन्य आस्थगित कर परिसंपत्तियाँ मान्य हैं जब यदि यथोचित निश्चितता हो कि ऐसी परिसंपत्तियों की वसूली के लिए भविष्य में पर्याप्त कर योग्य आय होगी।

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

15. पट्टे

पट्टा व्यवस्थाएं, जहाँ परिसंपत्ति के स्वामित्व का प्रासंगिक जोखिम और ईनाम पर्याप्त रूप से पट्टेदाता पर निहित है, उन्हें प्रचालन पट्टे के रूप में मान्यता दी गई है। प्रचालित पट्टे के अंतर्गत पट्टा किराया को पट्टा अनुबंधों के संदर्भ में आय एवं व्यय लेखे के रूप में मान्यता दी गई है।

16. प्रावधान तथा आकस्मिकताएं

पूर्व घटनाओं के परिणामस्वरूप जब बोर्ड के पास वर्तमान दायित्व होता है तो उस समय प्रावधान को मान्यता दी जाती है तथा यह संभावित है कि दायित्व के निपटान के लिए संसाधनों का बर्हिगमन अपेक्षित होगा, जिसके संबंध में एक विश्वसनीय अनुमान बनाया जा सकता है। प्रावधानों (सेवानिवृत्ति लाभों को छोडकर) को उनके वर्तमान मूल्य में छूट नहीं दी जाती है तथा इन्हें तुलन पत्र की तारीख ड्ढें दायित्व का निपटान करने के लिए अपेक्षित अनुमान के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इनकी प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर समीक्षा की जाती है तथा वर्तमान सर्वश्रेष्ठ अनुमान प्रतिबिंबित करने के लिए समायोजित किया जाता है। आकस्मिक देयताओं का खुलासा लेखा पर टिप्पणियों में किया गया है।

बोर्ड ने वर्ष 2001-02 के पूर्व के ऋणों तथा अन्य परिसंपत्तियों के संबंध में प्रावधान किया है। अंतर्निहित परिसंपत्तियों के संचालन के आधार पर जिनके लिए ऐसे प्रावधान का सृजन किया गया था, बोर्ड पहचानी गई घटनाओं के आधार पर ऐसे प्रावधानों का पुनः आवंटन/प्रतिलेखन करता है। तदनुसार, बोर्ड अपनी परिसंपत्तियों के मूल्य में संभावित मूल्यह्रास अथवा ऐसी देयता हेतु अप्रत्यशित घटनाओं के लिए वर्तमान आकस्मिक प्रावधान के संबंध में अतिरिक्त प्रावधान अथवा आवंटन करता है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

1 संबंधित प्राधिकारियों के अनुरोध पर, एनडीडीबी पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड, शाहजहांपुर महिला दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड का प्रबंधन कर रही है। और जिला दूध उत्पादक सहकारी संघ, वाराणसी (वाराणसी दूध संघ)। ये पृथक और स्वतंत्र संस्थाएं हैं और उनके बही खातों का रखरखाव संबंधित अधिकारियों द्वारा किया जाता है और अलग से उनकी लेखा परीक्षा की जाती है। इसके अलावा, संबंधित अधिकारियों के साथ परिचर्चा के अनुसार, बोर्ड केवल वाराणसी दूध संघ के प्रबंधन को सौंपते समय शुद्ध नकदी हानि को वहन करने के लिए उत्तरदायी है। वाराणसी दूध संघ के साथ समझौता ज्ञापन की अवधि के अंत में प्रबंधन को सौंपते समय नकद हानि, यदि कोई हो, के लिए आवश्यक प्रावधान किया जाएगा।

2 राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (NDLM) राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) के तहत पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के मध्य एक संयुक्त उद्यम (गत) के रूप में एक परियोजना है और भारत सरकार और एनडीडीबी प्रत्येक के 50% इक्विटी योगदान के साथ एक स्पेशल परपज व्हीकल (SPV) का गठन किया जाएगा।

जब तक ऐसी एसपीवी का गठन नहीं हो जाता, तब तक एनडीएलएम परियोजना राजस्व और व्यय (i) एनडीडीबी के शेयर के लिए क्रमशः एनडीडीबी के आय और व्यय खाते में जमा/डेबिट किया गया है और (ii) भारत सरकार के शेयर के लिए, इसे एनडीडीबी की 'भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधि' में समायोजित किया गया है। जहां तक, एनडीएलएम परियोजना के पूंजीगत व्यय का संबंध है, (iii) एनडीडीबी का शेयर बही खातों में पूरी तरह पूंजीकृत है और मूल्यह्रास एनडीडीबी के आय और व्यय खाते में प्रभारित किया जाता है और (iv) भारत सरकार के शेयर के लिए, इसे 'अचल परिसंपत्तियों के लिए अनुदान' में स्थानांतरित कर दिया जाता है और उस सीमा तक मूल्यह्रास की वार्षिक आधार पर भरपाई की जाती है। प्रगति पर पूंजीगत कार्य ('CWIP') के लिए, (v) एनडीडीबी का शेयर एनडीडीबी के 'CWIP' के अंतर्गत दिखाया गया है और (vi) भारत सरकार के शेयर के अंतर्गत, इसे 'भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधि' के तहत दिखाया गया है।

3 आकस्मिक देयताएँ:

3.1. मूल राशि के दावे जो ऋण के रूप में नहीं माने गए :132.71 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 234.95 मिलियन रुपये)

3.2. बकाया गारंटी: 0.05 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 0.05 मिलियन रुपये)

3.3. आयकर की मांग (संबंधित सांविधिक प्रावधानों के अंतर्गत देय ब्याज एवं जुर्माने को छोडकर) 1185.93 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 1145.14 मिलियन रुपये)

3.4. सेवा कर मांग 916.50 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 916.50 मिलियन रुपये)

3.5. अन्य मांगें

मिलियन रुपये में

विवरण	प्राधिकरण	2022-23	2021-22
भूमि देय राशि का निपटान	भूमि एवं भूमि सुधार विभाग, सिलीगुड़ी	3.94	3.94
इटोला की भूमि के लिए नगरपालिका कर की मांग	तालुका विकास अधिकारी, वडोदरा	4.73	4.73
संपत्ति कर	बृहन मुंबई महानगर पालिका, मुंबई	0.19	-

बोर्ड ने 3.3 से 3.5 में उपर्युक्त उल्लिखित मांगों को उपयुक्त फोरम के समक्ष चुनौती दी है। उक्त संबंध में नकद प्रवाह केवल निर्णय का परिणाम/उस फोरम का फैसला आने पर निर्धारित करने योग्य है, जहाँ मांगों को चुनौती दी गई है।

4 खण्ड जानकारी:

एनडीडीबी राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित एक निगमित निकाय है। अधिनियम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार, एनडीडीबी की सभी गतिविधियाँ डेरी/कृषि क्षेत्र के इर्द-गिर्द घूमती हैं जो लेखा मानक-17 के अनुसार "खण्ड रिपोर्टिंग" पर एकल रिपोर्ट करने योग्य खंड है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

5 लेखा मानक 15 (संशोधित 2005) के अनुसार कर्मचारी लाभों से संबंधित प्रकटीकरण निम्नलिखित है:-

कर्मचारी लाभ योजनाएं

परिभाषित अंशदान योजनाएं

कंपनी योग्य कर्मचारियों के लिए परिभाषित अंशदान योजनाओं के अंतर्गत भविष्य निधि तथा अधिवर्षिता निधि में अंशदान देती है। इन योजनाओं के अंतर्गत, कंपनी को पे-रोल लागत का एक विशेष प्रतिशत इन लाभों को धन प्रदान करने के लिए देना अपेक्षित है। कंपनी ने लाभ एवं हानि विवरण में भविष्य निधि अंशदान के लिए 76.40 मिलियन रुपये (31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष में 70.12 मिलियन रुपये) तथा अधिवर्षिता निधि अंशदान में 50.88 मिलियन रुपये (31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष में 46.51 मिलियन रुपये) मान्य किए है। कंपनी द्वारा इन योजनाओं के लिए देय योगदान की राशि, इन योजनाओं के नियमों में विनिर्दिष्ट दर पर दी जाती है।

परिभाषित लाभ योजनाएं

कंपनी अपने कर्मचारियों को निम्नलिखित लाभ योजनाएं प्रदान करती है:

i. उपदान

ii. सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजना (PRMBS)

iii. छुट्टी नकदीकरण

निम्नलिखित तालिका में परिभाषित लाभ योजनाओं को प्रदान निधि की स्थिति तथा वित्तीय विवरण में मान्य राशि दर्शाई गई है:

मिलियन रुपये में

विवरण	31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष			31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष		
	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण
नियोक्ता खर्च के घटक						
चालू सेवा लागत	36.53	1.08	29.81	33.62	0.83	37.89
ब्याज लागत	35.95	7.75	43.08	30.98	7.50	36.59
योजनागत संपत्ति पर संभावित लाभ	(33.09)	-	(36.13)	(28.44)	-	(26.56)
बीमांकिक हानि/(लाभ)	(20.74)	(4.52)	(30.69)	32.11	(4.51)	26.44
आय और व्यय में मान्य कुल व्यय	**18.65**	**4.31**	**6.07**	**68.27**	**3.82**	**74.36**
वर्ष के लिए वास्तविक योगदान और लाभ भुगतान						
वास्तविक लाभ भुगतान	(47.85)	(5.62)	(42.64)	(43.23)	(4.23)	(32.51)
वास्तविक योगदान	111.90	-	56.99	65.07	-	123.74
तुलन-पत्र में मान्य निवल परिसंपत्ति/(देयता)						
परिभाषित लाभ दायित्व का वर्तमान मूल्य	(516.97)	(109.45)	(616.91)	(513.59)	(110.75)	(615.36)
योजना परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	569.36	-	568.56	472.74	-	516.09
तुलनपत्र में मान्य निवल परिसंपत्ति/(देयता)	**52.39**	**(109.45)**	**(48.35)**	**(40.85)**	**(110.75)**	**(99.27)**
वर्ष के दौरान परिभाषित लाभ दायित्वों (DBO) में परिवर्तन						
वर्ष के आरंभ में डीबीओ का वर्तमान मूल्य	513.59	110.75	615.36	458.98	111.16	542.14
वर्तमान सेवा लागत	36.53	1.08	29.81	33.62	0.83	37.89
ब्याज लागत	35.95	7.75	43.08	30.98	7.50	36.59
वास्तविक (लाभ)/हानि	(21.25)	(4.52)	(28.70)	33.24	(4.51)	31.25
प्रदत्त लाभ	(47.85)	(5.61)	(42.64)	(43.23)	(4.23)	(32.51)
वर्ष के अंत में डीबीओ का वर्तमान मूल्य	**516.97**	**109.45**	**616.91**	**513.59**	**110.75**	**615.36**

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

मिलियन रुपये में

विवरण	31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष			31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष		
	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण
वर्ष के दौरान परिसंपत्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन						
वर्ष के आरंभ में योजित परिसंपत्तियाँ	472.74	-	516.09	421.34	-	393.49
अधिग्रहण समायोजन	-	-	-	-	-	-
योजित परिसंपत्तियों पर संभावित लाभ	33.09	-	36.13	28.44	-	26.56
वास्तविक कंपनी योगदान (उपदान ट्रस्ट/एनडीडीबी और एलआईसी द्वारा कटौती किए गए शुल्क को छोड़कर दिया गया योगदान)	111.90	-	56.99	65.07	-	123.74
बीमांकिक लाभ/(हानि)	(0.52)	-	1.99	1.12	-	4.81
प्रदत्त लाभ	(47.85)	-	(42.64)	(43.23)	-	(32.51)
वर्ष के अंत में योजित परिसंपत्तियाँ	**569.36**	**-**	**568.56**	**472.74**	**-**	**516.09**
योजित परिसंपत्तियों पर वास्तविक लाभ	32.57	-	38.12	29.56	-	31.37
योजित परिसंपत्तियों के घटक इस प्रकार हैः						
सरकारी बांड	-	-	-	-	-	-
पीएसयू बांड	-	-	-	-	-	-
इक्विटी एवं इक्विटी संबंधी निवेश	-	-	-	-	-	-
अन्य	100%	-	100%	100%	-	100%
वास्तविक धारणाएं						
छूट दर	7.50%	7.50%	7.50%	7.00%	7.00%	7.00%
योजित परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	7.50%	NA	7.50%	7.56%	NA	7.28%
वेतन वृद्धि	8.50%	3.00%	8.50%	8.50%	3.00%	8.50%
क्षयण (एट्रीशन)	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%
चिकित्सा मुद्रास्फीति	NA	5.00%	NA	NA	5.00%	NA
मृत्यु तालिका	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

अनुभव समायोजन

मिलियन रुपये में

विवरण	2022-23	2021-22	2020-21	2019-20	2018-19	2017-18
उपदान						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	516.97	513.59	458.98	449.30	389.45	357.02
योजित परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	(569.36)	(472.74)	(421.34)	(418.09)	(371.87)	(341.48)
वित्त पोषित स्थिति [अधिशेष/(घाटा)]	52.39	(40.85)	(37.64)	(31.21)	(17.58)	(15.54)
सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजना (PRMBS)						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	109.45	110.75	111.16	81.01	69.98	71.19
अन्य परिभाषित लाभ योजनाएं (छुट्टी नकदीकरण)						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	616.91	615.36	542.14	522.08	419.02	379.07
योजना परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	(568.56)	(516.09)	(393.49)	(393.45)	-	-
वित्तपोषित स्थिति [अधिशेष / (घाटा)]	(48.35)	(99.27)	(148.65)	(128.63)	-	-

विवरण	31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए	31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष के लिए
लंबी अवधि की प्रतिपूरक अनुपस्थिति की बीमांकिक पूर्वधारणाएं		
छूट दर	7.50%	7.00%
उपदान योजित परिसंपत्तियों पर संभावित प्रतिलाभ	7.50%	7.56%
योजित अवकाश नकदीकरण परिसंपत्ति पर संभावित प्रतिलाभ	7.50%	7.28%
वेतन वृद्धि	8.50%	8.50%
क्षयण (एट्रीशन)	1.00%	1.00%

छूट दर कर्तव्यों की अनुमानित अवधि के लिए तुलन प की तारीख के अनुसार भारत सरकार की प्रतिभूतियों के मौजूदा बाजार लाभ पर आधारित है।

भविष्य की वेतन वृद्धियों के अनुमान में मुद्रास्फिति, वरिष्ठता, पदोन्नती, वेतन वृद्धि तथा अन्य सम्बद्ध घटकों को माना गया है।

बोर्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान किए जाने वाले योगदान निर्धारित नहीं किए गए हैं।

6 लेखामानक 18 के अनुसार 31 मार्च, 2022 को समाप्त वर्ष के लिए संबंधित पार्टी तथा उनसे लेन-देन का प्रकटीकरण

क) संबंधित पार्टी तथा उनका संबंध

1) **पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियां**

आईडीएमसी लिमिटेड
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड
एनडीडीबी डेरी सविर्सेज
प्रिस्टिन बायोलॉजिकल (NZ) लिमिटेड (इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी)
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड
एनडीडीबी काफ लिमिटेड

2) अन्य उद्यम जहाँ प्रबन्ध तंत्र का उनके प्रबन्धन में महत्वपूर्ण प्रभाव है

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
पशु प्रजनन अनुसंधान संगठन (भारत)
आनंदालय एजुकेशन सोसायटी
झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड
शाहजहाँपुर महिला दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन
वाराणसी दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड
भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड
नेशनल को-ऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

3) प्रमुख प्रबंधन कार्मिक

श्री मीनेश शाह	कार्यपालक निदेशक 14 नवंबर 2022 तक
श्री मीनेश शाह	प्रबंध निदेशक 15 नवंबर 2022 से
श्री मीनेश शाह	अध्यक्ष 24 जून 2021 से

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ('एनडीडीबी' या 'बोर्ड')

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

ख) संबंधित पार्टियों के साथ लेन-देन

(इटेलिक में दिये गए आँकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

मिलियन रुपये में

विवरण	ब्याज से आय	इक्विटी शेयरों की खरीद	स्थायी संपत्तियों की खरीद	लाभांश	किराया (आय)	अन्य आय	अनुदान	अन्य व्यय	चालू खाते का शेष बकाया डे./(क्रे.)	वितरित ऋण	चुकाया ऋण/समायोजित		ऋण शेष बकाया डे./(क्रे.)
											ऋण शेष	बकाया	
आईडीएमसी लिमिटेड	23.97	-	-	24.29	0.35	5.22	-	10.63	0.03	474.27	244.22	23.97	230.05
	27.59	-	-	*24.29*	*0.70*	*0.12*	-	*3.36*	*0.03*	*6.25*	*93.67*	*27.59*	*374.27*
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड	56.63	-	-	72.00	29.32	14.47	-	6.60	3.77	893.28	166.77	56.63	726.51
	54.51	-	-	*36.00*	*27.16*	*0.38*	-	*3.45*	*(0.87)*	*382.18*	*323.32*	*54.51*	*893.28*
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड	24.93	-	-	250.00	119.10	27.17	-	-	21.46	937.25	98.74	24.93	838.51
	4.71	-	-	*250.00*	*123.08*	*3.19*	-	-	*28.79*	*504.71*	*504.71*	*4.71*	-
एनडीडीबी डेरी सेवाएँ	-	-	-	-	8.01	8.92	-	1.87	(0.81)	473.70	55.40	-	418.30
	-	-	-	-	*6.80*	*2.14*	-	-	*1.48*	-	*55.40*	-	*473.70*
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	-	95.00	-	-	0.01	8.60	-	13.28	(2.01)	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
एनडीडीबी काफ लिमिटेड	-	750.00	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**105.53**	**845.00**	**-**	**346.29**	**156.79**	**64.38**	**-**	**32.38**	**22.44**	**2,778.50**	**565.13**	**105.53**	**2,213.37**
	86.81	**-**	**-**	***310.29***	***157.74***	***5.83***	**-**	***6.81***	***29.43***	***893.14***	***977.10***	***86.81***	***1,741.25***

मिलियन रुपये में

विवरण	ब्याज से आय	इक्विटी शेयरों की खरीद	स्थायी संपत्तियों की खरीद लाभांश	लाभांश	किराया (आय)	अन्य आय	अनुदान	अन्य व्यय	चालू खाते का शेष बकाया डे./(क्रे.)	वितरित ऋण	चुकाया ऋण/समायोजित		ऋण शेष बकाया डे./(क्रे.)
											मूल	ब्याज	
अन्य उद्यम जहां प्रबंधन का उनके प्रबंधन पर महत्वपूर्ण प्रभाव है													
पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लि.	1.62	-	-	-	0.26	1.86	-	23.34	0.59	79.49	67.29	1.62	12.20
	0.96	-	-	-	*0.30*	*1.78*	-	*0.19*	*(3.99)*	*16.39*	*2.14*	*0.96*	*30.77*
पशु प्रजनन अनुसंधान संगठन	2.08		-	-	-	4.10	-	-	1.61	-	-	2.08	-
	3.76	-	-	-	-	*3.46*	-	-	*14.71*	*3.76*	*23.11*	*3.76*	*45.64*
आनन्दालय शिक्षा सोसाइटी	-		-	-	0.59	1.08	-	0.03	0.13	-	-	-	-
	-	-	-	-	*(0.88)*	-	-	*0.04*	*0.08*	-	-	-	-
झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड	-	-	-	-	0.17	2.91	-	2.15	0.79	-	-	-	-
	-	-	-	-	*0.09*	*0.86*	-	-	*0.83*	-	-	-	-
वाराणसी दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड	-	-	-	-	-	0.29	227.11	6.22	4.35	453.91	221.43	-	232.48
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	*49.57*	-	-	*49.57*
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड	-	50.00	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड	-	10.00	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
नेशनल को-ऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड	-	10.00	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**3.70**	**70.00**	**-**	**-**	**1.02**	**10.24**	**227.11**	**31.74**	**7.47**	**533.40**	**288.72**	**3.70**	**244.68**
	4.72	***-***	***-***	***-***	***(0.49)***	***6.10***	***-***	***0.23***	***11.63***	***69.72***	***25.25***	***4.72***	***125.98***

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

प्रमुख प्रबंधन कार्मिकों को पारिश्रमिक

मिलियन रुपये में

श्री मीनेश शाह	6.37
	5.67
योग	**6.37**
	5.67

नोट: केवल उन संबंधित पक्षों का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिनके साथ चालू और/या पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान लेनदेन हुआ है।

7 लेखा मानक 19 के अनुसार, 'लीज़' (पट्टे) का प्रकटीकरण (संदर्भ संलग्नक VIII देखें):

निम्नलिखित परिसंपत्तियों के लिए बोर्ड के द्वारा पट्टादाता (लेसर) के रूप में लीज व्यवस्था संचालन:

क) पट्टे पर दी गई परिसंपत्तियों की प्रकृति

मिलियन रुपये में

परिसंपत्तियों की श्रेणी	31 मार्च 2022 को परिसंपत्तियों का सकल मूल्य	वर्ष के लिए मूल्यह्रास	31 मार्च 2022 को संचित मूल्यह्रास
भवन एवं रोड #	1633.00	42.52	1078.06
	1633.00	*42.57*	*1035.54*
बिजली स्थापन #	30.83	1.00	28.10
	30.86	*1.00*	*27.13*
फर्नीचर, फिक्स्चर, कंप्यूटर्स एवं कार्यालय उपकरण	8.73	0.00	8.73
	8.88	*0.00*	*8.88*
रेल दूध टैंकर	345.49	16.55	258.85
	345.49	*16.55*	*242.30*
योग	**2018.05**	**60.07**	**1373.74**
	2018.23	***60.12***	***1313.85***

स्टाफ क्वार्टर तथा कोल्ड स्टोरेज शामिल हैं।
(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

पट्टेदाता (लीज़ी) को पूर्व नोटिस देकर इन व्यवस्थाओं को रद्द किया जा सकता है।

(ख) लीज़ प्रबंधों से संबंधित आरंभिक प्रत्यक्ष लागत को लीज़ प्रबंध के वर्ष के आय एवं व्यय लेखा में प्रभारित किया गया है।

(ग) महत्वपूर्ण लीज़ प्रबंध:

अनुबंध के नवीनीकरण अथवा निरस्तीकरण के विकल्प के साथ, उपर्युक्त सभी परिसंपत्तियों को सहायक कंपनियों, महासंघों तथा अन्य को लीज़ पर दिया गया है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

8 आस्थगित कर परिसंपत्तियों को लेखा मानक 22 - 'आय पर कर गणना' के अनुसार माना गया है। विवरण इस प्रकार है :

मिलियन रुपये में

विवरण	1 अप्रैल 2022 को आरंभिक शेष	वर्ष के दौरान समायोजन	31 मार्च 2023 को अंत शेष
आस्थगित कर परिसंपत्तियाँ/(देयताएं):			
मूल्यह्रास	(17.00)	9.96	(7.04)
	(22.69)	*5.69*	*(17.00)*
भुगतान के आधार पर स्वीकार्य व्यय	151.57	(2.25)	149.32
	133.03	*18.54*	*151.57*
उपदान	10.28	(23.47)	(13.19)
	9.47	*0.81*	*10.28*
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना	0.01	0.00	0.01
	0.01	*0.00*	*0.01*
विशेष आरक्षित निधि	(401.26)	(7.52)	(408.79)
	(393.18)	*(8.08)*	*(401.26)*
योग	**(256.40)**	**(23.28)**	**(279.69)**
	(273.36)	***16.96***	***(256.40)***

(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

नोट:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के परिपत्र सं. आरबीआई/2013-14/412 डीबीओडी सं.बीपी.बीसी.77/21.04.018/2013-14 दिनांक 20 दिसंबर 2013 में बोर्ड ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36 (1) (viii) के तहत विशेष रिजर्व पर आस्थगित कर दायित्व सृजित किया है।

9 लेखा मानक 29 के अनुसार-'प्रावधान, आकस्मिक देयताओं तथा आकस्मिक परिसंपत्तियों का प्रकटीकरण' निम्न प्रकार है:

मिलियन रुपये में

विवरण	अलाभकर परिसंपत्तियाँ (NPA)	मानक परिसंपत्तियों पर सामान्य आकस्मिकता	आकस्मिकता	कुल
आरम्भिक शेष	816.58	51.79	1,497.87	2,366.24
	1,006.13	*54.30*	1,055.81	*2,116.24*
वर्ष के दौरान आकस्मिकता से निर्मित	0.74	41.88	257.38	300.00
	0.45	-	*252.06*	*252.51*
वर्ष के दौरान वापस किया गया/संचालन	(257.98)	-	-	(257.98)
	(190.00)	*(2.51)*	*190.00*	*(2.51)*
अंत शेष	**559.34**	**93.67**	**1,755.25**	**2,408.26**
	816.58	***51.79***	***1,497.87***	***2,366.24***

(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

10 31 मार्च, 2023 की स्थिति के अनुसार बोर्ड के पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 21.07 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 13.02 मिलियन रूपये) के विभिन्न लेनदार रहें और उन संस्थाओं को जिन्हे माइक्रो, स्मॉल एंड मिडियम इन्टरप्राइज डेवलेपमेंट एक्ट, 2006 के अंतर्गत माइक्रो और स्मॉल इन्टरप्राइज के रूप में वर्गीकृत किया गया है पर, कोई बकाया नही है।

11 ऋण और अग्रिम से ब्याज में 832.66 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 811.86 मिलियन रुपये) और दीर्घावधि से 1,262.41 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 1,249.95 मिलियन रुपये) शामिल हैं।

12 सभी लाभांश दीर्घावधि निवेश से प्राप्त होते हैं।

13 आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36(1)(viii) के प्रावधानों के अनुसार, निर्धारण वर्ष 2003-04 (निर्धारण वर्ष जिसमें एनडीडीबी आयकर अधिनियम, 1961 के दायरे में आया) से विशेष रिजर्व निर्मित किया गया है। जैसा कि एनडीडीबी का मानना है यह उक्त धारा के तहत कटौती की जाने की पात्रता रखता है। हालाँकि, निर्धारण वर्ष 2003-04 और उसके बाद के वर्षो के लिए आयकर अधिकारियों ने इस तरह के दावे को अस्वीकार कर दिया। एनडीडीबी ने विभिन्न अपीलीय मंचों पर इसका विरोध किया। माननीय उच्च न्यायालय, गुजरात ने मामले का फैसला आयकर विभाग के पक्ष में दिया। एनडीडीबी ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष विशेष अनुमति याचिका दायर की। यह मामला अब निराकरण हेतु माननीय न्यायालय के समक्ष लंबित है। एनडीडीबी प्रबंधन का मानना है कि आयकर के संबंध में कैश ऑउट फ्लो की कम संभावना है और यह विशेषज्ञ विधिक मत पर आधारित है यह एक उचित केस है; तदनुसार, रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान एनडीडीबी बही खाते में विशेष रिजर्व निर्मित करना निरंतर जारी रखा है और उक्त दावे को कर प्रावधान के लिए पात्र माना है।

14 एनडीडीबी द्वारा एनडीडीबी मृदा लिमिटेड और एनडीडीबी काफ लिमिटेड नामक नई कंपनियों का क्रमशः 1 जुलाई 2022 और 25 फरवरी 2023 को गठन किया गया। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने अपनी व्यावसायिक गतिविधियाँ की शुरूआत 17 अगस्त 2022 से की। काफ प्रभाग की गतिविधियां संचालित करने के लिए एनडीडीबी काफ लिमिटेड का गठन किया गया। जो 31 मार्च 2023 तक एनडीडीबी का अभिन्न अंग था। उक्त कंपनी ने 1 अप्रैल 2023 से अपनी व्यावसायिक गतिविधियों की शुरूआत की।

15 सगत वर्ष के आँकड़ें आवश्यकतानुसार पुनः समूहित/पुनः व्यवस्थित किए गए हैं।

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते केकेसी एंड एसोसिएट्स एलएलपी
सनदी लेखाकार
(पूर्व, खीमजी कुंवरजी एंड को एलएलपी)
फर्म की पंजीकरण सं. 105146W/W-100621

हँसमुख बी डेढ़िया
भागीदार
सदस्यता संख्या 033494

स्थान: मुंबई
दिनांक: 07 जुलाई 2023

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक (संचालन)

अमित गोयल
उप ग्रुप प्रमुख (लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 07 जुलाई 2023

एनडीडीबी के अधिकारी

प्रधान कार्यालय, आणंद

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक

मीनेश सी शाह
बीएससी (डीटी), पीजीडीआरडीएम

मुख्य कार्यपालक का कार्यालय

टी वी बालासुब्रमण्यम
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, एलएलबी (सामान्य)

राजेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए (इको), पीजीडीआरएम

प्रबंध निदेशक

मीनेश सी शाह
बीएससी (डीटी), पीजीडीआरडीएम

प्रबंध निदेशक का कार्यालय

राजेश सिंह
प्रबंधक, बीसीए, पीजीडीएम (विपणन एवं वित्त)

निकित बंसल
प्रबंधक, बीकॉम, सीए

वरिष्ठ महाप्रबंधक

राजेश नायर
निदेशक, बीएससी, एमएससी (एने केम), पीएचडी (केम)

ललित प्रसाद करन
वरिष्ठ महाप्रबंधक, बीएससी, पीजीडीपीएम

एस रघुपति
वरिष्ठ महाप्रबंधक, एमकॉम, आईसीडब्ल्यूए, पीजीडीआरडीएम

आर ओ गुप्ता
वरिष्ठ महाप्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (मेड)

लेखा

अमित गोयल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, सीए

तुषार कांति पात्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, आईसीडब्ल्यूए,

विनय गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, आईसीडब्ल्यूए, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

पी वी सुब्रह्मण्यम
वरिष्ठ प्रबंधक, बीबीएम, एमबीए (वित्त)

आशुतोष के मिश्र
प्रबंधक, बीएससी (ई एंड आई), पीजीडीबीए (वित्त)

आर अरुमुगम
प्रबंधक, एमकॉम

रश्मि प्रतीश
प्रबंधक, एमकॉम, आईसीडब्ल्यूएआई

स्वप्निल ठाकेर
प्रबंधक, एमकॉम, सीए,
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

दीपेन आर शाह
प्रबंधक, बीबीए, एमबीए (वित्त), आईसीडब्ल्यूएआई

विजय कुमार
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

कमलकांत आर परमार
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

रमेश कुमार
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

कार्तिक पटेल
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

प्रशासन

धीरूभाई सी परमार
प्रबंधक, एमकॉम, एलएलबी (सामान्य), एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम

आर पी डोडामणि
प्रबंधक, बीकॉम, एलएलबी

जनार्दन मिश्र
प्रबंधक, एमए (हिंदी), एमफिल (अनुवाद प्रौद्योगिकी), जनसंचार एवं संप्रेषणी हिंदी में पीजीडी

नयनकुमार डी काथावाला
उप प्रबंधक, बीकॉम, एमएचआरएम, एलएलबी

पशु प्रजनन

जी किशोर
महाप्रबंधक, बीवीएससी, एमएससी (डेरी, पशु आनु. एवं प्रजनन)

एस गोरानी
उप महाप्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (वेटी. गायनेक. एवं आब्स्टेट्रिक्स), पीजीडीएमएम

सुजीत साहा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (डेरी), पीएचडी (पशु आनु. एवं प्रजनन), पीजीडीआईएम, एमबीए (ऑपरेशन प्रबंधन)

एन जी नाई
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (पशु प्रजनन), पीएचडी (पशु आनु. एवं प्रजनन)

पराग आर पांड्या
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमबीए (एचआरएम)

वी पी भोसले
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (मेड)

समता डे
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी गाइनेक एंड ऑब्स्ट)

ए सुधाकर
प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी, पीएच.डी.

रणमल एम अंबालिया
प्रबंधक, बी.ई. (कंप्यू. इंजीनियरिंग),
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

स्वप्निल जी गज्जर
प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (पशु जेन और प्रजनन)

कृष्णा एम बेउरा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमबीए (ग्रामीण प्रबंधन)

शिराज एम शेरसिया
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमबीए (एग्री बिज.)

सुरभि गुप्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, पीजीडीआरएम

अतुल सी महाजन
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु जेन और प्रजनन), पीएचडी (पशु जेन और प्रजनन)

सिद्धार्थ एस लायक
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एलपीएम), पीएचडी (एलपीएम)

करुप्पनासामी के
प्रबंधक,बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी. गायनेक. एवं ऑब्सटेट्रिक्स)

संकेत प्रकाश पाटिल
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु प्रजनन, गायनेक एवं ऑब्स.)

अरुण कुमार पी
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, पीजीडीआरएम

कथन भानुभाई रावल
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी. गायनेक एवं ऑब्स.), पीएचडी (वेटी. गायनेक एवं ऑब्स)

पशु स्वास्थ्य

ए वी हरि कुमार
उप महाप्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो)

पंकज दत्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो)

श्रॉफ सागर आई
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

संदीप कुमार दाश
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो), पीएचडी (वेटी. माइक्रो)

कर्मराज आर जैसवार
वैज्ञानिक I, बीएससी, एमएससी (माइक्रोबायोलॉजी), जैव सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट कोर्स

केशांक एम दवे
उप प्रबंधक, बीवीएससी एंड एएच, एमवीएससी (पशु चिकित्सा महामारी विज्ञान और प्रीव मेड.

एनडीडीबी अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला, हैदराबाद

पोनन्ना एन एम
वैज्ञानिक III, बीएससी (कृषि), एमएससी (माइक्रो), पीएचडी (बायोटेक)

लक्ष्मी नारायण सारंगी
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी माइक्रो), पीएचडी (पशु चिकित्सा वायरोलॉजी)

के एस एन एल सुरेंद्र
वैज्ञानिक II, बीएससी, एमएससी (बायोटेक)

अमितेश प्रसाद
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी माइक्रो)

विजय एस बाहेकर
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी माइक्रो)

पशु पोषण

राजेश शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीएचडी (एग्रो)

दिग्विजय सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीएचडी (एग्रो)

एन आर घोष
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमएससी (पशु पोषण)

भूपेंद्र टी फोंदबा
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी, पीएचडी (पशु पोषण)

चंचल वाघेला
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एएन)

विनोद उइके
प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

अलका चौधरी
प्रबंधक, बीएससी (एच) (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

संदीप कुमार
उप प्रबंधक, बीएससी (एच) (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

पशुधन और आहार विश्लेषण एवं अध्ययन केंद्र (काफ)

राजीव चावला
वरिष्ठ वैज्ञानिक, बीएससी, एमएससी (पशु पोषण),

पीएचडी (पशु पोषण), एमबीए (मार्केटिंग)

एस के गुप्ता
वैज्ञानिक III, एमएससी (कृषि)

स्वगतिका मिश्रा
वैज्ञानिक III, बीएससी (बॉट), एमएससी (माइक्रो)

दर्श के वोराह
प्रबंधक, बीएससी (माइक्रो), एमएससी (एनवी साइंस), सर्टि. जीआईएस, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

अमोल एस खाड़े
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु जेन और प्रजनन)

हृदय बी दर्जी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

स्वाति एस पाटिल
वैज्ञानिक II, बीएससी (फूड टेक एवं प्रबंधन) एमएससी (फूड टेक)

पुदोता रोहित कुमार
वैज्ञानिक I, बीएससी (केम), एमएससी (खाद्य रसायन)

निहिर हितेशकुमार सोनी
वैज्ञानिक I, बीई (फूड प्रोक्स. टेक), एमटेक (खाद्य सुरक्षा और क्यूएम)

कैलाश चंद्र बेहरा
वैज्ञानिक I, एमएससी (खाद्य और पोषण विज्ञान)

वर्षा शर्मा
वैज्ञानिक I, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पोषण)

निलय यादव
वैज्ञानिक I, बीटेक(बायो टेक), एमटेक (केमिकल टेक)

भव्य मेहरा
वैज्ञानिक I, एमएससी (जैव रसायन)

सहकारिता सेवाएं

ए एस हातेकर
महाप्रबंधक, एमएससी (कृषि)

धनराज साहनी
वरिष्ठ प्रबंधक, एमबीए (मार्केटिंग), डीपीसीएस

सीमा माथुर
वरिष्ठ प्रबंधक, एमए (अंग्रेजी)

नवीन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (एनवी एससी), एमटेक (एनवी एससी एंड इंजीनियरिंग), एमएससी (एनवी मॉड एंड एमजीएमटी), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

हृषिकेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), पीजीडीआरएम

हेमाली भारती
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (पावर इलेक्ट), एमबीए (वित्त)

विशाल कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, एमए (एसडब्ल्यू)

संदीप धीमान
प्रबंधक, बीकॉम, एमए (एसडब्ल्यू)

डेंजिल जे डायस
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

मालती एन
उप प्रबंधक बीटेक (हॉर्टि.), पीजीडीआरएम

करण शर्मा
उप प्रबंधक, बीएससी (केम), पीजीडीआरएम

सीएस-एनएफएन

स्मृति सिंह
प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), पीजीडीएम (मार्केटिंग एंड एचआर)

काजल दक्षेश जोशी
उप प्रबंधक, बीकॉम, एमएसडब्ल्यू

सहकारिता प्रशिक्षण

अनिंदिता बैद्य
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), पीजीडीआरडी

टी प्रकाश
प्रबंधक, एमए (डेव. एडमिन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

राहुल आर
प्रबंधक, बीटेक (सीएस), एमबीए (सिस्टम)

सुनीतकुमार वी गौतम
उप प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरएम

अभियांत्रिकी, गुणवत्ता और संयंत्र प्रबंधन

संतोष सिंह
महाप्रबंधक, बीटेक (सिविल)

अभियांत्रिकी सेवाएं

वी श्रीनिवास
उप महाप्रबंधक, बीई (सिविल)

एस चंद्रशेखर
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक.)

एस तालुकदार
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक.), एमआईई

जसबीर सिंह
उप महाप्रबंधक, बीटेक (एग्री इंजीनियरिंग), एमटेक (पोस्ट हार्वेस्ट टेक)

चंद्र प्रकाश
उप महाप्रबंधक, बीटेक (मेक.)

के एस पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल), एमबीए (मासंवि एवं वित्त)

मिहिर बी बगरिया
वरिष्ठ प्रबंधक, डीसीई, बीई (सिविल), एमबीए (वित्त)

मनोज गोठवाल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुब्रता चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, डीसीई, एएमआईई (सिविल)

धवल ए पांचाल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

भूषण पी कापशीकर
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

सचिन गर्ग
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट), पीजीडीबीए

डी बी लालचंदानी
प्रबंधक, बीई (मेक), एमबीए (ऑपरेशन)

सुनंदा कुमार एन
प्रबंधक, बीटेक (मेक), एमटेक (मैट. एससी. एंड टेक)

निकेश वी मोरे
प्रबंधक, बीई (इंस्ट्रू और कंट्रोल इंजीनियरिंग)

पी बालाजी
प्रबंधक, बीई (सिविल)

श्रेयस जैन
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

आदित्य शर्मा
प्रबंधक, बीटेक (सिविल), एमटेक (सीपीएम)

अभिषेक गुप्ता
प्रबंधक, बीई (मेक)

प्रकाश ए मकवाना
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

बलबीर शर्मा
प्रबंधक, डीईई, बीटेक (इलेक्ट)

सतेंद्र सिंह गुर्जर
प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

वत्सल पटेल
प्रबंधक, बीई (मेक)

विवेक जायसवाल
प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुमीत शेखर
प्रबंधक, बीई (मेक)

सचिन ए सरवैया
प्रबंधक, बीई (मेक)

अलर्क एस कुलकर्णी
प्रबंधक, बीटेक (इंस्ट्र), एमटेक (बायोटेक)

राहुल कुमार
उप प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रिकल)

120 मीटप्रदि का डेरी व्हाइटनर/बेबी फूड मिल्क पाउडर संयंत्र और यूएचटी संयंत्र, दूधसागर डेरी, महेसाणा

शैलेंद्र मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, डिप्लो. (सिविल), डिप्लो. (कॉन्स्ट. टेक)

200 मीटप्रदि का पशु आहार संयंत्र, घनिया-के-बांगर, गुरुदासपुर में 50 मीटप्रदि का बाईपास प्रोटीन संयंत्र

जसदेव सिंह
प्रबंधक, बीटेक (इले.), एमटेक (पावर इंजीनियरिंग), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

कृष्ण देव
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल), एमटेक (जियोटेक्निकल)

एआईटीआई प्रशिक्षण केंद्र परियोजना, गुवाहाटी

प्रतीक के अग्रवाल
प्रबंधक, बीई (सिविल)

एंथ्रेक्स परियोजना, आईवीपीएम, रानीपेट

एफ प्रदीप राज
प्रबंधक, बीई, एमटेक (सिविल)

सैयद अब्दुल राशिद
प्रबंधक, बीई (मेक.)

स्वचालित डेरी संयंत्र परियोजना, अरिलो, ओडिशा

सौम्य रंजन मिश्रा
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

पशु आहार संयंत्र, हाजीपुर, साबरकांठा

धीरज बी तेम्भुर्ने
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

तुषार एस चव्हाण
उप प्रबंधक, बीई (मेक.)

चीज़ निर्माण और व्हे पाउडर संयंत्र परियोजना, हिम्मतनगर

अक्षय मंडोरा
प्रबंधक, बीई (मेक)

संतोष पाटीदार
उप प्रबंधक, बीई (सिविल)

एफ्लूएंट ट्रीटमेंट संयंत्र, रोहतक

शैलेश एस जोशी
प्रबंधक, बीई (मेक.)

गौरव सिंह
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

हैदराबाद डेरी परियोजना स्थल, हैदराबाद

प्रदीप लायक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट)

बिभु प्रसाद जेना
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

यू सुंदरा राव
प्रबंधक, डीईई, बीटेक (ईईई)

तारक राजनी
प्रबंधक, बीई (सिविल)

अवसंरचना विस्तार परियोजना, इरमा, आणंद

सुधीर कुमार गंगल
प्रबंधक, डीसीई, बीई (सिविल)

अवसंरचना परियोजना, वघासी, आणंद

निकुंजकुमार एन परमार
उप प्रबंधक, बीई (सिविल)

जालंधर डेरी परियोजना, जालंधर

अंशुल चौरसिया
उप प्रबंधक, बीई (मेक)

लुधियाना डेरी विस्तार परियोजना, लुधियाना

नीरव पी सक्सेना
उप प्रबंधक, बीई (मेक), एमई (सीएडी / सीएएम)

दूध उत्पाद संयंत्र परियोजना, बरौनी

जय नागर
प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुरजीत के चौधरी
प्रबंधक, बीई (मेक)

आशीष रवि
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

पूरबी डेरी (वामूल) परियोजना, गुवाहाटी

धर्मेंद्र के बेहेरा
प्रबंधक, बीई (मेक), एमबीए (मार्केटिंग एंड सिस्ट.)

आशुतोष सामल
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

अभिषेक सिंघल
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

साबर डेरी, हिम्मतनगर

पी रमेश
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीसीपीएम

एसएजी, अहमदाबाद

बलराम निबोरिया
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

वित्त

संजय कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक, बीई (इलेक्ट्रिकल), एमबीए (वित्त)

चिंतन खाखरियावाला
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (केम), एमबीए (वित्त)

कल्पेशकुमार जे पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीबीए, एमकॉम, आईसीडब्ल्यूए, सीएस

चंदन सिंह
प्रबंधक, बीएससी (जू.), पीजीडीएम (मार्केटिंग एंड वित्त)

रोहन बी बुच
प्रबंधक, बीकॉम, एमबीए (वित्त)

शिल्पा पी बेहेरे
प्रबंधक, बीएमएस, पीजीडीआरएम

मानव संसाधन विकास

एस एस गिल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (जियो), एमएसडब्ल्यू, पीएचडी (एसडब्ल्यू), डिप्लो. (ट्रेनिंग एवं डेव.)

मोहन चंदर जे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक.), एमटेक (मासंवि)

राकेश बी
प्रबंधक, बीए, एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम

समीर डुंगडुंग
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीएम-एचआरएम

प्राची जैन
उप प्रबंधक, बीबीए (जनरल बिजनेस मैनेजमेंट), एमएचआरएम

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

एवी रामचंद्र कुमार
महाप्रबंधक, बीई (कंप्यू. इंजीनियरिंग), पीजीडीएम

एस करुनानिधि
वरिष्ठ प्रबंधक, डीईई, सीआईसी

आर के जादव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), एमसीए, पीजीडीएम

सुप्रिय सरकार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), एमसीए, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

विपुल गोंडलिया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट्रॉनिक्स)

बी सेंथिल कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडीसीए, बीएड, एमसीए, एमबीए

रीतेश के चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (कंप्यू. विज्ञान), पीजीडीबीएम, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

राकेश आर मनिया
प्रबंधक, बीई (ईसीई)

मितेश सी पटेल
प्रबंधक, बीई (आईटी)

अनिल एम अद्रोजा
प्रबंधक, बीई (आईटी)

अशोक कुमार साहनी
प्रबंधक, बीई (सीएसई)

सोहेल ए पठान
प्रबंधक, बीई (आईटी), एमई (सीएसई)

जय वाई बारोट
प्रबंधक, बीटेक (कंप्यू. इंजीनियरिंग)

चिप्पडा उदय भास्कर
उप प्रबंधक, बीटेक (सीएसई)

निकिता आर मेसवानिया
उप प्रबंधक, बीई (कंप्यू. इंजीनियरिंग)

तुषार साहेबराव पाटिल
उप प्रबंधक, बीई (कंप्यू.)

नवाचार और परियोजना प्रबंधन (आईपीएम) प्रकोष्ठ

निरंजन एम कराडे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक.), पीजीडीआरएम

मुकेश आर पटेल
प्रबंधक, बीएससी, एमएससी (कृषि)

विनय ए पटेल
प्रबंधक, बीटेक (बायोमेड), एमबीए (मार्केटिंग)

प्रकाशकुमार ए पांचाल
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमएससी (आईसीटी-एआरडी)

दीपक कंबोज
बीएससी(जू.) कृषि, पीजीडीआरएम

इशिता
बीएससी(कृषि), पीजीडीआरएम

सिंजिनी गुहा
बीटेक (ईसीई), पीजीडीआरएम

श्रेयश जायसवाल
बीबीए (बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन), पीजीडीआरएम

आंतरिक लेखा परीक्षा

धारा एन लखानी
उप महाप्रबंधक, एमकॉम, एसीएमए

विधि

चंडका टीवीएस मूर्ति
महाप्रबंधक, बीकॉम, बीएल, एलएलएम, पीजीडी (ट्रांसपोर्ट प्रबंधन), पीजीडी (साइबर लॉ एंड आईपीआर)

पल्लवी ए जोशी
प्रबंधक, बीकॉम, एलएलबी

विपणन प्रकोष्ठ

हर्षेंद्र सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट एंड पावर इंजीनियरिंग), एमबीए (मार्केटिंग)

आर मजूमदार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

विष्णु देठ जी
प्रबंधक, बीटेक (सीएस), पीजीडीआरएम

विवेक एस गोर
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल), पीजीडीआरएम

रेणु शर्मा
उप प्रबंधक, बीबीए (मार्केटिंग एंड सेल्स), पीजीडीआरएम

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन

आर के श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), पीजीडीसीए, एमसीए

बी वसंत नाइक
प्रबंधक, बीटेक (सीएस और आईटी), एमटेक (सीएसई)

उत्पाद और प्रक्रिया विकास

आदित्य कुमार जैन
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (डीटी), एमएससी (डेरी)

जितेंद्र सिंह
वैज्ञानिक III, बीएससी, एमएससी (माइक्रो), पीएचडी (डेरी माइक्रो)

सौगत दास
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरी माइक्रो)

हरेंद्र पी सिंह
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरी केम)

विशालकुमार बी त्रिवेदी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

ललिता मोदी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

जनसंपर्क, संचार एवं आतिथ्य

अभिजीत भट्टाचारजी
महाप्रबंधक, बीएससी,एलएलबी, पीजीडीआरडी

बसुमन भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमए (पत्रकारिता), डिप्लो. इन सोशल कॉम (फिल्म मेकिंग)

दिव्यराज आर ब्रह्मभट्ट
प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), पीजीडीबीए, एमबीए (पीआर)

दीपांकर मुखर्जी
उप प्रबंधक, बीएससी, एमए (मास कॉम), पीजीडी (पत्रकारिता और मास कॉम)

आकांक्षा एल कुमार
उप प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), एमए (पत्रकारिता और मास कॉम), पीजीडी (पत्रकारिता)

निखिल वी कल्याणपाद
उप प्रबंधक, बीएमएम, एमबीए (संचार प्रबंधन)

प्रणव जिग्नेश अवसत्थी
उप प्रबंधक, एमए (पत्रकारिता और जन संचार)

पंक्तिबेन दिलीपभाई चौहान
उप प्रबंधक, बीसीए (एच), मास्टर ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कॉम

क्रय

एस गोस्वामी
महाप्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरडीएम

कृष्णा एसवाई
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक), एमटेक (प्रो. एम.एम.टी.)

सौगत भार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

नरेंद्र एच पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

मोहम्मद नसीम अख्तर
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

भद्रसिंह जे गोहिल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

अमोल एम जाधव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

नीलेश के पटेल
प्रबंधक, बीई (प्रोड)

निधि त्रिवेदी
प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमएसडब्ल्यू

विपुल एल सोलंकी
प्रबंधक, बीई (ईसीई), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

हिमांशु के रत्नोत्तर
प्रबंधक, बीई (प्रोड), पीजीडी (ऑपरेशन प्रबंधन)

दिनेश के घांची
उप प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रिकल)

गुणवत्ता आश्वासन

एस डी जैसिंघाणी
उप महाप्रबंधक, बीएससी (डीटी), पीजीडीएचआरएम

सुरेश पहाड़िया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरी)

नवीनकुमार एसी
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डेरी माइक्रो)

क्षेत्रीय विश्लेषण और योजना

जिग्नेश जी शाह
उप महाप्रबंधक, बीई (इलेक्ट), एमबीए, पीएचडी (प्रबंधन), डिप्लोमा (एक्स. प्रबंधन)

अनिल पी पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीजीडीएमएम

मेना एच पाघडार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, एमसीए

सर्वेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि और एएच), एमएससी (डेरी इको), पीएचडी (डेरी इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

बिस्वजीत भट्टाचारजी
प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (एग्री इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

काहनू सी बेहरा
प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

आयुष कुमार
प्रबंधक, बीटेक (जेनेटिक इंजीनियरिंग), पीजीडीएम

सौरभ कुमार
प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट एंड कॉम), पीजीडीएम

रीति
प्रबंधक, बीएससी (जू.), पीजीडीएम (फिन. एंड मार्केटिंग)

श्वेता एन रामटेके
उप प्रबंधक, बी पीटीएच, पीजीडीआरएम

अश्मी कुवेरा एम वी
उप प्रबंधक, बीई (ईईई), पीजीडीआरएम

इंदु एस
उप प्रबंधक, एमए (अर्थशास्त्र), पीजीडीआरएम

उपयोगिता

रुपेश ए दर्जी
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

बिभाष बिस्वास
प्रबंधक, डिप्लो. (सिविल), डीबीएम

सत्यबान बेहरा
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

एस राजीव
महाप्रबंधक, बीटेक (औद्योगिक इंजीनियरिंग), पीजीडीआरएम

शशिकुमार बीएन
उप महाप्रबंधक, बीई (ईईई), पीजीडीआरडीएम

टी टी विनयगम
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (कृषि), पीजीडीआरएम

एम एन सतीश
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (आँकड़े)

एस एस न्यामागोंडा
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (एग्रो), सीआईसी

एम एल गावंडे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (वेटी मेड)

लता सिरिपुरापु
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीबीए (वित्त)

हलनायक ए एल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (एग्री मार्केटिंग एंड कॉपन), एमएससी (एग्री इको)

रजनी बी त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमएसडब्ल्यू, पीजीडीआईआरपीएम

थुंगय्या सालियान
प्रबंधक, बीए, एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

दिव्या टीआर
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एनी. रिप्रो. गायनेक एवं आब्स.)

निम्मी तोपनो
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीएम-एचआरएम

पृथ्वी पतनेनी
प्रबंधक, बीटेक (सिविल), एमटेक (क्यूएम)

जगदीश नायका
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (फूड टेक)

एनडीडीबी कार्यालय, त्रिवेंद्रम

रोमी जैकब
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि)

एनडीडीबी कार्यालय, हैदराबाद

बी वी महेशकुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि)

एनडीडीबी कार्यालय, इरोड

ए क्रितिगा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमए (ग्रामीण विकास)

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

आर सौंदरराजन
वरिष्ठ प्रबंधक, एएमआईई (मेक)

सब्यसाची रॉय
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि) ऑनर्स,एमएससी (एग्री), पीजीडीआरडी, पीएचडी (एग्री)

सैकत सामंता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

कौशिक रॉय
प्रबंधक, बीटेक (इले.)

रबिंद्र के बेहरा
प्रबंधक, बीई (सिविल)

हर्षवर्धन
प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रो), पीजीडीएम (वित्त)

पदम वीर सिंह
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण)

श्रेष्ठा
प्रबंधक, बीसीए, पीजीडीएम (एचआर और मार्केटिंग)

ऋतुराज बोरा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी

सुरभि पवार
प्रबंधक, बीबीए, पीजीडीएम-आरएम

गौतम कुमार झा
उप प्रबंधक, बीई (सिविल)

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

स्वाति श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), पीजीडीआरएम

गोपाल के नारंग
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल), डीआईपी-एमसीएम

आशुतोष सिंह
प्रबंधक, एमए (इको), पीएचडी (इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

शुभांकर नंदा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एएन)

क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

राजेश गुप्ता
उप महाप्रबंधक, बीएससी, एमएसडब्ल्यू

एस के नासा
उप महाप्रबंधक, बीई (सिविल)

अरुण चंडोक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडी (आईआरपीएम), डीसीएस, एमबीए

एम के राजपूत
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, बीई (फूड इंजीनियरिंग एंड टेक)

पंकज एल शेरसिया
वैज्ञानिक III, बीवीएससी, एमवीएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

प्रितेश जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरएम

संजय कुमार यादव
प्रबंधक, बीएससी, एमबीए (आरडी)

मनोज कुमार
प्रबंधक, बीटेक (मेक)

सत्यपाल कुर्रे
प्रबंधक, डीफार्म, बीवीएससी एवं एएच, एमबीए

जितेंद्र सिंह राजावत
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एग्री बिज. में पीजीडी

आशीष सिजेरिया
उप प्रबंधक, बीई (इलेक्ट्रॉनिक्स), पीजीडीआरएम

बृजेश कुमार
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

एनडीडीबी कार्यालय, चंडीगढ़

धनराज खत्री
प्रबंधक, बीए, एमए (एसडब्ल्यू)

रुमिनपाल सिंह बाली
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एनिमल रिप्रो. गायनेक एंड आब्स.)

एनडीडीबी कार्यालय, लखनऊ

मोहम्मद राशिद
प्रबंधक, बीए, पीजीडीडीएम

क्षेत्रीय प्रदर्शन और प्रशिक्षण केंद्र (आरडीटीसी)

ईआरडीटीसी, सिलीगुड़ी

कमलेश प्रसाद
प्रबंधक, डीएमएलटी, बीएससी, बीवीएससी एवं एएच पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

चैताली चटर्जी
प्रबंधक, बीए, एमए (तुलनात्मक साहित्य)

रमेश कुमार
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एलपीएम)

मानसिंह प्रशिक्षण संस्थान, महेसाणा

एस एस सिन्हा
महाप्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

हितेंद्र सिंह राठौड़
प्रबंधक, डीईई

दुष्यंत देसाई
प्रबंधक, बीटेक (डीटी)

एनआरडीटीसी, जालंधर

श्रीकांत साहू
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, बीवीएससी एवं एएच, एमबीए

मनोज कुमार गुप्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी माइक्रो)

एसआरडीटीसी, इरोड

एम गोविंदन
उप महाप्रबंधक, एमए (एसडब्ल्यू), एमबीए

टी पी अरविंद
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेटी माइक्रो)

एस ए अनुषा
उप प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (वेटी. पब्लिक हेल्थ)

प्रबंधित इकाइयों एवं परियोजनाओं पर सेकंडमेंट / प्रतिनियुक्ति / पोस्टिंग

असम डेरी विकास परियोजना, गुवाहाटी

के भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (माइक्रो)

बैंगलोर शहरी, ग्रामीण और रामनगर दूध संघ लिमिटेड, (बामूल), बेंगलुरु

पंकज सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

निधि नेगी पटवाल
प्रबंधक, बीएससी, एमएससी (रसायन विज्ञान), पीजीडीआरएम

चित्रदुर्ग क्षेत्रीय तिलहन उत्पादक सहकारी समिति संघ लिमिटेड (सीआरओजीसीएसयूएल, चित्रदुर्ग)

एम जयकृष्णा
उप महाप्रबंधक, एमए (इको), एमफिल (इको), पीएचडी (इको)

ईस्ट असम मिल्क प्रोड्यूसर्स कॉप. यूनियन लिमिटेड (ईअमूल), जोरहट

विजॉय कुमार
प्रबंध निदेशक (ईअमूल), बीएससी (डीटी), पीजीडीआरएम

प्रीतम के सैकिया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

झारखंड दूध महासंघ (जेएमएफ), रांची

सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक (जेएमएफ), बीएससी (डीटी), एमबीए (विपणन)

नितिन एम शिंकर
उप महाप्रबंधक, बीई (मेटलर्जी), पीजीपीबीए (पी एंड ओ प्रबंधन)

जयदेव विश्वास
उप महाप्रबंधक, बीएससी (केम), पीजीडीआरडी, पीजीडीएचआरएम

टी सी गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स), एमएससी (कृषि), पीएचडी (कृषि)

शैली तोपनो
प्रबंधक, बीए (ऑनर्स), एमए (एसडब्ल्यू)

मिलन कुमार मिश्रा
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीडीएम

आभास अमर
प्रबंधक, बीबीए, पीजीडीएम

प्रियंका तोप्पो
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीआरएम

संजय नंदी
प्रबंधक, बीकॉम, आईसीडब्ल्यूएआई, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

एलन सेवियो एक्का
प्रबंधक, बीएससी (आईटी), पीजीडीएम-आरएम

अरुण मारुति वड्डाट्टी
उप प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

कर्नाटक तेल महासंघ, बेंगलुरु

जी सी रेड्डी
प्रबंध निदेशक (केओएफ), एमएससी (सांख्यिकी), एमफिल (जनसंख्या अध्ययन)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड, (विदर्भ मराठवाड़ा परियोजना, नागपुर)

वी श्रीधर
वरिष्ठ महाप्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), एमबीए

सचिन एस शंखपाल
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

फ्रेडरिक सेबस्टियन
प्रबंधक, एमए (डेव. स्टडीज), पीजीडीडीएम, पीजीसीएमआरडीए

ओडिशा राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड (ओम्फेड), भुवनेश्वर

ए सी सिन्हा
प्रबंध निदेशक (ओम्फेड), बीटेक (डीटी), एमबीए

वाराणसी दूध संघ, वाराणसी

राजेंद्र कुमार सैगल
प्रबंध निदेशक (वीएमयू), बीएससी (डीटी), कार्यपालक एमबीए

अरविंद कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (एग्री मार्केटिंग एंड कॉप.), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

एस महापात्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए (मनो.), एलएलबी, पीजीडीएम (एचआरएम)

राहुल त्रिपाठी
प्रबंधक, बीकॉम, एमबीए (वित्त)

आलोक प्रताप सिंह
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण)

भरत सिंह
प्रबंधक, बीटेक (मेक)

रविंद्र जी रामदासिया
प्रबंधक, एमकॉम, सीए, सीएस,

पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

मनोज कुमार बी सोलंकी
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डेरी केम)

साकिब खान
प्रबंधक, एमसीए

अरविंद कुमार यादव
प्रबंधक, बीटेक (मेक), एमबीए (इन्फ्रा)

हितेंद्रकुमार बी रावल
प्रबंधक, बीटेक (डेरी एंड फूड टेक), एमटेक (डीटी)

जीलकुमार आर राठौड़
उप प्रबंधक, बीटेक (ईई), पीजीडीआरएम

जय दिलीपकुमार शाह
उप प्रबंधक, बीफार्मा, पीजीडीआरएम

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (वामूल), गुवाहाटी

एस बी बोस
महाप्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरडीएम

गुलशन कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, डिप्लो. (होटल प्रबंधन)

एस के परिदा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

चिराग के सेवक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), पीजीडीसीए, पीजीडीटीपी, आईसीडब्ल्यूए, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

मयंक टंडन
प्रबंधक, बीएससी, एमएससी एजी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

कुलदीप बोरा
प्रबंधक, बीएससी (बायोटेक), पीजीडीडीएम

विपिन नामदेव
प्रबंधक, एमकॉम, पीजीडीसीए, आईसीडब्ल्यूए

प्रशांत नायडु वी जी पी
उप प्रबंधक, बीटेक (एरोस्पेस इंजीनियरिंग), पीजीडीआरएम

सहायक कंपनी में प्रतिनियुक्ति

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड

संदीप भारती
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडीडीएम

के बी प्रताप
प्रबंधक, बीआईबीएफ (इंट. बिजनेस), पीजीडीडीएम

ब्रजेश साहू
प्रबंधक, बीकॉम, सीए

भीमाशंकर शेटकर
प्रबंधक, बीई (प्रोड), पीजीडीआरडीएम

चंद्रशेखर के डाखोले
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एएन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

शब्दावली

एएयू – आणंद कृषि विश्वविद्यालय

एबीआईपी – शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

एबीआईपी-एसएस – सेक्स्ड और सेक्स-सॉर्टेड सीमन के माध्यम से शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

एबीआईपी आईवीएफ-ईटी – भ्रूण प्रत्यारोपण द्वारा शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

एबीएस – एडल्ट बोवाइन सीरम

एसीयू – एडल्ट कैटल यूनिट

एडीडीपी - असम डेरी विकास योजना

एआई – कृत्रिम गर्भाधान

एकेएफ – आगा खॉ फाउंडेशन

एएलडीए – असम पशुधन विकास एजेंसी

एएमआर – एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस

एएमसीयू – स्वचालित दूध संकलन इकाई

एएमसीएस – स्वचालित दूध संकलन सॉफ्टवेयर

एएमयू – एंटीमाइक्रोबियल यूसेज

ए हेल्प – पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य एवं विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंट

एपीएआरटी – असम कृषि व्यवसाय और ग्रामीण परिवर्तन परियोजना

एआरआईएएस – असम ग्रामीण बुनियादी ढांचा और कृषि सेवा समिति

एटी – एक्शन टीम

बीएआईएफ – बायफ विकास अनुसंधान फाउंडेशन

बीबीएसएसएल – भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड

बीडीएस – बुल डिस्ट्रीब्यूशन सॉफ्टवेयर

बीआईएस – भारतीय मानक ब्यूरो

बीएमसी – बल्क मिल्क कूलर

बीएमएफ – नस्ल वृद्धि फार्म

बीपीएससीएल – बोकारो पावर सप्लाई कंपनी लिमिटेड

बीएसएल – जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाएं

सीएसी – कोडेक्स एलीमेंटेरियस कमेटी

सीएएस-एमएमपी – दूध एवं दूध उत्पादों के लिए अनुरूपता मूल्यांकन योजना

सीएडब्ल्यूए – कंपैशन फॉर एनिमल वेलफेयर एसोसिएशन

सीबीबीओ – क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन

सीबीएचएफ – एचएफ संकर नस्ल

सीबीजेवाई – जर्सी संकर नस्ल

सीबीएमएम – सतत् मक्खन उत्पादन मशीन

सीएफएसपी एंड टीआई – केंद्रीय हिमकृत वीर्य उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान

सीआईआई – कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री

सीएसआर – कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व

सीएसटी – कंसेंट्रेटेड सोलर थर्मल

सीएसटीआर – सतत् स्टिर्ड टैंक रिएक्टर

सीकेएमएम – सतत् खोआ उत्पादन मशीन

डीएएचडी – पशुपालन एवं डेयरी विभाग

डीसीएएम – वैकल्पिक उपायों द्वारा रोग नियंत्रण

डीसीएस – डेरी सहकारी समिति

डीआईडीएफ – डेरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास निधि

डीपीएमसीयू – डाटा प्रोसेसर आधारित दूध संकलन इकाई

डीपीआर – विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

डीटीसी – सहकारिताओं के माध्यम से डेरी

ईसीआईएल – इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

ईएफएस – विस्तारित हिमिकृत वीर्य

एलिसा – एंजाइम लिंक्ड इम्युनोसॉर्बेंट एशे

ईआईए – अंतिम कार्यान्वयन एजेंसी

ईआरपी – एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग

ईटीपी – एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट

ईवीएम – एथनो-वेटनरी मेडिसिन

ईपीपी – खाली मटर की फली

एफएओ – संयुक्त राष्ट्र खाद्य कृषि संगठन

एफएएचडी – मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी

एफडीयू – चारा प्रदर्शन इकाई

एफएमडी – खुरपका एवं मुंहपका रोग

एफएमडी-सीपी – खुरपका एवं मुंहपका रोग नियंत्रण परियोजना

एफएसएसएआई – भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण

एफएसडी – हिमिकृत वीर्य डोज

एफपी – फिल्टर पेपर

एफपीओ – किसान उत्पादक संस्था

जीबीआरसी – गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र

जीसीएमएमएफ – गुजरात सहकारी दूध विपणन संघ लिमिटेड

जीडीटी - ग्लोबल डेरी ट्रेड

जीएचजी – ग्रीनहाउस गैस

जीओआई – भारत सरकार

जीएसएफसी – गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड

जीडब्ल्यूएएस – जीनोम वाइज एसोसिएशन स्टडीज

एचजीएम – उच्च आनुवंशिक गुण

हॉर्टीकॉर्प – केरल बागवानी उत्पाद विकास निगम

आईए – कार्यान्वयन एजेंसी

आईबीआर – संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाईटिस

भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

आईडीए – इंडियन डेरी एसोसिएशन

आई-डीआईएस – इंटरनेट पर आधारित डेरी सूचना प्रणाली

आईडीएफ – इंटरनेशनल डेरी महासंघ

आईडीएफ डब्ल्यूडीएस-2022 – इंटरनेशनल डेरी महासंघ का विश्व डेरी शिखर सम्मेलन-2022

आईईटीएस – इंटरनेशनल एम्ब्रॉयो टेक्नोलॉजी सोसाइटी

आईएफएफसीओ – इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड

आईआईएल – इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड

आईएलसी – अंतर प्रयोगशाला तुलना

इनाफ – पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिए सूचना नेटवर्क

इरमा – इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, आणंद

आईवीईपी – इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

जेएमएफ – झारखंड दूध महासंघ

जीका – जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी

किग्रा – किलोग्राम

किली – किलो लीटर

केएलपीएच – किलो हजार लीटर प्रति घंटा

केसीएमएमएफ – केरल सहकारी दूध विपणन महासंघ

केएफडब्ल्यू – क्रेडिटैंस्टाल्ट फर विडेरौफबाउ

कृभको – कृषक भारती सहकारी लिमिटेड

केओएफ – कर्नाटक सहकारी तिलहन उत्पादक संघ

एलसीए – लाइफ साइकल एसेसमेंट

लाकिग्राप्रदि – लाख किलोग्राम प्रतिदिन

लालीप्रदि – लाख लीटर प्रतिदिन

एलएमपी – तरल दूध प्रसंस्करण

एलएन2 – तरल नाइट्रोजन

एलएचएंडडीसी – पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण

एलआरपी – स्थानीय जानकार व्यक्ति

एलएसडी – लम्पी त्वचा रोग

एलएसडीवी – लम्पी त्वचा रोग वायरस

एमएआईटी – मोबाइल एआई तकनीशियन

मैत्री – ग्रामीण भारत के बहुउद्देश्यीय एआई तकनीशियन

एमडीएफवीपीएल – मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड

एमडीएल – मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स

एमएलएसटी – मल्टी-लोकस सीक्वेंस टाइपिंग तकनीक

एमएलवीए – मल्टी-लोकस वेरिएबल टेंडम रिपीट एनालिसिस

एमएनआरई – नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय

एमपीसी – दूध उत्पादक कंपनी

एमआरएल – सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर तरल

एमआरएसए – मेथिसिलिन-रेसिस्टेंस स्टेफिलोकोकस ऑरियस

एमएसपी – न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल

एमटी – मीट्रिक टन

एमटीसी – माइक्रो प्रशिक्षण केंद्र

मीटप्रदि – मीट्रिक टन प्रतिदिन

एमयू – दूध संघ

नाबार्ड – राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक

एनएडीसीपी – राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम

नाफेड – भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ लिमिटेड

एनएआईपी – राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम

एनएआर – राष्ट्रीय आरयूडीएसईटीआई अकादमी

एनबीएचएम – राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन एवं शहद मिशन

एनसीसीएफ – भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड

एनसीसीएसडी – नेशनल काउंसिल फॉर क्लाइमेट चेंज सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड पब्लिक लीडरशिप

एनसीडीसी – राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

एनसीडीएफआई – नेशनल कोऑपरेटिव डेरी फेडरेशन ऑफ इंडिया लि.

एनसीओएल – नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

एनडीडीबी – राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

एनडीसी – राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान

एनडीईआरपी – एनडीडीबी डेरी ईआरपी

एनडीएलएम – राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन

एनडीपी I – राष्ट्रीय डेरी योजना I

एनडीपी II – राष्ट्रीय डेरी योजना II

एनडीएस – एनडीडीबी डेरी सर्विसेज

एनईडीएफएल – नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड

एनईआर – पूर्वोत्तर राज्य

एनएफएन – एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रिशन

एनएफएल – नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड

एनआईएबी – राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान

एनएलएम – राष्ट्रीय पशुधन मिशन

एनपीडीडी – राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम

एनआरएलएम – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

ओडीए – आधिकारिक विकास सहायता

ओएच – वन हेल्थ

ओपीयू – ओवम पिक-अप

ओपीयू- आईवीईपी – ओवम पिक-अप - इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

पीएटी – कर पश्चात लाभ

पीबीएनएल – प्रिस्टीन बायोलॉजिकल्स एनजेड लिमिटेड

पीसी – उत्पादक कंपनी

पीसीआर – पॉलिमराइज्ड चेन रिएक्शन

पीआई – सहभागी संस्थान

पीआईपी – परियोजना कार्यान्वयन योजना

पीओआई – उत्पादक स्वामित्व वाली संस्था

पीआरओएम – फॉस्फेट रिच ऑर्गेनिक खाद

पीएस – वंशावली चयन

पीएसबी – सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

पीएसयू – सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

पीटी – संतति परीक्षण

क्यूसीआई – क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया

क्यूपीआर – तिमाही प्रगति रिपोर्ट

आरबीपी – आहार संतुलन कार्यक्रम

आरजीएम – राष्ट्रीय गोकुल मिशन

आरएमपी – अवशेष निगरानी योजना

आरयूसी – रेडी-टू-यूज कल्चर

साबर डेरी – साबरकांठा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

एसएआई प्लेटफार्म – सतत कृषि पहल प्लेटफार्म

सेल – स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड

एससीएडीए – पर्यवेक्षी नियंत्रण एवं डेटा अधिग्रहण

एससीआई – शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

एससीईएनवी – पर्यावरण संबंधी स्थायी समिति

एसएमपी – स्किम्ड मिल्क पाउडर

एसओपी – मानक प्रचालन प्रक्रिया

एसआरएलएम – राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

एसएस एंड एसएम – सीरो-सर्विलांस और सीरो-मॉनिटरिंग

एसडीसीएफपीओ – डेरी सहकारिताओं को सहयोग और किसान उत्पादक संगठन

एसडीजी – सतत् विकास लक्ष्य

हकिग्राप्रदि – हजार किलो प्रतिदिन

हलीप्रदि – हजार लीटर प्रतिदिन

टीएमआर – संपूर्ण मिश्रित आहार

टप्रघं – टन प्रतिघंटा

टीओटी – प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

टीएसडीडीसीएफएल – तेलंगाना राज्य डेरी विकास सहकारी महासंघ लिमिटेड

यूएटी – उपयोगकर्ता स्वीकृति परीक्षण

यूएचटी – अल्ट्रा हीट ट्रीटेड

यूटी – केंद्र शासित प्रदेश

वीएडीपी – मूल्य वर्धित डेरी उत्पाद

वीएमडीडीपी – विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना

वामूल – पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

डब्ल्यूजीवीएफपीसीएल – वायनाड ग्राम विकास किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड

कृतज्ञता ज्ञापन

- जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ, महासंघ और प्रतिभागी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश सरकारें
- भारत सरकार और विशेष रूप से पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, सहकारिता मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, जलशक्ति मंत्रालय, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और नीति आयोग
- अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ
- खाद्य और कृषि संगठन

मुख्यालय
आणंद 388 001
दूरभाष: (02692) 260148/260149/260160
फैक्स: (02692) 260157
ई-मेल: anand@nddb.coop

कार्यालय
VIII ब्लॉक,
80 फीट रोड, कोरमंगला,
बेंगलुरू 560 095
दूरभाष: (080) 25711391/25711392
फैक्स: (080) 25711168
ई-मेल: bangalore@nddb.coop

डीके ब्लॉक, सेक्टर II,
सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता 700 091
दूरभाष: (033) 23591884/23591886
फैक्स: (033) 23591883
ई-मेल: kolkata@nddb.coop

वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे,
गोरेगांव (पूर्व), मुंबई 400 063
दूरभाष: (022) 26856675/26856678
फैक्स: (022) 26856122
ई-मेल: mumbai@nddb.coop

प्लॉट सं. ए-3, सेक्टर-1,
नोएडा 201 301
दूरभाष: (0120) 4514900
फैक्स: (0120) 4514957
ई-मेल: noida@nddb.coop

www.nddb.coop